



अहिंसक-नैतिक चेतना का अखंड पाठिक

अणुव्रत

वर्ष : 56 ■ अंक : 12 ■ 16-30 अप्रैल, 2011

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

□ सदस्यता शुल्क :

- ◆ एक प्रति : बारह रु.
- ◆ वार्षिक : 300 रु.
- ◆ त्रैवार्षिक : 700 रु.
- ◆ दस वर्षीय : 2000 रु.

□ विज्ञापन सहयोग :

- ◆ द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- ◆ तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- ◆ चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 20,000 रु.
- ◆ साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 5,000 रु.
- ◆ साधारण पृष्ठ 'आधा' : 3,000 रु.

□ सम्पर्क सूत्र :

अणुव्रत महासमिति
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली-110002

दूरभाष : (011) 23233345

फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com

Website : anuvratinfo.org



◆ कार्यक्षेत्र में दक्षता	आचार्य तुलसी	3
◆ एक-दूसरे को समझने का प्रयत्न करें	आचार्य महाप्रज्ञ	5
◆ वर्तमान में मुक्ति	आचार्य महाश्रमण	7
◆ 'पराया' क्यों हो जाता है बेटा?	विभा प्रकाश श्रीवास्तव	9
◆ सबसे अधिक मूल्यवान है संतोष	अशोक सहजानन्द	11
◆ कौन चाहता है भ्रष्टाचार को मिटाना	सुरेश पंडित	12
◆ पाबंदी स्त्रियों की नियति नहीं	अश्विनी कुमार आलोक	15
◆ संप्रभुता पर सवाल	सुषमा जैन	16
◆ लेखक/कलाकारों का गृहस्थ जीवन	डॉ. अनामिका प्रकाश	18
◆ सर्वोदय सम्मेलन में अणुव्रत की सहभागिता	मुनि राकेशकुमार	20
◆ कैसी हो हमारी दिनचर्या?	डॉ. चंचलमल चोरड़िया	24
◆ परमाणु ऊर्जा और भारतीय चिंताएं	आशीष वशिष्ठ	26
◆ डोलती धरती और खतरे में जिंदगी	नरेन्द्र देवांगन	28
◆ दोस्ती	पूनम कुमारी	30
◆ कमर दर्द और प्रेक्षा चिकित्सा :2:	मुनि किशनलाल	32
■ स्तंभ		
◆ संपादकीय		2
◆ राष्ट्र चिंतन		4
◆ झांकी है हिन्दुस्तान की		10
◆ कविता		19, 22, 23
◆ प्रेरणा		29
◆ अणुव्रत आंदोलन		35-40

लिंग-भेद मिटे

देश में 15वीं जनगणना के शुरुआती आंकड़े बताते हैं कि स्त्री एवं पुरुष का अनुपात लगातार बिगड़ता जा रहा है। जिसके भविष्य में सामाजिक परिणाम अत्यंत भयंकर हो सकते हैं। लड़कियों की तादाद घटने की दर लड़कों की तादाद घटने की दर से अधिक है। लड़कियों की घटती तादाद दर 3.80 है, जबकि लड़कों की 2.48 बताई गयी है। लड़कियां कम पैदा हो रही हैं या उन्हें पैदा ही नहीं होने दिया जा रहा है। सन् 2011 की जनगणना में स्त्री-पुरुष का अनुपात 914 : 1000 का है। यह अनुपात वर्ष 1947 के बाद से सबसे कम है। थोड़े संतोष की बात है कि महिला भ्रूणहत्या के विरुद्ध उठाए गए कदम कुछ हद तक कारगर जरूर हुए हैं, लेकिन उतने नहीं जितने होने चाहिए थे। पंजाब और हरियाणा में लड़कियों की तादाद में कमी आयी है। जहां पंजाब का लिंगानुपात महज 830 और हरियाणा का 846 है। हरियाणा के झज्जर में यह सबसे कम 774 रह गया है। हम ऐसा भी नहीं कह सकते कि ये क्षेत्र आर्थिक दृष्टि से गरीब या पिछड़े हुए हैं। दमन व द्वीप तथा दादर और नगर हवेली में भी लगातार पुरुषों के मुकाबले महिलाओं का लिंगानुपात घटता ही जा रहा है। यहां प्रति एक हजार पुरुषों पर 775 महिलाएं हैं। देश में पुरुषों की संख्या 62.37 करोड़ है और महिलाओं की संख्या 58.64 करोड़ पहुंच गई है। चिंताजनक मामला यह है कि छः साल तक के बच्चों के लिंगानुपात में अब तक की सबसे ज्यादा गिरावट दर्ज की गई है। यह अनुपात 1000 लड़कों पर 927 से घटकर 914 हो गया है। हालांकि, देश में प्रति एक हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या 933 से बढ़कर 940 हो गयी है।

इन समस्याओं से कानून एक हद तक ही निपट सकता है। समाज में हर आदमी को बदलाव लाने के लिए रूढ़िवादिता और संकीर्णता छोड़नी होगी। इसके लिए सामाजिक आंदोलन जरूरी है। सभी वर्गों का नैतिक दायित्व है कि समाज एवं राष्ट्र हित को समझते हुए वह अनैतिकता को छोड़े, तभी इस संतुलन को कायम रखा जा सकता है। क्योंकि भारत की विशालता और विभिन्न प्रशासनिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, विज्ञान, दर्शन और मानवीय संवेदनाओं के क्षेत्रों में आज महिला पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर राष्ट्र निर्माण में बराबर की सहभागी है तो फिर पुरुष और महिला के बीच यह लिंग भेद क्यों?

आंकड़े बताते हैं कि साक्षरता दर महिलाओं में पुरुषों के मुकाबले ज्यादा बढ़ी है। साक्षरता के मोर्चे पर पुरुष और महिलाओं का अंतर कम हुआ है। एक ओर तो हम भारत में आर्थिक क्षेत्र में जबरदस्त तेज तरक्की देख रहे हैं लेकिन दूसरी ओर समाज सुधार की कोशिशें उतनी नहीं दिख रही हैं। इसका एक कारण यह है कि समाज आर्थिक रूप से संपन्न तो हुआ है परंतु सामाजिक स्तर पर लड़की के जन्म को लेकर अभी भी तंगदिल और रूढ़ संस्कारों से ग्रस्त लगता है।

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी का कथन है “समाज में सही पथ-दर्शन के अभाव में रूढ़ियां पनपती हैं। कन्याएं बोझ या भार नहीं बल्कि समाज की शक्ति हैं।”

कैसी दुर्भाग्यपूर्ण विसंगति है कि नारी समाज का शिक्षित, आत्मनिर्भर व अधिकार संपन्न होने पर भी उसका शोषण समाप्त होने के बदले बढ़ा ही है। जबकि सच तो यह है कि पुरुष ने नारी को आधार बनाकर ही उच्च सोपानों को छुआ है। समाज की मानसिकता महिलाओं की प्रगति को कुछ समय के लिए तो बाधित कर सकती है लेकिन रोक नहीं पायेगी क्योंकि परिवार, समाज और राष्ट्र का हित नारी प्रगति में ही निहित है। ऐसा लगता है कि बेटियों को लेकर अमीर समाज के नजरिए में अभी कोई फर्क नहीं आया है। देश में बच्चों का लिंगानुपात आजादी के बाद सबसे निचले स्तर पर पहुँच गया है। कन्या भ्रूणहत्या को एक भ्रूण का नहीं, पूरी सामाजिक व्यवस्था की हत्या का दोषी माना जाना चाहिए। इसलिए कन्या भ्रूणहत्या निषेध हेतु जन-चेतना जगाने के सक्रिय प्रयास जरूरी हैं।

आज का युग आर्थिक प्रतिस्पर्द्धाओं का युग है। अर्थ की अंधी दौड़ में शिक्षित और अभिशिक्षित सभी संभागी बन रहे हैं। पढ़े-लिखे युवक अपने परम्परागत धंधों में रुचि नहीं रखते। वे अपना कार्यक्षेत्र बदलना चाहते हैं। वे सब ऑफिस में बाबू बनकर बैठना चाहते हैं। बेरोजगार बाबुओं की बढ़ती जा रही संख्या देश के अर्थतंत्र को चुनौती दे रही है। इतना बड़ा देश और करोड़ों युवक बेरोजगार। ऐसे युवक नई टेक्नोलॉजी के सहारे-अपने कार्यक्षेत्र में विशेष कौशल प्राप्त करें तो उनके हाथ कभी खाली नहीं रह सकते।

यह संसार है। इसमें अनेक प्रकार के लोग होते हैं। कुछ लोग बहुत अच्छे होते हैं और कुछ बहुत बुरे। कुछ पुरुषार्थी होते हैं और कुछ आलसी। कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो आलस्य भी करते हैं और पुरुषार्थ भी करते हैं। कुछ लोग संकल्प के धनी होते हैं और कुछ लोगों का संकल्प एकदम शिथिल होता है। साधारण संकल्प के सहारे जीवन चलाने वाले लोग भी होते हैं। कुछ लोग उत्तम होते हैं, कुछ मध्यम होते हैं और कुछ लोग अधम होते हैं। उन श्रेणियों की व्याख्या की जा सकती है। उन श्रेणियों की व्याख्या के भी अनेक बिन्दु हैं। कार्य की सफलता के आधार पर राजर्षि भर्तृहरि की व्याख्या इस प्रकार है— “निम्न कोटि के व्यक्ति किसी कार्य का प्रारंभ नहीं करते। उनके मन में विघ्न बाधाओं का भय रहता है। मध्यम कोटि के व्यक्ति काम का प्रारंभ करते हैं, पर बाधाओं से हताश होकर उसे बीच में ही छोड़ देते हैं। उत्तम कोटि के व्यक्ति बार-बार बाधाएं आने पर भी निराश नहीं होते। वे जिस कार्य की शुरुआत कर लेते हैं, उसे पूरा करके ही विराम लेते हैं।”

मनोबल

अनेक ऐसे व्यक्ति होते हैं, जो किसी भी नए कार्य को पूरे उत्साह के साथ हाथ में लेते हैं एवं उनका उत्साह तब तक रहता है, जब तक कोई बाधा नहीं आती। बाधाओं के उपस्थित होते ही उनका मनोबल सफलता में सबसे बड़ा विघ्न है। काम छोटा हो या बड़ा, मनोबल साथ न दे तो वह पूरा नहीं हो सकता। दृढ़ मनोबली व्यक्ति का संकल्प होता है कि वह विघ्न बाधाओं से लड़ेगा, जूझेगा, कार्य को बीच में नहीं छोड़ेगा।

चींटी दीवार पर चढ़ती है तो फिसलकर नीचे गिर जाती है। एक बार नहीं बार-बार गिरने पर भी वह अपना रास्ता नहीं बदलती। एक समय ऐसा आता है, जब वह ऊपर चढ़ने में सफल हो जाती है। चींटी की सफलता उत्साही व्यक्ति में नया-आत्मविश्वास जगा देती है। वह अपनी सोई शक्ति को जगाकर काम में संलग्न होता है। बाधाएं उसे परेशान करती हैं, पर चींटी का पुरुषार्थ याद आते ही उसकी परेशानी दूर हो जाती है। फिर भविष्य की आशंका उसके मन को कमजोर नहीं बना पाती। इस दृष्टि से कार्यक्षेत्र में सफलता का पहला सूत्र है मनोबल।

संवेगों का संतुलन

कोई भी कार्यक्षेत्र हो, उसमें काम करने वाला व्यक्ति अकेला नहीं होता। अकेला व्यक्ति स्वतंत्र होता है। वह मनमर्जी से चलता है, तो भी उसे कोई कहने वाला नहीं होता। एक से दो होते ही समष्टि का प्रारंभ हो जाता है। वहां एक-दूसरे की इच्छाओं और अपेक्षाओं को ध्यान में रखना आवश्यक है। अन्यथा शांति भंग होने की आशंका बनी रहती है, इसके लिए संवेगों के संतुलन की बात बहुत महत्वपूर्ण है। असंतुलन किसी भी स्थिति में अच्छा नहीं होता। प्रकृति असंतुलित होती है तो तबाही मच जाती है। अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़ तूफान, भूकम्प आदि प्राकृतिक असंतुलन के परिणाम हैं। मनुष्य का असंतुलन परिवार और समाज में उथल-पुथल मचा देता है। पारिवारिक झगड़े, सामाजिक संघर्ष, युद्ध का उन्माद आदि अपने आप में कोई प्रवृत्तियां नहीं हैं। मनुष्य अपने संवेगों पर नियंत्रण खोता है, उसी के कारण ऐसा

कार्यक्षेत्र में दक्षता

आचार्य तुलसी

होता है। कर्मशक्ति के अपव्यय और संकुचन में भी संवेगों का मुख्य हाथ है। इसलिए संवेग-संतुलन के सिद्धांत को प्रायोगिक बनाना चाहिए। इसके बिना न विद्यार्थी सफल हो सकता है और न शिक्षक। न गृहस्थी का सम्यक् संचालन संभव हो पाता है और न संन्यास का। असंतुलित अवस्था में न बालक स्वस्थ रह सकता है और न वृद्ध। इस दृष्टि से संवेग-संतुलन का मूल्य है।

सहिष्णुता

जिस व्यक्ति के संवेग संतुलित रहते हैं, वह स्वस्थ जीवन जी सकता है। संतुलन के साथ ही सहिष्णुता जुड़ी हुई है। सहिष्णुता के लिए एक शब्द आता है क्षांति। क्षांति को परिभाषित करते हुए लिखा गया है— शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक-सब प्रकार के कष्टों को सहने का नाम क्षांति है। कुछ लोग सहन करते हैं, पर चिन्ता और विलाप करते हुए सहते हैं। यह दुर्बलता है। दुर्बल व्यक्तियों को सहना, दीनता के साथ सहना अभिशाप बन जाता है। कुछ लोग कष्टप्रद स्थितियों का प्रतिकार करते हुए सहते हैं। कुछ लोगों के मन में प्रतिक्रिया होती रहती है। फिर भी वे नाम, प्रतिष्ठा या किसी विशेष लाभ के लिए सहन करते रहते हैं। यह स्थिति भी निरपेक्ष नहीं है। सामने वाला व्यक्ति मुझे सहता है तो मैं असहिष्णु बनकर कमजोर क्यों पड़ूँ? वह चिन्तन व्यक्ति को सहनशील बनाता है।

विश्वविद्यालय की परीक्षाएं उत्तीर्ण कर एक युवक सीधा संत कबीर के पास गया। कबीर ने आने का प्रयोजन पूछा।

दिशा दर्शन

युवक बोला-“बाबा! पढ़ाई पूरी हो गई है। माता-पिता विवाह करना चाहते हैं। मेरे मन में संत महात्माओं का आकर्षण है। दुविधा के तट पर खड़ा होकर मैं भी निर्णय नहीं ले पाया। मैं आपसे मार्गदर्शन चाहता हूँ।”

कबीर बड़े विचित्र संत थे। उन्होंने पत्नी को लैम्प जलाकर लाने का आदेश दिया। उसने दोपहर के समय लैम्प जला दिया। युवक थोड़ा निराश हो गया। कबीर ने दूध मंगाया। उसकी पत्नी दो प्याले दूध रखकर चली गई। वह लौटकर आई और चीनी के लिए पूछने लगी। कबीर ने दूध के दो घूंट लेकर कहा “दूध ठीक है। चीनी की जरूरत नहीं है।” युवक मौन नहीं रह सका। उसने कहा “बाबा! दूध तो खारा है। आपने माताजी को बताया क्यों नहीं?” कबीर बोले “यह तुम्हारे लिए मार्गदर्शन है।” युवक समझा नहीं। कबीर ने रहस्योघाटन करते हुए कहा “भैरी पत्नी मुझे सहन करती है। मैंने दिन के उजाले में लैम्प जलाने का आदेश दिया। उसने कोई तर्क नहीं किया। लैम्प जलाकर रख दिया। वह मुझे इतना सहन कर सकती है तो मैं उसे सहन क्यों नहीं करूँ? दूध खारा है, यह बात सही है। इसमें नमक डाला गया है। यह उसने जानबूझकर नहीं किया। प्रमादवश चीनी के बदले नमक डाल दिया। क्या हुआ? क्या ऐसा प्रमाद कभी मेरे से नहीं होता है? मैंने उसको सहन कर लिया। अन्यथा तुम्हारे सामने ही हम दो बार झगड़ पड़ते। तुम साधुओं के आश्रम में जाकर रहो या गृहस्थी बसाओ, सहनशील बनकर ही सफल हो सकते हो।” युवक को जीवन की दिशा मिल गई।

यह उदाहरण है संवेग-संतुलन का। मनुष्य के जीवन में इस प्रकार के प्रसंग आते रहते हैं। जो सह लेता है, वह बच जाता है। जो सहन नहीं कर पाता है, उसके अस्तित्व को खतरा हो जाता है। असहिष्णु व्यक्ति आत्महत्या कर लेता है। परीक्षा का परिणाम सही नहीं आने से विद्यार्थी आत्महत्या कर लेते हैं। मनपसंद लड़की के साथ विवाह न हो पाने पर कितने युवक अपने जीवन की बाजी लगा देते हैं। व्यापार में असफल होकर कितने व्यापारी प्राणों से हाथ धो बैठते हैं। बड़े-बड़े वैज्ञानिक भी मानसिक कुंठाओं से व्यथित होकर असमय में अपनी जीवनयात्रा समाप्त कर बैठते हैं। यह सब क्यों होता है? संवेगों का असंतुलन एक बड़ा कारण है। इसलिए संवेग-संतुलन का सूत्र महत्वपूर्ण बन जाता है।

श्रमशीलता

आज का युग आर्थिक प्रतिस्पर्द्धाओं का युग है। अर्थ की अंधी दौड़ में शिक्षित और अभिशिक्षित सभी संभागी बन रहे हैं। पढ़े-लिखे युवक अपने परम्परागत धंधों में रुचि नहीं रखते। वे अपना कार्यक्षेत्र बदलना चाहते हैं। वे सब ऑफिस में बाबू बनकर बैठना चाहते हैं। बेरोजगार बाबुओं की बढ़ती जा रही संख्या देश के अर्थतंत्र को चुनौती दे रही है। इतना बड़ा देश और करोड़ों युवक बेरोजगार। ऐसे युवक नई टेक्नोलॉजी के सहारे-अपने कार्यक्षेत्र में विशेष कौशल प्राप्त करें तो उनके हाथ कभी खाली नहीं रह सकते।



राष्ट्र विन्तन

- ◆ काले धन के मामले में केन्द्र सरकार की छानबीन पूणे के कारोबारी हसन अली तक ही सीमित है। कोई और सूचना नहीं मिल रही है। सिर्फ एक शख्स पर सारा फोकस है। दूसरों का क्या होगा? हम जानना चाहेंगे कि हर केस में आप कितना आगे बढ़ें हैं। अगली सुनवाई में हम राष्ट्रीय सुरक्षा के नजरिये से जांच में प्रगति के बारे में जानना चाहेंगे। हम धन के स्रोत के बारे में जानना चाहेंगे।

सुप्रीम कोर्ट

- ◆ प्राइवेट एसी अस्पतालों (25 बेड से ज्यादा वाले) और डायग्नोस्टिक सेंटरों पर 5 प्रतिशत सर्विस टैक्स लगाने का बजट प्रस्ताव सरकार ने वापस ले लिया है। वित्त मंत्री प्रणव मुखर्जी ने कहा, अगले साल जीएसटी लागू होने तक यह सर्विस टैक्स नहीं लगेगा। रेडीमेड ब्रांडेड कपड़ों पर प्रस्तावित एक्साइज ड्यूटी में राहत दी गई है। अब गारमेंट्स के 45 प्रतिशत मूल्य पर 10 प्रतिशत ड्यूटी होगी, जो पहले 60 प्रतिशत पर प्रस्तावित थी।

प्रणव मुखर्जी, वित्तमंत्री

- ◆ रिश्वत देने वालों को संरक्षण और रिश्वत लेने वाले को कड़ी से कड़ी सजा दी जानी चाहिए। रिश्वत देने वाले को संरक्षण दिया जाएगा, तो वह सहयोग करेगा। इससे अधिकारियों को घूस लेने वाले को पकड़ने में आसानी होगी। बताया गया है कि कई बार ऐसी चीज के लिए रिश्वत देनी पड़ती है जिनके लिए वे कानूनी तौर पर हकदार होते हैं। मजबूरी में रिश्वत देने वाले शख्स को किसी भी दंडात्मक कार्रवाई से पूरा संरक्षण मिलना चाहिए। एक बार रिश्वत देने को कानूनी मान्यता मिल जाएगी, तो इससे रिश्वत देने वाले और रिश्वत लेने वाले के हित अलग-अलग हो जाएंगे। ऐसी सूरत में रिश्वत देने वाला शख्स रिश्वत लेने वाले को पकड़वाने में सहयोग करना चाहेगा। कानून में इस तरह के बदलाव से रिश्वतखोरी के मामलों में गिरावट आएगी। इससे निपटने के लिए सभी विभागों, पार्टियों और सिविल सोसायटी के लोगों को एकजुट होकर प्रयास करना होगा।

कौशिक बसु, मुख्य आर्थिक सलाहकार

एक-दूसरे को समझने का प्रयत्न करें

आचार्य महाप्रज्ञ

एक व्यक्ति गुरु के पास गया और पूछा 'सब लोग शांति की बात करते हैं। आखिर वह शांति है क्या?' जब प्रश्न होता है तब व्याख्या अपेक्षित होती है। गुरु ने कहा 'सामने जो भीत या दीवार दिखाई दे रही है, वहां जाकर तुम वापस आओ, मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दूंगा।' वह गया। मुश्किल से सौ कदम चला होगा कि पैर में एक तीखी शूल चुभ गई। वह चीत्कार कर उठा। सहायता की पुकार लगाई। गुरु आए, शूल निकाली। उसने कहा 'आह! कितनी शांति मिली।' प्रश्न का उत्तर मिल गया। जब-जब कांटा चुभता है, अशांति हो जाती है और कांटा निकलता है तो शांति हो जाती है।

कांटा न चुभे, इतना रास्ता साफ होना जरूरी है। जैसे बाहर कांटे होते हैं, वैसे ही भीतर भी कांटे हैं। जैन आगम का बहुत प्रसिद्ध शब्द है 'शल्य'। भीतर में कांटा है, शल्य है तो वह अशांति का कारण बनता है।

दो व्यक्ति आपस में लड़ने लगे, वातावरण अशांत हो गया। दोनों में मैत्री हो गई, वातावरण शांत हो गया।

बड़ा जटिल प्रश्न है शांति और अशांति का। यह अहेतुक नहीं है। अशांति भी सहेतुक है। हेतु कहीं बाहर से आयात नहीं करने पड़ते। उसके हेतु भी भीतर हैं। क्रोध, अहंकार, माया, कपट और लोभ-ये कषाय सबमें बराबर नहीं होते। अगर ये सबके समान होते तो शायद शांति और अशांति जैसे शब्द शब्दकोष में न होते।

चिंतन का भी कोई एक कोण, एक रूप नहीं होता। अगर हजार व्यक्ति बैठे हैं तो चिंतन का कोण भी हजार तरह का होगा, दृष्टिकोण भी हजार तरह का होगा। रुचि भी समान नहीं होती। सबका चिंतन भी समान नहीं होता। सबका दृष्टिकोण

सोचने की प्रवृत्ति, वाणी की प्रवृत्ति और शरीर की प्रवृत्ति-आदमी की ये तीन प्रवृत्तियां हैं। शरीर से काम करता है तो कहता है कि अब मैं थक गया हूँ। अब आराम करूंगा। सोचते-सोचते भी आदमी थक जाता है, किन्तु बोलने से पता नहीं क्यों नहीं थकता। सबसे ज्यादा व्यापार है वचन का। सबसे ज्यादा ध्यान भी इसी पर देना होगा। इस बात पर गहराई से चिंतन कर लिया जाए तो मैं मानता हूँ कि शांति की कुंजी हाथ में आ जाएगी। फिर शांत सहवास का वातावरण निर्मित होने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

भी समान नहीं होता और सबकी ग्रहणशक्ति भी समान नहीं होती।

अशांति का बीज है विपरीत अवग्रहण। जब हम किसी वस्तु का विपरीत अवग्रहण करते हैं तो अशांति पैदा हो जाती है। एक व्यक्ति ने मन के विपरीत कोई बात कही तो तत्काल मुंह से निकलता है कि तू कौन होता है सलाह देने वाला? अपना ध्यान रख, दूसरों के कार्य में हस्तक्षेप मत कर। अशांति यहीं से शुरू हो जाती है।

शांति के लिए एक दूसरे को समझने का प्रयत्न करना होगा। सामने वाला जो कह रहा है, उसे सम्यक् ग्रहण करें। सम्यक् ग्रहण में बाधा बनता है अहंकार। क्रोध, लोभ बहुत बुरा है, पर अशांति के लिए अहंकार सबसे ज्यादा जिम्मेदार है। कोई मुझे क्यों कहे? इसी भाव में अशांति के बीज की बुआई हो जाती है। कोई कहे, उसे सुनें और मौनभाव से उस पर चिंतन शुरू करें कि मुझे ऐसा क्यों कहा गया? कहां मेरी गलती है? कहां मुझसे भूल हो रही है? कहीं भटकाव तो नहीं हो रहा है? यह चिंतन शुरू कर दें तो अशांति को पनपने का मौका ही नहीं मिलेगा। अशांति अपने आप विलीन हो जाएगी।

विनम्रता और शांति इन दोनों का

संबंध है। जहां विनम्रता है, वहां शांति है। जहां विनम्रता नहीं, वहां शांति नहीं। शांति का एक बीज क्षमा है, पर उतना शक्तिशाली बीज नहीं है। क्षमा कर दिया, कटु शब्द का प्रयोग नहीं किया। अहंकार में मन में इतनी प्रतिक्रिया हो जाती है कि वह प्रतिक्रिया राई को पहाड़ बना देती है, सौ मन भार हो जाता है। शांति वह है, जहां बाहर की घटना की कोई प्रतिक्रिया न हो। वह विनम्रता से ही संभव है। जिस व्यक्ति में जितनी विनम्रता है, अहंकार का जितना ज्यादा विलय है, वही व्यक्ति शांति से रह सकता है।

पति भोजन कर रहा था। वह विनम्र स्वभाव का था। भोजन करते-करते उसकी आंखों में आंसू आ गए।

पत्नी ने पूछा 'आप रो क्यों रहे हैं?' पति बोला 'ये खुशी के आंसू हैं। आज तुमने भोजन बहुत बढ़िया बनाया।' पत्नी बोली 'तब थोड़ी सब्जी और लें?' 'नहीं इससे ज्यादा खुशी बर्दाश्त करने की मुझमें शक्ति नहीं है। सब्जी में मिर्च इतनी ज्यादा है कि प्रसन्न होकर रोने के अलावा और कोई चारा नहीं है।'।

बात कहने का एक तरीका होता है। कहने का तरीका और उसे ग्रहण करने का तरीका ये दोनों स्वस्थ होने चाहिए। अशांति किसी घटना से नहीं होती। कहने

दिशा बोंव

का प्रकार और ग्रहण करने का प्रकार ही अशांति पैदा करता है। अगर ये दोनों स्वस्थ हो जाएं जो फिर अशांति को पनपने का मौका ही नहीं मिलेगा। बहुत महत्वपूर्ण बात है कहने की कला सीखना। किस बात को कैसे कहें? यह कला जानना बहुत जरूरी है।

कुछ मास पूर्व एक पुस्तक देखी बड़ी सुन्दर पुस्तक है नॉन वाइलेंस एंड कम्युनिकेशन्स। शांति के लिए अहिंसक शैली में संवाद बहुत जरूरी है। हमारा संवाद अहिंसक शैली से हो। सीधा पत्थर न फेंके। कहावत है खीर में मूसल न डालें। ऐसी बात न कहें, जो प्रतिक्रिया उत्पन्न करे।

कबीर बहुत समझदार संत थे। उनके पास कोई युवक आया। उसने कबीर से कहा 'मैं आपसे एक सलाह लेने आया हूँ कि शादी करूँ या न करूँ? कबीर ने उसे निकट बिठाया और पत्नी से कहा 'तुम लालटेन जलाकर लाओ।'

दोपहरी का समय और चमकता हुआ सूर्य आकाश में। ऐसे समय में कबीर ने पत्नी को आदेश दिया लालटेन जलाकर लाओ। पत्नी ने आदेश का पालन किया और जलती हुई लालटेन सामने रख दी। कुछ देर इधर-उधर की बात करने के बाद कबीर ने पत्नी से कहा 'दो गिलास दूध लाओ।' पत्नी ने दूध के दो गिलास लाकर समाने रख दिये। कबीर और युवक दोनों ने दूध पीना शुरू किया। युवक ने एक घूंट पीकर गिलास रख दिया, जबकि कबीर ने पूरा गिलास खाली कर दिया। पत्नी को प्रसन्नता की दृष्टि से देखा और बढ़िया दूध लाने के लिए उसकी प्रशंसा की।

युवक का मन आंदोलित हो उठा। सोचा कहाँ आकर फंस गया। भरी दोपहरी में ये लालटेन जलवा रहे हैं। कड़वे-कसैले खारे दूध को बहुत अच्छा और मीठा बता रहे हैं। कहीं ये विक्षिप्त तो नहीं हो गए? उससे रहा नहीं गया, बोला 'मैं तो आपको बहुत ज्ञानी और समझदार मानकर आपके पास सलाह लेने आया था, लेकिन आपकी हरकतों से मेरे मन में संदेह पैदा हो रहा है।'

कबीर 'संदेह क्यों?'

युवक 'भरी दोपहरी में लालटेन जलाने और कड़वे दूध को, जिसमें नमक की मात्रा बहुत ज्यादा है, मीठा बताने की बात समझ के बाहर है।'

कबीर 'यह तुम्हारे प्रश्न का उत्तर है।'

युवक 'संतवर! क्या यह मेरे प्रश्न का उत्तर है?'

कबीर हां! तुमने देखा कि मेरे आदेश का मेरी पत्नी ने बिना एक शब्द बोले पालन किया। वह पूछ सकती थी कि दिन में लालटेन क्यों? किंतु उसने नहीं पूछा। वह खारा दूध लेकर आई तो मैंने उससे यह नहीं का कि दूध में इतना ज्यादा नमक क्यों? मैंने उसकी हरकत को सहन कर लिया। अगर परस्पर एक दूसरे को सहन करने की क्षमता है तो तुम शादी कर सकते हो, अन्यथा मैं तुम्हें शादी करने की सलाह नहीं दूंगा।'

वाक् संयम और भाषा विवेक के साथ जुड़ा है शांति का प्रश्न। हम दूसरे की बात को कैसे सहन करें? कोई प्रतिकूल बात कह रहा है और हम शांति के साथ उसे सुन रहे हैं, सुन सकते हैं तो मानें कि शांति का दरवाजा खुला है। यदि शांति और धैर्य से किसी की बात सुन सकें और तत्काल प्रतिक्रिया न करें तो हम शांति के संवाहक बन सकते हैं।

आज सहन करने की शक्ति तो कम है ही, कहने की कला का भी विकास नहीं हो रहा है। हमें इतना विकास करना है जिससे कटु से कटु बात को भी शांति से सुनने और सहने की क्षमता आ जाए। आपा न खोएं, हर बात को सम्यक् ग्रहण करें। अगर ऐसा होता है तो समय आने पर प्रतिकूल बात का खंडन भी किया जा सकता है। समस्या यह है प्रतिवाद का अवसर ही नहीं आता, पहले ही उबल पड़ते हैं। किसी ने किसी के बारे में कुछ कहा। पूरी बात सामने आई नहीं, उससे पहले ही आदमी उबल पड़ता है।

शांतिपूर्ण जीवन जीने के लिए, शांतिपूर्ण सहवास के लिए अगर सबसे बड़ी कोई कला है तो वह है वाक्कला।

बोलने की कला का प्रशिक्षण होना चाहिए। कहना हो तो कैसे कहें? कब कहें? कितना कहें? इन पर खूब विचार कर लें। अनेक बार जो समस्याएं हमारे सामने आती हैं, उनका कारण यही है कि एक बात को अनेक बार कहते जाते हैं। उसकी प्रतिक्रिया सामने आती है। कहने की सीमा भी होनी चाहिए। एक बार कह दिया, सावधान कर दिया, अब दिन भर उसी की रट लगाए रहेंगे तो सामने वाला अशांति में न हो तो भी अशांति में चला जाएगा।

जो शांति से रहना चाहते हैं उनके लिए जरूरी है वाणी का प्रशिक्षण। एक महत्वपूर्ण जैन आगम है दशवैकालिक। उसका सातवां अध्ययन वाणी के प्रशिक्षण का ही अध्ययन है। जैन आगम उत्तराध्ययन के पहले अध्ययन में भी वाणी का प्रशिक्षण दिया गया है। इसका कारण यही है कि हमारे जितने भी व्यवहार है, उनमें प्रमुख व्यवहार है वाणी। आदमी खाता है निश्चित समय पर, सोता है निश्चित समय पर, हर काम का प्रायः कोई न कोई निश्चित समय होता है, किन्तु इस बोलने की प्रवृत्ति का कोई समय नहीं है। बातचीत करते हैं तो उसमें काम की बात बहुत कम और निकम्मी बात ज्यादा होती है। हम चिंतन करें कि दिन भर में जितना हम बोलते हैं, उसमें सार्थक कितना होता है और निरर्थक कितना? महसूस होगा कि सार्थक बोलने की मात्रा बहुत कम है।

सोचने की प्रवृत्ति, वाणी की प्रवृत्ति और शरीर की प्रवृत्ति ये आदमी की तीन प्रवृत्तियां हैं। शरीर से काम करता है तो कहता है कि अब मैं थक गया हूँ। अब आराम करूंगा। सोचते-सोचते भी आदमी थक जाता है, किन्तु बोलने से पता नहीं क्यों नहीं थकता। सबसे ज्यादा व्यापार है वचन का। सबसे ज्यादा ध्यान भी इसी पर देना होगा। इस बात पर गहराई से चिंतन कर लिया जाए तो मैं मानता हूँ कि शांति की कुंजी हाथ में आ जाएगी। फिर शांत सहवास का वातावरण निर्मित होने में कोई कठिनाई नहीं होगी।



आदमी पर-पदार्थों के प्रति आशा न रखे। जहाँ आशा का भाव होता है, वहाँ निराशा का भाव भी आ सकता है। इसलिए आदमी अपने प्रति सन्तुष्ट रहे। पर-पदार्थों के प्रति अनाशंसा का भाव रखे। जब पर-पदार्थों के प्रति आशा का भाव विनिवृत्त हो जाता है तो व्यक्ति को मोक्ष यहीं मिल सकता है।

वर्तमान में मुक्ति

आचार्य महाश्रमण

संसार में दो कोटि के मनुष्य होते हैं। प्रथम कोटि में वे लोग समाविष्ट होते हैं, जो अपने जीवन का सम्यक् लक्ष्य निर्धारित नहीं कर पाते। दूसरी कोटि में वे लोग आते हैं, जो अपने जीवन का सम्यक् लक्ष्य निर्धारित करने में सफल हो जाते हैं। इस कोटि में वे भी लोग आते हैं, जो सुसंस्कार और सुकृत सम्पन्न होते हैं। ऐसे लोग बहुत कम होते हैं। संसार के अधिकांश लोग लक्ष्य-निर्धारण के अभाव में प्रथम कोटि में ही रह जाते हैं। किन्तु जीवन की सफलता के लिए मात्र जीवन का सम्यक् लक्ष्य-निर्धारण ही पर्याप्त नहीं है। लक्ष्य निर्धारण के साथ-साथ वहाँ तक पहुँचने वाले सही मार्ग का ज्ञान होना भी आवश्यक है और उस मार्ग पर सम्यग् गति करना भी नितान्त अपेक्षित है।

प्रश्न हुआ, जीवन का सम्यक् लक्ष्य क्या होना चाहिए? अध्यात्म के क्षेत्र में जीवन का लक्ष्य मोक्ष माना गया है। हालाँकि उपलक्ष्य अनेक हो सकते हैं, पर

अन्तिम लक्ष्य परम आनन्दमय आत्म-स्वरूप को प्राप्त करना है। मोक्ष प्राप्ति की कामना बहुत बड़ी है। इसे तो अनेक जन्मों की साधना के बाद समस्त कर्मों से मुक्त होने के बाद ही प्राप्त किया जा सकता है। किन्तु वर्तमान जीवन में भी मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बताते हुए कहा गया

जिसने अहंकार और काम को जीत लिया। जो मन के प्रतिकूल काम करने पर, विकारों से मुक्त हो गया। जो पर-पदार्थ की आशाओं से निवृत्त हो गया। उसको यहीं मोक्ष प्राप्त हो जाता है।

आदमी की एक दुर्बलता है अहंकार। मन के प्रतिकूल काम करने पर किसी के द्वारा अपमान करने पर या किसी की बात को स्वीकार न करने पर आदमी का अहंकार उभर जाता है। यह अहंकार फिर गुस्से को पैदा कर देता है। इसलिए व्यक्ति अपने अहंकार को विगलित करने का प्रयास करे। एक शिष्य ने गुरु से

ज्ञान प्राप्त किया। ज्ञान प्राप्ति के बाद शिष्य ने निवेदन किया गुरुदेव! आपने मुझे ज्ञान दान देकर बहुत कृपा की। मैं इसके प्रतिफल में या कृतज्ञता ज्ञापित करने के रूप में आपको क्या दक्षिणा दे सकता हूँ? गुरु ने कहा वत्स! मुझे कोई कीमती वस्तु नहीं चाहिए। तुम्हें जो बेकार चीज लगे, जिसका कोई उपयोग न हो, वह मुझे दक्षिणा में दे देना। शिष्य गुरुकुल से बाहर निकला और देखा कि यह मिट्टी बेकार की चीज है, इसे ही दे देना चाहिए। वह मिट्टी लेकर गुरु के पास गया। गुरु ने कहा मिट्टी तो बड़ी काम की चीज है। इससे ईंट बनती हैं, घड़ा बनता है, बच्चों के खेलने में भी काम आती है। यह तो बहुत उपयोगी है। फिर वह राख लेकर गुरु के पास पहुँचा। गुरु ने राख का उपयोग बताते हुए कहा यह जैन मुनियों के लुंचन में काम आती है। अजीर्ण होने पर राख और नमक की गोली लेने से स्वास्थ्य लाभ होता है। और भी अनेक

युगबोध

प्रकार से उपयोगी हो सकती है। शिष्य ने अनेक वस्तुओं के नाम बताए किन्तु गुरु ने सब की उपयोगिता सिद्ध कर दी अंत में शिष्य ने कहा वत्स! सचमुच, इसका कोई उपयोग नहीं है। यह मेरे पास छोड़ दो। तुम हलके हो जाओगे तुम्हारे पास ज्ञान का अहंकार कभी नहीं आएगा। जो आदमी अहंकार को छोड़ना जानता है। उसको यहीं मोक्ष प्राप्त हो सकता है।

जिसने मदन को यानी काम-वासना को जीत लिया, उसे यहीं मोक्ष प्राप्त हो सकता है। काम को जीतना भी आसान काम नहीं है। जब भीतर में वासना उत्तेजित होती है, बड़े-बड़े व्यक्ति भी विचलित हो जाते हैं। सामान्य आदमी की तो बात ही क्या, संत परम्परा का अध्ययन किया जाए तो ज्ञात होता है कि परिस्थितियों ने उनके मन को भी कमजोर बना दिया और वे दोष-सेवन के लिए आतुर हो गए। वस्तुतः काम को जीतना बहुत मुश्किल है।

जीवन की पवित्रता के लिए ब्रह्मचर्य की साधना बहुत जरूरी है। इस सन्दर्भ में प्राचीन आचार्यों ने तो यहाँ तक कह दिया 'मरणं बिन्दुपातेन, जीवनं बिन्दुधारणात्' ब्रह्मचर्य जीवन है और अब्रह्मचर्य मृत्यु है। एक गृहस्थ साधक के लिए पूर्ण रूप से ब्रह्मचर्य को स्वीकार करना कठिन होता है। इसलिए 'स्वदार-सन्तोष' व्रत की बात कही गई है। उसके लिए किसी भी स्थिति में उन्मुक्त भोग वाँछनीय नहीं होता। काम वृत्ति पर नियन्त्रण रखने के लिए उसके सामने कुछ आदर्श रहते हैं

पर-स्त्रीगमन नहीं करना।

वेश्यागमन नहीं करना।

अप्राकृतिक मैथुन सेवन नहीं करना।

व्यावसायिक वृत्तिसे विवाह सम्बन्धों को अपना समर्थन न देना।

तीव्र कामभोगों की अभिलाषा न करना।

ब्रह्मचर्य को सब व्रतों का शिरोमणि

जब मन में विकार आता है, गलत चिन्तन आता है तब मन विकृत बन जाता है। जब आदमी झूठ बोलता है, कटु बोलता है तब वाणी विकृत बन जाती है। जब संकेत या शारीरिक क्रियाओं के द्वारा गलत कार्य किया जाता है तब कायिक विकार हो जाता है। आदमी विकारों को दूर करने का प्रयास करे तो उसे यहीं मोक्ष प्राप्त हो सकता है।

माना गया है। उत्तराध्यायन सूत्र में बताया गया है।

मोक्ष चाहने वाले संसार-भीरू एवं धर्म में स्थित मनुष्य के लिए लोक में और कोई वस्तु ऐसी दुस्तर अज्ञानियों के मन को हरने वाली स्त्रियाँ हैं। आदमी काम को जीतने की साधना करे। जो काम को जीत लेता है। उसको मोक्ष यहीं प्राप्त हो सकता है।

जिसका मन, वचन और शरीर विकारों से रहित होता है, वह यहीं मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। जिसने आक्रोश, भय, अहंकार आदि को जीत लिया। वह मोक्ष के निकट पहुँच जाता है। साधक व्यक्ति की मुख्य साधना यही होती है कि वह विकारों का सर्वथा नाश करने का प्रयत्न करे। ऐसी कोई असंभव बात नहीं है कि विकार का नाश हो ही नहीं सकता। सौ प्रतिशत न भी हो, किन्तु काफी अंशों में नाश किया जा सकता है।

एक सैनिक युद्ध के मोर्चे पर गया। उसकी माँ ने संकल्प किया कि मेरा बेटा सानन्द घर लौट आएगा तो मैं एक संन्यासी को भोजन कराऊँगी। संयोगवश युवक सानन्द घर पहुँच गया। माँ ने बेटे

को अपने संकल्प से अवगत कराया। बेटे ने कहा माँ मरे हुए बाबा को बुलाना। माँ ने कहा बेटा! कैसी पागलपन की बात करते हो। मरा हुआ संन्यासी कैसे आ सकता है? वह गई और संन्यासी को बुला लाई। लड़के ने बाबा को गालियाँ देनी शुरू की। बाबा रुष्ट होकर वापस चला गया। इस प्रकार कई बाबा आए और रुष्ट होकर चले गए। आखिर एक बाबा आया। वह युवक की गालियों से आहत नहीं हुआ, शान्त रहा। बेटे ने कहा। माँ! यह मरा हुआ बाबा है इसे भोजन करा कर तुम अपना संकल्प पूरा करो। माँ समझी नहीं। बेटे ने कहा मरा हुआ संन्यासी वह होता है जिसका आक्रोश मर जाता है, वासना मर जाती हैं, अहंकार मर जाता है। संन्यासी को तो मरा हुआ होना ही चाहिए। जब मन में विकार आता है, गलत चिन्तन आता है तब मन विकृत बन जाता है। जब आदमी झूठ बोलता है, कटु बोलता है तब वाणी विकृत बन जाती है। जब संकेत या शारीरिक क्रियाओं के द्वारा गलत कार्य किया जाता है तब कायिक विकार हो जाता है। आदमी विकारों को दूर करने का प्रयास करे तो उसे यहीं मोक्ष प्राप्त हो सकता है।

आदमी पर-पदार्थों के प्रति आशा न रखे। जहाँ आशा का भाव होता है, वहाँ निराशा का भाव भी आ सकता है। इसलिए आदमी अपने प्रति सन्तुष्ट रहे। पर-पदार्थों के प्रति अनाशा का भाव रखे। जब पर-पदार्थों के प्रति आशा का भाव विनिवृत्त हो जाता है तो व्यक्ति को मोक्ष यहीं मिल सकता है। जो व्यक्ति वर्तमान में उदासीन रहता है, सन्तुष्ट रहता है, वह जीवित अवस्था में भी मुक्त हो सकता है।

आदमी अहंकार और कामवासना को जीते। मानसिक, वाचिक और कायिक विकारों को दूर करे। पर-पदार्थ की आशा से निवृत्त रहे तो यहीं, इसी जन्म में मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।

‘पराया’ क्यों हो जाता है बेटा?

विभा प्रकाश श्रीवास्तव

भारतीय समाज में लड़की को शुरू से ही इस अहसास से पाला जाता है कि वह विवाह के बाद दूसरे घर चली जायेगी तथा उस पर उनका कोई अधिकार नहीं होगा। हर माता-पिता को न चाहते हुए भी इस सामाजिक परंपरा का पालन करना होता है। लड़की का विवाह के बाद पराई होना एक परंपरा ही है जिसे पूरी सामाजिक मान्यता है, किन्तु वर्तमान में लड़कों की भी शादी होते ही पराये हो जाने की संभावनाएं अधिक बढ़ने लगी हैं। अधिकांश माता-पिता को बेटी के साथ-साथ बेटे के पराये हो जाने का खतरा नजर आने लगा है।

चूंकि लड़की का शुरू से ही इस विचारधारा के साथ पालन पोषण होता है कि वह पराये घर जायेगी अतः इसे सामान्य रूप में लिया जाता है किन्तु लड़का जिस पर माता-पिता की सारी आशाएं लगी रहती हैं जिसे वह अपने बुढ़ापे की लाठी मानकर चलते हैं। शादी होते ही यदि वह अपने माता-पिता को छोड़कर एकदम अलग होता है तो माता-पिता के लिए यह बड़ी ही दुःखद घटना होती है।

सामान्य विवाह से पूर्व बेटा अपने माता-पिता का आज्ञाकारी पुत्र रहता है किन्तु जैसे ही वह पति बनता है इन संबंधों में थोड़ा फर्क आने लगता है। चूंकि शादी के बाद एक नए परिवार की शुरुआत होती है। अतः सभी संबंधों में फर्क पड़ना स्वाभाविक भी है, किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि अपने जन्म-दाताओं से एकदम नाता ही तोड़ दिया जाये। हालांकि बेटे पर एक नई जिम्मेदारी आती है किन्तु उसका फर्ज है कि वह परिवार को जोड़कर रखने के लिए सभी संबंधों के बीच संतुलन बनाकर चले क्योंकि एक भी पलड़ा भारी होने पर बिखराव के कारण पैदा हो सकते हैं।

पिता बेटे के इस परिवर्तित व्यवहार को सामान्यता से ले सकते हैं किन्तु मां अपने बेटे पर पूरा हक जताना चाहती है और यहीं से हो जाती है सास और बहू के बीच झगड़े की शुरुआत। वह लड़की जो अपने सारे निकट संबंधियों को छोड़कर नए घर में आती है और वह भी यही चाहती है कि उसका पति सिर्फ उसी का बनकर रहे। ऐसे में वह भाई बहन व पिता पुत्र के संबंधों और जिम्मेदारियों को दरकिनार करना चाहती है, इसलिए बात-बात पर झगड़े होने लगते हैं। इन परिस्थितियों में या तो माता-पिता स्वयं ही बेटे को अलग रहने की सलाह दे देते हैं या फिर बेटा ही घर छोड़कर चल देता है।

बेटे के शादी के बाद पराये हो जाने के लिए सिर्फ बहू को ही दोषी ठहराना भी गलत है, क्योंकि कई परिवार ऐसे भी देखे गए हैं, जहां बेटे के अलग रहने की चाहत को बहूओं ने पूरा नहीं होने दिया है तथा उन्हें अपने माता-पिता और भाई बहनों के प्रति अपने फर्ज का अहसास कराया है। आमतौर पर बहूओं की अच्छाइयों को तो नजरअंदाज कर दिया जाता है अतः परिवार यदि जुड़ा हुआ है तो इसके लिए बेटे का ही गुणगान किया जायेगा।

परिवार में बिखराव के लिए माता-पिता भी दोषी हो सकते हैं यदि वह अपने विवाहित पुत्र की जिम्मेदारियों को न समझकर बात-बात पर उससे बहू की शिकायतें कर घर की शांति भंग करने का प्रयास करते हैं परिवार को जोड़कर रखने के लिए हर व्यक्ति को कुछ न कुछ त्याग करना होता है।

बेटा पराया न हो इसके लिए माता-पिता को बहू सहित बेटे को प्यार और अपनापन देकर अपना महत्व उसके जीवन में बनाये रखना चाहिए अतः जहां तक संभव हो सके बहू-बेटे की दिनचर्या

में दखल ना ही दिया जाये किन्तु इसका अर्थ यह भी नहीं है कि किसी गलत बात के लिए आप मुंह न खोलें।

आमतौर पर युवतियां शादी के बाद सिर्फ अपने पति के ही साथ रहना पसंद करती हैं और इसीलिए वह जल्द से जल्द अपने लिए एक अलग घर बनाने का प्रयास करने लगती है। वह नहीं चाहती कि उनकी व्यवस्था और रुचि के विपरीत घर में कोई कार्य हो। घर में अधिक सदस्य होने पर हर व्यक्ति की स्वतंत्रता प्रभावित होती है और आज की युवा पीढ़ी को यह कतई बर्दाश्त नहीं है। अपनी इच्छाओं की पूर्ति संयुक्त परिवार में न होने की स्थिति में नवविवाहिताएं अपने पति को अलग हो जाने की सलाह बात-बात पर देने लगती है। वह इस बात को भूल जाती है कि बेटे का उसके माता-पिता, भाई-बहनों के प्रति भी कोई फर्ज है।

सामान्य तौर पर ऐसे परिवारों में बेटे अलग हो जाते हैं जहां एकमात्र व्यक्ति पर परिवार की सारी जिम्मेदारी डाल दी जाये। यदि एक सदस्य की आमदनी अधिक है और दूसरे की कम तो भी घर के खर्च को लेकर झगड़े होते हैं और अधिकांशतः देखा जाता है कि वही बेटा सबसे पहले पराया होता है जिस पर माता-पिता की आशाएं ज्यादा होती हैं। चूंकि अधिक पैसा घर पर खर्च करने के बाद भी उसे ठाट-बाट से रहने की सुविधा नहीं मिल पाती। आर्थिक सम्पन्नता के बावजूद पत्नी और बच्चों की इच्छापूर्ति न कर पाने के कारण भी परिवार में अलग होने की प्रवृत्ति पनपने लगती है। परिवार का हर सदस्य यह सोचता है कि वह इतना पैसा खर्च कर रहा है जिससे वह अलग रह कर आराम की जिन्दगी गुजार सकता है और इसी कारण माता-पिता व घर की जिम्मेदारियों से वह मुंह मोड़ लेता है।



परिवार

कई ऐसे परिवार भी देखे जाते हैं जहां इकलौते बेटे ने विवाह के बाद अपने माता-पिता को एकदम अकेला छोड़ दिया है हर काम के लिए उन्हें बेसहारा भटकना पड़ता है तथा सभी उन्हें दया का पात्र बना लेते हैं। इन मामलों में दो तरह के विचार सामने आते हैं कुछ लोग बहू बेटे को दोषी ठहराते हैं तो कुछ माता-पिता को। जबकि संयुक्त परिवार सभी के सहयोग और त्याग से बनते हैं।

उन परिस्थितियों में बेटे के पराये हो जाने का खतरा अधिक होता है जहां एक बेटा अच्छी नौकरी प्राप्त कर ले और उसकी शादी भी किसी अपने से अधिक सम्पन्न परिवार की लड़की से हो जाए। अपनी बराबरी के रिश्तों में इस तरह का खतरा कम रहता है।

बेटे के पराये हो जाने का दुःख माता को इसलिये भी अधिक होता है क्योंकि वह अपनी समता से अधिक खर्च कर अपनी इच्छाओं का दमन कर बेटे को अच्छी शिक्षा दिलाकर एक उच्चाधिकारी के रूप में देखना चाहते हैं। बेटा उनकी इच्छा के मुताबिक एक अच्छा डॉक्टर, इंजीनियर या उच्चाधिकारी बन जाता है और विवाह से पहले वह अपने माता-पिता की आज्ञानुसार सभी कार्य भी करता है किन्तु विवाह होते ही उसके व्यवहार में परिवर्तन आने लगता है। यह परिवर्तन थोड़ा सहन किया जा सकता है, किन्तु इसकी अधिकता माता-पिता के लिए असहनीय हो जाती है चूंकि वह अपनी नौकरी और सोसायटी के अनुसार अपना जीवन स्तर बनाना चाहता है जिसमें उसके परिवार की जिम्मेदारियां अवरोध नजर आने लगती हैं और इसी कारण वह परिवार से अलग हो जाता है। भाग्य से यदि बहू रानी भी किसी बड़े घर से आ जाती है तो उनकी इच्छा भी यही अधिक रहती है कि उसका पति उसके माता-पिता के साथ अधिक न रहे और बेटा न चाहते हुए भी पत्नी के कारण अपने माता-पिता से दूर हो जाता है या माता-पिता स्वयं उसे अलग रहने की सलाह मजबूरी में दे देते हैं।

प्रायः देखा जाता है कि जिन माता-पिता पर घर की जिम्मेदारियां अधिक होगी और वह आर्थिक रूप से तंग होंगे उनका इकलौता कमाऊ पुत्र बहुत जल्दी पराया होगा यदि माता-पिता के पास अच्छी सम्पत्ति है तो बेटे उनके आस-पास घूमते नजर आयेंगे और न चाहते हुए भी उनकी सेवा करने का नाटक करते रहेंगे। सिर्फ इस लालच में कि उन्हें भी धन का कुछ हिस्सा तो हाथ लगेगा ही।

वर्तमान भागदौड़ की जिन्दगी और अधिक से अधिक धन कमा लेने की चाहत में लोगों के पास इतना समय नहीं रह गया है कि वह अपने बुजुर्गों की सेवा कर सकें उनकी इच्छाओं का ध्यान रखें अतः बुजुर्ग साथ रहते हुए भी अपने आपको उपेक्षित समझने लगते हैं और बहू-बेटे साथ होने पर भी वह उन्हें पराये नजर आने लगते हैं।

संपादिका : 'स्वीकृति'

विभावरी, जी-9, सूर्यपुरम, नंदनपुरा, झांसी - 284003 (उ.प्र.)

झाँकी है हिन्दुस्तान की

- बच्चे की शिक्षा पर लगातार बढ़ते खर्च ने उनके माता-पिता को मुश्किल में डाल रखा है। एक सर्वेक्षण के अनुसार माता-पिता अपनी इनकम का औसतन 40 प्रतिशत हिस्सा बच्चों की शिक्षा पर खर्च कर रहे हैं। विगत 6 सालों में यह खर्च 150 प्रतिशत से भी अधिक बढ़ चुका है।

वर्ष 2005 में एक बच्चे की शिक्षा पर जहां एक वर्ष में 35 हजार रुपये खर्च होते थे वहीं वर्ष 2011 में यह खर्च बढ़कर 95 हजार तक पहुंच गया है। बच्चे की प्राइमरी/सेकेंडरी एजुकेशन पर होने वाले खर्चों में स्कूल फीस, ट्रांसपोर्ट चार्ज, बुक्स, यूनिफॉर्म, स्टेशनरी, बिल्डिंग फंड, एजुकेशनल ट्रिप्स, कोचिंग, एक्सट्रा करिकुलर एक्टिविटी शामिल हैं। अगर स्कूल की ट्यूशन फीस को छोड़ दें तो एक बच्चे की एजुकेशन पर साल में 65 हजार तक खर्च हो रहे हैं। ट्यूशन फीस मिलाकर यह खर्च 94 हजार तक पहुंच जाता है। बच्चे की पूरी स्कूल एजुकेशन का खर्च देखें तो फिलहाल 18 से 20 लाख रुपये तक का खर्च हो रहा है।

- राजस्थान के एक छोटे से गांव की 30 वर्ष की सरपंच छवि राजावत जब संयुक्त राष्ट्र में 11वें इन्फो पॉवर्टी विश्व सम्मेलन में बतौर अध्यक्ष भाग लेने पहुंची तो वहां मौजूद विभिन्न देशों के मंत्री और राजदूत अचंभित रह गए। छवि अपनी वेशभूषा से कोई आईटी पेशेवर, आला मॉडल या अभिनेत्री मालूम पड़ रही थी। जबकि आमतौर पर भारतीय गांवों की महिला सरपंच मामूली पढ़ी लिखी होती हैं और परंपरागत साड़ी में दिखती हैं।

छवि देश की इकलौती एमबीए डिग्री धारक सरपंच हैं और सरपंच बनने के लिए उन्होंने एयरटेल में आला प्रबंधकीय पद छोड़ दिया है, ताकि बतौर सरपंच अपने गांव में सेवाएं दे सकें। छवि ने अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में संभागी प्रतिनिधियों से कहा सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों को हासिल करने के लिए ई-सेवाओं जैसी नई तकनीकों का इस्तेमाल कर विभिन्न अहम कदम उठाए जा सकते हैं।

सबसे अधिक मूल्यवान हैं संतोष

अशोक सहजानन्द

हमारी रोजाना की जिंदगी का यही अनुभव है कि आदमी, जीवन के किसी भी क्षेत्र में, किसी भी परिस्थिति में, किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति में क्यों न लगा हो, उसे शीघ्र ही अनुभव हो जाता है कि आनंद या सुख अकेले नहीं आता, उसके घनिष्ठ मित्रों के रूप में दुःख और कष्ट भी साथ-साथ लगे आते हैं। प्रत्येक सुख के बाद दुःख आता ही है चाहे उसके साथ-साथ या काफी समय बाद। सुख और दुःख का यह चक्र एक ऐसे भंवर का निर्माण करता है, जिसमें से उन दोनों अर्थात् सुख, दुःख को एक दूसरे से पृथक करना, एक भयानक समस्या बन जाती है। इसका प्रारंभिक बिन्दु है जन्म-सुख या आनन्द और अंत है मृत्यु-दुःख या कष्ट। इन दोनों के बीच में जो अंतराल है यानी जीवन उसमें ये दोनों सुख और दुःख साथ-साथ चलते हैं तथा 'जुड़वा' की तरह एक-दूसरे से जुड़े नजर आते हैं। प्रत्येक व्यक्ति केवल सुख चाहता है, कोई दुःख नहीं चाहता पर एक अनचाहे बच्चे की भांति दुःख बलात् जीवन में प्रवेश करता है और अपने अधिकार पर जमा रहता है। यह स्थिति प्रत्येक व्यक्ति को मानसिक असंतुलन के तनाव में डाले रहती है।

ऐसे सभी बुद्धिमान व्यक्ति, जिन्हें यह समस्या कचोटती है, अपने आपको देखते हैं और इस समस्या पर विचार करते हैं। आत्मज्ञान की खोज उन्हें इस वास्तविक तथ्य से परिचित करा देती है कि इस संसार की सारी वस्तुएं, चाहे वे जड़ हो अथवा चेतन, मरणशील हैं।

एक न एक दिन उन्हें नष्ट होना ही है। सबको खत्म होकर आखिर धूल में ही मिल जाना है। व्यक्तिगत सत्ता को हमेशा के लिए विलीन होना है। जन्म-मृत्यु, जीवन में क्षणिक सुख और क्षणिक दुःख लाते हैं। वे भी संसार की अन्य चीजों की

भांति लुप्त हो जाते हैं। जीवन की सच्ची कला तो केवल सुख चुनने में है। साथ ही उस रास्ते पर चलने में है, जो हमें परम सुख की ओर ले जाता है। इस परम सुख में दुःख और कष्ट शामिल नहीं होते यह परम सुख हमेशा बना रहता है, कभी खत्म नहीं होता। यही परम सुख जीवन का वास्तविक उद्देश्य है।

सुख, प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी समझ के अनुसार जीवन को सुखपूर्वक बिताने की पूरी-पूरी कोशिश करता है, पर सुख का सच्चा रास्ता सबके लिए नहीं खुला है। पर्याप्त ज्ञान और मार्गदर्शन के अभाव में एक बड़ी गंभीर गलतफहमी में पड़कर लोग गलत मार्ग चुन लेते हैं और प्रसन्नता की बजाय दुःख पाते हैं। बुद्धिमत्ता एवं सही ज्ञान द्वारा अज्ञानता तथा भ्रम पर से पर्दा उठाया जा सकता है। ईमानदारी, न्याय तथा नैतिकता पर ही सच्चे सुख का ज्ञान आधारित है।

सही, गलत, अच्छा, बुरा, पुण्य, पाप की सही पहचान के लिए ज्ञान का सही दिशा में उपयोग किया जाना चाहिए। सही दृष्टि द्वारा सुख के सच्चे स्थान को जानना चाहिए और एक बार उसके स्रोत का पता चल जाने पर रास्ता अपने आप साफ हो जाता है। अंतिम लक्ष्य आत्म-ज्ञान है और इसके लिए एक नियमित युद्ध छेड़ने की जरूरत है, सदैव चित्त के दर्पण में विवेक में झांकने की आवश्यकता है जो अभ्यास के द्वारा अधिकाधिक चमकने लगता है। जैसे-जैसे धनात्मक शक्ति का फरिस्ता विकसित होता है, ऋणात्मक शक्ति का राक्षस पराजित होता जाता है। वह ईमानदारी पूर्वक किये गये प्रयत्नों के फलस्वरूप निर्भीक होता जाता है और वह अपने सच्चे स्वरूप का न कि औरों द्वारा देखे गये रूप का दर्शन करने लगता है।

प्रत्येक कार्य करते समय चित्त-दर्पण अर्थात् विवेक पर दृष्टि रखनी चाहिए तथा कार्य करते समय इस बात की भी सावधानी बरतनी चाहिए कि विवेक को ज्यादा से ज्यादा धनात्मक शक्ति मिले। केवल यही कार्य विवेक पर जमा मैल दूर कर सकता है और उसे 'सच्चे-स्व' अर्थात् परमात्मा के साथ एकाकार कर सकता है।

भौतिक शरीर नष्ट हो जाएगा वह प्रकट होता है, कुछ समय रहता है, फिर लुप्त हो जाता है। फिर भी वह चिरंतन, अंतरात्मा का आवास है, अतः जब तक वह है, उसका एक मंदिर की भांति आदर किया जाए, उसे स्वच्छ रखा जाए। शरीर को स्वस्थ रखना बहुत बड़ी विधि है।

चित्त के एकाग्र होने पर इंद्रियां और इच्छाएं नियंत्रित हो जाएंगी। बाद में यही क्रिया 'ध्यान' की ओर ले जाएगी। जब चित्त की एकाग्रता इंद्रियों का मार्ग बंद कर चित्त की किरणों को एकत्र कर संगठित कर एक बिन्दु की ओर मोड़ती है, ध्यान की स्थिति शुरू हो जाती है, यह चित्त को संतुलित कर देती है। और, स्थिर बिन्दु को छूने लगती है।

सम्पूर्ण विश्व की संपत्ति से भी अधिक मूल्यवान संतोष ही है। यही चित्त की खोज में निकले लोगों को इस मार्ग को समझकर, जानकर, उस पर चलना चाहिए। मात्र तर्क तथा पुस्तकों का अध्ययन, इस मार्ग की ओर नहीं ले जा सकेगा। इसके लिए सच्चा और व्यावहारिक कदम उठाना पड़ेगा। यही मार्ग मंजिल तक ले जाएगा। अपने भीतर परम शक्ति को जागृत करने का यही अग्रगामी पथ है।

संपादक : 'सहज-आनंद' (त्रैमासिक)

**239, गली कुंजस, दरीबाकलां,
चांदनी चौक, दिल्ली - 110006**

कौन चाहता है भ्रष्टाचार को मिटाना

ऐसा लगता है कि भ्रष्टाचार के विरुद्ध जितना शोर हो रहा है उसमें ईमानदारी कम और दिखावा ज्यादा है। क्योंकि जो लोग इसे जड़ से मिटाने का संकल्प बार-बार दोहरा रहे हैं, उनकी नीयत संदेह से परे नहीं है। ए. राजा का टेलीकॉम घोटाला, सुरेश कलमाड़ी का कॉमनवैलथ गेम्स घोटाला और आदर्श हाउसिंग सोसायटी आदि मामलों की जिस त्वरित गति से जांच चल रही है वह किसी सही मुकाम पर पहुंचेगी इस पर विश्वास नहीं होता। सरकारी जांच एजेंसियां चाहे जितनी कोशिश कर सच्चाई का पता लगा लें उनके निष्कर्षों पर निर्णायक कार्रवाई तो सरकारें ही करती हैं। सरकारें चाहे किसी भी दल की हों हर घोटाला इनकी जानकारी में होता है और उनमें सरकारी पक्ष के लोग या उनके रिश्तेदार तो संलिप्त रहते ही हैं नौकरशाह भी पीछे नहीं रहते। दूसरी ओर सरकारों के पास विपक्षी लोगों के अवैध कार्यों की सूची भी रहती है। जब सरकारें अपने आदमियों को बचाती हैं तो विपक्ष इस डर से उनके खिलाफ आवाज नहीं उठाता कि कहीं उनके कारनामों की पोल भी न खोल दी जाये। संसदीय इतिहास इस बात का गवाह है कि किसी भी ऐसे मामले की जांच के लिये बैठायें गये आयोग और जांच समितियों द्वारा दी गयी रिपोर्टों में दर्शाये गये आरोपियों के विरुद्ध प्रायः सख्त कदम नहीं उठाये गये हैं। सरकारें हर ऐसे मामले में बड़े से बड़े अपराधी को सजा दिलाने का आश्वासन देती हैं, कानून को अपना काम करने देने की बात कहती हैं और भारतीय न्याय व्यवस्था पर भरोसा रखने की सीख भी लोगों को दे देती हैं। पर सच्चाई यह है कि ये वे चालाकियां हैं जिनके जरिये तात्कालिक जनआक्रोश को शांत कर दिया जाता है और बाद में लोग सब कुछ भूल जाते हैं या उनमें पहले जैसा गुस्सा नहीं रहता। शुरु से यदि आप देखें तो टी.टी. कृष्णामाचारी, प्रतापसिंह कैरों, सुखराम, बंगारू लक्ष्मण, जैतली, मधु कोड़ा आदि

सुरेश पंडित

नेताओं पर भ्रष्टाचार के आरोप लगे, लेकिन इनमें से किसी को भी सजा नहीं मिली है। अधिक से अधिक इतना हुआ है कि इन्हें पद छोड़ने के लिए बाध्य कर दिया गया है। जयललिता, लालू यादव-राबड़ी देवी, मुलायम सिंह आदि आय से अधिक संपत्ति रखने के दोषी हैं। पर इनके विरुद्ध भी कोई कार्रवाई नहीं हुई है।

पिछले दिनों प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा था कि गठबंधन सरकारों की भी अपनी कुछ मजबूरियां होती हैं। यह वह सच है जिसे मनमोहन सिंह ही स्वीकार कर सकते हैं। जबकि इसी तरह की सरकार के मुखिया रहे अटल बिहारी वाजपेयी गुजरात में हुए वर्ष 2002 के व्यापक दंगों के लिये मंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं कर पाये थे। न ही भारतीय जनता पार्टी कर्नाटक के मुख्यमंत्री के खिलाफ कुछ कर पा रही है। **अब यह बात साफ हो गई है कि कॉरपोरेट घरानों से जुड़ी नीरा राडिया की लाइजनिंग से ए. राजा टेलीकॉम्यूनिकेशन मंत्री बने थे। उस घोटाले में जो कुछ खाया-पीया गया है उसमें हिस्सेदार राजा के अलावा करुणानिधि के परिवारजन भी हैं। डी.एम. के. संग्राम सरकार की एक पार्टनर है और अगले चुनाव में कांग्रेस इसके साथ मिलकर चुनाव लड़ने का निर्णय ले चुकी है। इसलिये हो सकता है सरकार ने जानबूझकर भी इस घोटाले से अनजान बने रहने की कोशिश की हो।** अब तो यह बात भी सामने आ गई है कि करुणानिधि ने अपने परिजनों को बचाने के लिये सरकार पर जोर डाला था। लेकिन सुप्रीम कोर्ट में मामला पहुंच जाने के कारण केंद्रीय सरकार कुछ भी करने में समर्थ नहीं रही है। भ्रष्टाचार को किस तरह प्रश्रय दिया जाता है और उसके आरोपी किस

तरह बच निकलते हैं इसका एक उदाहरण अभी सामने आया है। महाराष्ट्र में मालेगांव के ए.डी.एम. को इसलिये जिन्दा जला दिया गया क्योंकि वे पेट्रोलियम पदार्थों में व्यापक तोर पर मिलावट करने वाले माफिया के पीछे पड़ गये थे। घटना होने के तुरन्त बाद राज्य सरकार ने इस तरह के लोगों के खिलाफ सघन कार्रवाई का आदेश पुलिस प्रशासन को दे दिया। लेकिन रिटायर होने से चार दिन पहले पुलिस विभाग के मुखिया शिवनंदन ने सार्वजनिक रूप से यह बयान दिया कि वह कार्रवाई महज दिखावटी थी। बाद में वहां के गृहमंत्री आर.आर. पाटिल ने भी इस बात की ताईद की है और यह बताया है कि यह मामला उनके मंत्रालय के कार्यक्षेत्र में ही नहीं आता। परिणामस्वरूप माफिया अब भी बेरोकटोक वही काम कर रहा है। जाहिर है सरकारी सहयोग से यह अवैध धन्धा चल रहा था। यशवन्त सोनावणे की क्रूर हत्या के बाद उपजे जनाक्रोश को दबाने के लिये यह सारा नाटक खेला गया था। पर यह कोई पहला ही उदाहरण नहीं है। पिछले साल ही आठ ऐसे लोगों को मार दिया गया था जो 'सूचना के अधिकार' के तहत कुछ ऐसी सूचनाएं प्राप्त करना चाहते थे जिनसे शराब के अवैध धन्धे में लिप्त लोगों के नाम उजागर हो सकते थे। इसी तरह विजय बहादुर सिंह नामक एक कार्यकर्ता को इसलिये मार दिया गया था क्योंकि उसने वित्त मंत्रालय के उच्चाधिकारियों के द्वारा किये गये भ्रष्टाचार को बेनकाब करने की हिमाकत की थी। सड़क योजनाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार का भण्डा फोड़ने के लिये वरिष्ठ अभियन्ता सत्येन्द्र दूबे ने प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को एक पत्र लिखा था। उन लोगों का तो बाल भी बांका नहीं हुआ बेचारे सत्येन्द्र दूबे को जान से हाथ धोने पड़े। उत्तरप्रदेश के लखनऊ शहर में इन्डियन ऑयल कॉरपोरेशन में काम कर रहे इंजीनियर

एस. मंजुनाथ ने गलती से कुछ पेट्रोल पम्पों के मिलावट करने के लिये सील कर दिया था। उसकी सजा उन्हें अपनी जान देकर चुकानी पड़ी।

ज्ञातव्य है कि जब ऐसे लोगों की हत्या हुई है यह मांग जोर शोर से उठाई गई है कि ऐसे लोगों की सुरक्षा के लिये कड़े प्रबन्ध किये जायें। हर बार सरकारों ने ऐसी व्यवस्था करने के लिए आश्वासन भी दिये हैं। पर आज तक कुछ भी नहीं हुआ है। उपरोक्त सारी घटनायें यह साबित करती है कि सरकारें भ्रष्टाचार को मिटाने के लिये कितनी चिन्ता कर रही हैं। अब तो लोग यह भी कहने लगे हैं कि जब हमारे द्वारा भरे गये टैक्स की इस तरह लूट खसोट हो रही है तब क्यों न हम इसे देना ही बंद कर दें। पर यह सारा मामला इतना साफ नहीं है जितना दिखाई देता है। न ही इससे निबटने के लिये जो कुछ किया जा रहा है उससे भ्रष्टाचार मिटने वाला है। क्योंकि इसमें वे लोग ही शामिल नहीं हैं जिन्हें बार-बार प्रकाश में लाया जा रहा है। दरअसल हमें दूसरों की बुराई तो दिखाई दे रही है लेकिन हम यह नहीं देख रहे हैं कि हम स्वयं या हमारे परिवार में कितने लोग पाक-साफ हैं। यदि कभी ईमानदारी के साथ इस बात का सर्वे हो कि किसके पास कितनी चल, अचल सम्पत्ति है और उसे बनाने में खर्च हुई धनराशि के असली स्रोत क्या हैं तो पता लग जायेगा कि वास्तव में ऐसे बहुत ही कम लोग हैं। छोटे बड़े सरकारी कर्मचारी, व्यापारी और दूसरे कामों में लगे लोगों में ऐसे लोगों की संख्या बहुत कम है जो ईमानदारी की कमाई से अपना जीवन यापन कर रहे हैं। बल्कि ऐसे ईमानदार लोग भी मिल सकते हैं जो स्वयं तो रिश्वत नहीं लेते लेकिन जिन्हें अन्यत्र काम करवाने के लिये रिश्वत देनी पड़ती है। नहीं देने पर उनके काम नहीं होते, उन्हें परेशान किया जाता है और शिकायत करने पर उसके परिणाम सुखद नहीं होते।

चुनाव आयोग द्वारा बनाई गई आचार संहिता में हर स्तर के चुनाव में प्रचार के लिये कितनी राशि खर्च की जाय इसके स्पष्ट प्रावधान हैं। फिर भी हर उम्मीदवार

उस राशि से दुगुना चौगुना खर्चा करता है और यह बात सबको दिखाई देती है, लेकिन उसे कोई रोक नहीं पाता। इस बात की भी कभी कोई जांच पड़ताल नहीं होती कि वह पैसा कहां से आता है। न ही राजनैतिक पार्टियां जो अपने अधिकाधिक लोगों को जिताने के लिये करोड़ों रुपये खर्च करती हैं उनसे पूछा जाता कि यह अपार धन राशि उन्हें कहां से मिली है। सभी जानते हैं उसे पार्टियां व नेतागण अवैध तरीकों से संचित करते हैं। इन्हीं सरकारों और राजनेताओं से हम यह उम्मीद करते हैं कि ये भ्रष्टाचार मिटाने के लिये एक निर्णायक कदम उठायेगी। तो इसे हमारी नासमझी ही कहा जा सकता है। इसी तरह प्रशासन में भी हर स्तर पर भ्रष्टाचार मौजूद रहता है। अदना से अदना कर्मचारी भी रिश्वत लिये बिना काम नहीं करता। उनके विरुद्ध की जाने वाली शिकायतें उनका कुछ भी बिगाड़ नहीं पाती क्योंकि उनकी रिश्वत राशि अपने से ऊपर के लोगों तक पहुंचती है। पुलिस, सार्वजनिक निर्माण, कोर्ट कचहरियां, राजस्व आदि सभी विभाग नीचे से ऊपर तक रिश्वत/कमीशन लेने वाले विभाग हैं। इस तरह आया हुआ पैसा नीचे से ऊपर तक बंटता है। ऐसे माहौल में यदि कोई ईमानदार व्यक्ति व्यवस्था के खिलाफ चलने की कोशिश भी करता है तो उसे अपनी जान तक गवानी पड़ जाती है। जबकि व्यवस्था ज्यों की त्यों बनी रहती है।

सरकारों के हर विभाग में बहुत बड़े पैमाने पर वस्तुओं की खरीद होती है। इसे ठेकेदारों के माध्यम से खरीदा जाता है। ठेका प्राप्त करने के लिये हर ठेकेदार अधिकाधिक कमीशन देकर ठेका प्राप्त करता है और फिर अपनी दी गई राशि और लाभ प्राप्त करने के लिये वह जो माल सप्लाई करता है वह महंगा तो होता ही है घटिया भी होता है।

यों तो रिश्वत/कमीशन लेना-देना बहुत पहले से चलता रहा है लेकिन इस प्रक्रिया में पिछले 20 सालों से काफी वृद्धि हुई है। इसकी त्वरित और व्यापक गति का एकमात्र कारण वह उदार आर्थिक नीति है जिसने व्यापार/व्यवसाय के लिये देश की

सीमा रेखाओं को मिटा दिया है। अब हमारे व्यापारी/व्यवसायी किसी भी देश में जाकर अपना काम कर सकते हैं। उसी तरह वहां के लोग भी हमारे यहां काम कर सकते हैं। इस दौड़ में जीतता वही है जो आर्थिक रूप से सर्वाधिक सम्पन्न होता है। ऐसे में यह जरूरी हो जाता है कि व्यक्ति जीवित रहने व आगे बढ़ने के लिये अधिकाधिक पूंजी अर्जित करे चाहे वह इसके लिये जायज नाजायज कोई भी तरीका अपनाये। जाहिर है जब पूंजी ही जीवन का प्रमुख लक्ष्य बन जाये तो उसे कानूनों द्वारा नहीं रोका जा सकता।

बाजार में पहले अपना अस्तित्व और फिर वर्चस्व बनाने के लिये जहां देसी पूंजीपतियों में होड़ लगा करती थी उसमें अब बहुराष्ट्रीय निगम भी शामिल हो गये हैं और उन्होंने बाजार पर कब्जा करने के लिये हर उस स्रोत को अपने हाथ में ले लिया है जहां से धन कमाया जा सकता है। इन्हें हासिल करने के लिये उन्होंने हर सरकारी/निजी एजेन्सी को भ्रष्ट कर दिया है। इसलिये यह पता लगाना दिनों-दिन कठिन होता जा रहा है कि कौन इस लूटमार में कितना शामिल है। न्याय विभाग जिससे यह उम्मीद की जा सकती थी कि वह इससे ऊपर उठकर भ्रष्टाचारियों को न्याय देगा वह आशा भी अब धूमिल होती जा रही है। इसी तरह मीडिया भी आम आदमी का साथ छोड़कर उनमें जा मिला है जिनमें धन संचय की होड़ लगी हुई है। इसमें झूठ को सच और सच को झूठ बनाकर बेचा जा रहा है और ऐसा मनोरंजन परोसा जा रहा है जो लोगों को न केवल भ्रमित करता है बल्कि उनकी चेतना को कुन्द भी करता है।

ऐसे हालात में भ्रष्टाचार को जड़ मूल से मिटाने की जो कोशिशें हो रही हैं उन पर बहुत अधिक भरोसा करना ठीक नहीं है। जब तक समाज में पूंजी का वर्चस्व कायम है और ईमानदार व्यक्ति की कोई प्रतिष्ठा नहीं है तब तक वर्तमान भ्रष्ट व्यवस्था बदल जायेगी ऐसा सोचना एक खुशफहमी से अधिक कुछ नहीं है।

383 स्क्रीम नं. 2, लाजपत नगर, अलवर - 301001 (राजस्थान)

नशे की आदत ऐसी अंधेरी खंदक है, जिसमें छलांग लगाकर
व्यक्ति अपने अस्तित्व के लिए खतरा मोल ले लेता है।

• आचार्य तुलसी •



स्व. नरेन्द्र पारख

(जन्म : 30-08-1964 • मृत्यु : 23-11-2008)

आपकी मधुर स्मृतियाँ बनी रहे

लता पारख

श्री सुमेरमलजी पारख

9è26, Amman Koil Street

Near Blue Star Hotel

Waltax Road, Chennai-600003

Tel. : 044-25353207, M:09840128210

पाबंदी स्त्रियों की नियति नहीं

अश्विनी कुमार आलोक

गांव की स्त्री के जीवन की तुलना पुरुष के जीवन से कीजिए। गांव की स्त्री बच्ची है, तब तक माता-पिता उसे इसलिए घर से बाहर अकेले नहीं निकलने देंगे कि कहीं खो न जाये। किशोरावस्था में आयी, तो लड़कों के संग उठना-बैठना बंद। यदि स्कूल जाती है, तो स्कूल से सीधे घर आये। कॉलेज में पढ़ना उसके लिए जरूरी नहीं। यदि कॉलेज जाती है, तो नाक की सीध में सड़क पर चले और सीधे समय से घर पहुंचे। नहीं, तो माता-पिता सशंकित हो जाते हैं। पड़ोस में जाने की जरूरत नहीं, सहेलियों के संग घूमना-टहलना बुरा है। ज्यादा हंसेगी भी नहीं। घर में रहे, मां के कार्यों में हाथ बंटायें। खाना बनाये। भाइयों तथा घर के पुरुषों को खिला-पिला लें, तब बची-खुची चीजें लेकर बैठें, ऐसी अपेक्षा की जाती है।

इसी समय उधर मां की चिंता बढ़ रही है कि कब इसके हाथ पीले हों और इसे किसी खूटे से बांधकर निश्चिंत हुआ जाये। पिता तो इसी फिक्र में घर से दूर-दूर ही रहते हैं। विवाह हुआ तो लड़की अब बहू बनी। घर से दरवाजे तक का उसका संसार अब केवल घर तक ही सिमट कर रह गया। घर की चौखट पार करेगी, तो घर की मर्यादा डूबेगी। बहू तो किसी की नजर में न आये। माथे पर पल्लू हो, घूंघट की आड़ ही से जमीन निहारे। स्त्री का संसार इतना ही बड़ा, इससे अधिक नहीं। बिल्कुल पिंजड़े की चिड़िया स्त्री भी चुप रहेगी। उसे परंपरा का ख्याल है, मर्यादा तोड़ने की हिम्मत नहीं है उसमें। एक घर, एक आंगन और उसके चार-पांच लोग। इतना बड़ा ही संसार है ग्रामीण स्त्रियों का।

भारत में, शहरों की स्त्रियां अब इन बंदिशों की परवाह कुछ अधिक नहीं कर रहीं। पर स्त्री होने का बोध और खुद को कमजोर समझने की कमजोरी उसे कैसे छोड़े। पुरुष को देखिए। स्वच्छंद जीवन। बचपन में भी, जवानी में भी। कहीं से कोई रुकावट नहीं। पुरुष दिनभर घर से बाहर

रहें, रातों को देर से लौटें। दूसरी स्त्रियों से खुलकर मिलें, हँसें, बातें करें और संबंध बनायें। उन्हें किसी बात की परवाह नहीं।

परन्तु स्त्री कहां तक सहेगी। सहती है, अर्थात् घुटती रहती है। अपनी नियति से स्त्री को कोई शिकायत नहीं। परन्तु पुरुष की हरकतें उसके पारिवारिक जीवन में दरारें पैदा कर सकती हैं। मेरे मुहल्ले की एक स्त्री रात्रि में देर से घर आती हैं क्योंकि वह नाटक कंपनी चलाती है, उसे कला से लगाव है। उसका प्रोफेसर पति हालांकि उसे पहले से ही जानता है और दोनों ने प्रेम-विवाह किया था। किंतु दो बच्चे पैदा कर लेने के बाद उसे अपनी पत्नी के चरित्र पर शक होने लगता है। वह इतनी निर्दयतापूर्वक एक रात पत्नी के साथ पेश आता है कि बेचारी की रात आंखों में कटती है। जब उस रात पति देर से आता है, तो पत्नी इसका कारण पूछती है। वह बेरूखी से उसे डांट देता है। पति तलाक के लिए विवश करता है। परन्तु पत्नी कारण पूछती है, वह बेरूखी से उसे डांट देता है। पति और अपने परिवार की खुशी के लिए पत्नी नाटक-कंपनी बंद कर देती है और एक दिन घुट-घुटकर दम तोड़ देती है। यह सब बताने का अभिप्राय कि पुरुष जो स्त्री के साथ बरतता है, उसे वह अपना पुरुषत्व समझता है। वह समझता है कि स्त्री उसके हाथ की कठपुतली है।

परन्तु स्त्री भी कब तक बर्दाश्त करे, प्रतिकार करने लगती है। तब जाकर घर में कलह तथा रात-दिन मारपीट तक की नौबत आ जाती है। पुरुष दिन भर गायब रहे, रात में शराब के नशे में धुत होकर आये और पत्नी को गालियां दे, पीटे। फिर निढाल होकर सो जाये। ऐसी स्थिति में पत्नी असंतोष पति की ओर से बढ़ता है और यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि जरा-सा लिफ्ट के बाद उसका संबंध दूसरे पुरुष के

साथ हो सकता है।

प्रायः घर के सारे महत्वपूर्ण फैसले पुरुष ही लेते हैं। उन्हें पता है कि स्त्रियां कुछ सार्थक नहीं कहेंगी। किन्तु वैज्ञानिक तथ्य है कि कोमल हृदय वाली स्त्री आक्रोशजन्य बातों को पुरुषों की अपेक्षा अधिक संजीदगी और नम्रता से सोचती है। अच्छे मन से सोचकर फैसले करना कार्य के अच्छे परिणाम का द्योतक है। जीवन साथ होने की वजह से स्त्री का यह अधिकार बनता है कि वह पति के सभी फैसलों को जानें और अपनी राय फैसला सुनाने के पहले दे। पुरुष स्त्री की भावना की कद्र करेगा, तो जीवन सुखमय होगा।

सात फेरे लेने के समय की कसमें स्त्रियां निभाती हैं। पुरुष भूल जाते हैं। स्त्री को बिना कुछ बताये घर से कहीं चले जाना, स्त्री के लिए बेवजह संकट खड़ा करने जैसा है। पति-पत्नी का संबंध सबसे मधुर एवं बड़ा माना व कहा गया है। अतः इस माधुर्य संबंध में कड़वाहट न आने दें, क्योंकि उस कड़वाहट का असर संतान पर भी पड़ता है।

शहरों की स्त्रियों की स्वच्छंदता पर जहां कहीं भी आंच आती है, वह अपने रास्ते अलग बना लेती है। शहरी जीवन में स्त्री-पुरुष में वैवाहिक संबंध बहुत दिनों तक मधुर नहीं रह पाते। इसका एकमात्र कारण है आपसी अहं की टकराहट। पुरुषों को स्त्रियों की भावनाओं की कद्र करनी चाहिए। स्त्रियों से तभी उन्हें आदर और सम्मान मिलेगा। स्त्रियों को पुरुषों में प्रेम से समस्याओं के निदान का रस संचारित करना चाहिए।

स्त्रियां बंदिशों का पर्याय नहीं है। उसे भी जीने का अधिकार है। विवाह के बाद पति भी तो उसे समझे। अब 21वीं सदी में भी तो स्त्रियों को बंधनमुक्त करें। स्त्रियां बंधनमुक्त हुईं, तो परिवार जायेगा।

**प्रभा निकेतन, पत्रकार कॉलोनी
महनार, वैशाली-844506**

संप्रभुता पर सवाल

सुषमा जैन

भारतीय संस्कृति में श्रेष्ठता के प्रति अटूट आस्था और श्रद्धा को सर्वोपरि स्थान दिया गया है, क्योंकि यह वह संस्कृति है जो श्रद्धा के बल पर पाषाण में प्रतिमा और प्रतिमा में परमात्मा को प्रतिष्ठापित कर पापी को भी पवित्र बना देने की क्षमता रखती है। यही कारण है कि भारतीय संविधान में श्रेष्ठ पदों पर बैठे हुक्मरानों से अपनी सभ्यता और संस्कृति की महानता का प्रमाण देने की अपेक्षा की गई है। जो नेता राष्ट्र की संप्रभुता को समाप्त करने वाली घृणित राजनीति करते हैं, उनके लिए हमारा संविधान सख्त दण्डात्मक प्रावधान सुनिश्चित करता है। परन्तु जब सरकार के श्रेष्ठ पदों पर आसीन मंत्री, नौकरशाह और उनके कृपापात्र ही मिलकर जनता के धन की निर्लज्जतापूर्ण भारी लूट को अपना लोकतांत्रिक गुण समझ बैठे, सरकारी संरक्षण में डंके की चोट पर तमाम अनैतिक कार्यों को खुल्लमखुल्ला अंजाम देने लगे, जिस सरकार में राष्ट्रमंडल खेल, 2-जी स्पैक्ट्रम, आदर्श सोसायटी घोटाला और सर्वोच्च पदों पर भ्रष्ट व्यक्तियों की नियुक्तियों जैसे भ्रष्टाचार के मुद्दे रोजाना की कार्यशैली के प्रमुख अंग बन चुके हो, जो सरकार अलगाववादी राष्ट्र विरोधी शक्तियों को कुचलने से पूर्व वोट बैंक पर प्रभाव को माप रही हो, जहां नक्सलवाद आतंकवाद जैसे गंभीर मसलों पर भी फैसले नहीं समझीते हो रहे हो, जिस देश के प्रधानमंत्री सस्ते अनाज को मुफ्त में बांटने या अवैध नियुक्तियों के मुद्दों पर अदालतों को नीति के प्रश्नों पर दखल न देने की सलाह दें और फिर कोर्ट की चाबुक पड़ने पर अपनी भूल स्वीकार



करने को विवश हो, जो बार-बार उस गठबंधन धर्म की दुहाई देकर भ्रष्ट लोगों को भी अपने सिर पर बैठाये रखने की मजबूरी जतायें जिसका निर्माण ही राजनीतिक स्वार्थों के आधार पर होता है और जिसका इस्तेमाल ही केवल सत्ता प्राप्ति तथा सत्ता में बने रहने के लिए किया जाता है। वह सरकार स्वयं ही राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक बहुत बड़ा खतरा है।

यह पूरे देश की सभ्यता और संस्कृति को शर्मसार करने वाला वो नंगा सच है जिससे न केवल राष्ट्र जनमानस स्तब्ध है बल्कि हमारी सरकार की छवि विदेशों तक में कलंकित हो रही है। क्या यह सच नहीं कि इस सरकार के पिछले 7 वर्षों के कार्यकाल में एक बार भी ऐसा नहीं लगा कि वह भ्रष्ट तत्वों के खिलाफ कार्यवाही करने में सक्षम है? सच तो यह है कि सरकार भ्रष्ट तत्वों पर लगाम लगाना तो दूर बल्कि एक ऐसी भ्रष्ट व्यवस्था को पालने-पोसने में लगी है जिसमें भ्रष्टाचारी फल-फूलकर और अधिक निरंकुश होते जा रहे हैं। आखिर क्या कारण था जो 6 वर्ष पूर्व प्रधानमंत्री कार्यालय और केन्द्रीय

मंत्रिमंडल की निगाह के ठीक सामने राष्ट्रमंडल खेलों के आयोजन समिति के अध्यक्ष का पद तत्कालीन खेल मंत्री सुनील दत्त से छीनकर इंडियन ओलंपिक एसोसिएशन के अध्यक्ष और कांग्रेस सांसद सुरेश कलमाड़ी को सौंप दिया गया? क्या वजह थी जो राष्ट्रमंडल खेलों की तैयारियों के नाम पर हो रहे एक के बाद एक घोटालों की ओर से आंखें मूंद ली गई? आयोजन की तैयारियों में बेतहाशा देरी होती गई, निर्माण कार्य पूर्ण होने से पूर्व ही ढहते गये और विदेशों में हमारी भद्दा पिटती रही जब सरकार होश में आई तब काफी देर हो चुकी थी। अब सीना ठोककर “मैंने कुछ गलत नहीं किया” कहने वाले कलमाड़ी के साथ सी.बी.आई. का व्यवहार यही दर्शाता है कि उनकी गिरफ्तारी तो दूर बल्कि उनके खिलाफ किसी कार्यवाही से भी सुनिश्चित नहीं हुआ जा सकता।

2जी स्पैक्ट्रम घोटाले के रूप में प्रधानमंत्री की नाक के नीचे देश लगातार लूटता रहा, परन्तु प्रधानमंत्री कान में तेल डाले सोते रहे। इस घोटाले के सूत्रधार ए. राजा यदि सलाखों के पीछे गये तो उसका

पूरा-पूरा श्रेय भी केवल सुप्रीम कोर्ट को ही जाता है। क्या देश इस तथ्य को कभी भूल सकेगा कि किस प्रकार 2जी स्पैक्ट्रम घोटाले की जांच के लिए संयुक्त संसदीय समिति गठित करने की विपक्ष की मांग के प्रति हठधर्मिता बरती गई? जिससे संसद का पूरा पिछला सत्र बिना किसी काम के समाप्त हुआ। संसद का समय और भारी धन-हानि के पश्चात् ही आखिर प्रधानमंत्री ने बाद में बजट सत्र से पूर्व जेपीसी जांच का आदेश देने को ही क्यों न्यायोचित माना? जाहिर है कि विपक्ष से अधिक सत्तापक्ष इस सम्पूर्ण दुःखद घटनाक्रम का दोषी है। यदि पहले ही जेपीसी गठन की विपक्ष की मांग स्वीकार कर ली जाती तो न तो देश इतनी बड़ी धन और समय हानि को झेलता और न सरकार की इतनी फजीहत होती। परन्तु इस सरकार को तो जैसे ढीठ बने रहने की आदत सी पड़ गई है।

बहु-करोड़ी टैक्स डिफॉल्टर व काले धन के आरोपी माफिया हसन अली तथा सीवीसी प्रमुख की कुर्सी पर अवैध रूप से बैठा दिये गये पी.जे. थॉमस के मामलों में सुप्रीम कोर्ट की सख्त फटकार क्या इस तथ्य को प्रमाणित करने के लिए काफी नहीं है कि इस सरकार में सत्ता सुख का लोभ और लाभ उठाने वाली लाबियों के लोग धन और धमकी के बल पर सक्रिय हो रहे हैं। यदि सुप्रीम कोर्ट थॉमस की नियुक्ति को रद्द नहीं करता तो क्या पामोलिन आयात घोटाले का आरोपी-अनुपयुक्त व्यक्ति केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त जैसे महत्वपूर्ण पद पर नहीं बैठा रहता, जहां से वह देशभर के अधिकारियों के आचरण की जांच के आदेश तक देने में सक्षम बने रहता। सभी जानते हैं कि थॉमस की नियुक्ति चयन समिति में उपस्थित विपक्ष की नेता सुषमा स्वराज की लिखित अस्वीकृति के बावजूद की गयी। बाद में प्रधानमंत्री ने स्वयं माना कि थॉमस के प्रति लम्बित मामले की जानकारी उन्हें विपक्ष की नेता द्वारा दी गई थी। अब

प्रधानमंत्री द्वारा केवल त्रुटि स्वीकार कर मामले को रफा-दफा करने की ही कौशिशें हो रही हैं। देश जानना चाहेगा कि थॉमस की दागदार छवि से अवगत होने के बावजूद भी वे क्या कारण थे जिनके आधार पर थॉमस को सीवीसी बनाये रखा गया। मामले के कोर्ट में जाने से पूर्व भी मूल सुधार हो सकता था परन्तु सरकार अपनी जिद पर अड़ी रही। और तो और थॉमस ने यह तक कहा कि जब दागी व्यक्ति सांसद-विधायक बन सकते हैं तो वह क्यों नहीं इस पद पर बने रह सकते। अब प्रधानमंत्रीजी इस मामले को तत्कालीन राज्य मंत्री पृथ्वीराज चव्हाण पर तथा चव्हाण इसे केरल सरकार पर थोपकर लीपापोती कर रहे हैं। जो सर्वथा निन्दनीय है।

प्रधानमंत्री द्वारा इस मामले में गलती स्वीकार करने से ही केवल काम नहीं चलने वाला। देश को बताना होगा भ्रष्टाचार निरोधक इस पद को क्या पारदर्शी नहीं होना चाहिए। पारदर्शी भी वह जिसे उच्चाधिकार प्राप्त चयन समिति स्वीकृत करे, केवल वह नहीं जिसे सरकार पारदर्शी समझे। इतने समय थॉमस को कुर्सी पर बैठाये रखने में जो धन हानि हुई उसकी भरपाई कौन करेगा? प्रधानमंत्री के लिए यह बहुत आवश्यक है कि वे अपनी छवि बनाये रखने के लिए जनता में उभरते प्रश्नों का तत्काल समाधान करे, परन्तु

केन्द्रीय सत्ता को शर्मसार करने वाले कदम उठाकर प्रधानमंत्री अपनी छवि ही धूमिल कर रहे हैं।

हसन अली का 60,000 करोड़ से भी अधिक कालाधन विदेशों में जमा है, वह लगातार जिम और घुड़दौड़ का आनन्द लेता रहा, सरकार तब तक उसकी शान में पलक पावड़े बिछाती रही जब तक कोर्ट का चाबुक नहीं पड़ा। क्या यह सरकार की सरासर लापरवाही नहीं है कि केवल गिरफ्तार कर राहत की सांस ले रहे प्रवर्तन निदेशालय को सुप्रीम कोर्ट ने फिर लताड़ लगाकर पूछा है कि हसन अली के खिलाफ अब तक आतंकवाद और आई.पी.सी. के अन्य आरोप क्यों नहीं लगाए गये, जबकि फेमा और मनी लांडरिंग एक्ट लागू कर संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता। यह पैसा हथियारों के सौदागरों तथा ड्रग लार्ड्स का हो सकता है। वैसे भी उसके पास चार पासपोर्ट मिले हैं उनका इस्तेमाल हसन अली निश्चित ही अवैधानिक गतिविधियों को अंजाम देने के लिए ही करता होगा। कोर्ट की फटकार के बाद प्रवर्तन निदेशालय कितनी तत्परता दिखाता है यह तो भविष्य ही बताएगा परन्तु इतना तय है कि बिना दृढ़ इच्छा शक्ति के संप्रभुता की सुरक्षा होनी असंभव है।

**वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार
न्यू कृष्णानगर, जैन बाग, वीरनगर,
सहारनपुर - 247001 (उ.प्र.)**

पदलोलुपता एक बीमारी है, जो व्यक्ति की नैतिक और आध्यात्मिक
आस्थाओं को तोड़कर उसे सन्मार्ग से भटका देती है।

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-कोलकाता-700019

● दूरभाष : 22809695

लेखक/कलाकारों का गृहस्थ जीवन

डॉ. अनामिका प्रकाश

मनुष्य का जीवन कभी उद्देश्यविहीन नहीं रहा है। साधारणतया आम आदमी का जीवन, बीसवीं सदी के अंग्रेजी साहित्यकार टी.एस. इलियट के शब्दों में “बर्थ, कपलिंग, डेथ” इन तीन चरणों में बंटा है। लोग जन्म लेते हैं, धन कमाने में लिप्त हो जाते हैं और फिर इस दुनियां को अलविदा कह जाते हैं। अधिकांश लोग इसी तरह का जीवन पसंद करते हैं। परंतु कलात्मक लोगों की जिन्दगी का मकसद लीक से कुछ हट कर होता है। धन कमाने में उनकी रुचि कुछ कम ही पायी जाती है। लक्ष्मी के पीछे भागने में अपनी जिंदगी खर्च न करके वे अपनी कला को ही अपनी सारी जिंदगी समर्पित कर देते हैं। अपनी कला में पूर्णता प्राप्त करने में ही उनका अधिकांश समय बीत जाता है। भले ही इसके लिए उन्हें गृहस्थ कलह के रूप में भारी कीमत चुकानी पड़ती है।

अनगिनत कलाकारों, लेखकों और कवियों की जीवनियों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि अपने साहित्यिक और कलात्मक क्षेत्रों में ही वे प्रसिद्धि की बुलन्दियों पर रहे हों, परंतु अपने गृहस्थ जीवन में बुरी तरह असफल साबित हुए। उनका गृहस्थ जीवन कलह और अशान्ति का अखाड़ा रहा है। प्रसिद्ध ग्रीक दार्शनिक सुकरात दर्शनशास्त्र का ऐसा नगीना है जिसकी चमक आज तक ज्यों की त्यों बरकरार है। उनकी विलक्षण तर्कशक्ति और प्रसिद्धि से घबराकर तत्कालीन सम्राट ने उन्हें जेल में डाल दिया और जहर पीने

घरेलू और कलात्मक कार्यों में एक आदर्श सामंजस्य स्थापित कर लिया जाए तो जीवन में मधुरता लाना कोई कठिन काम नहीं। यदि लेखक या कलाकार अपने गृहस्थ जीवन के प्रति उतना ही समर्पित है जितना कि अपनी कला के प्रति तो तनाव और कटुता को बहुत हद तक कम किया जा सकता है।



के लिए मजबूर कर दिया, लेकिन इसके विपरीत सुकरात का गृहस्थ जीवन बड़ा ही नारकीय और दारुण था। विभिन्न स्त्रोतों से ज्ञात होता है कि सुकरात की पत्नी बड़े ही झगड़ालू और चिड़चिड़े स्वभाव की थी। उसके इस विस्फोटक स्वभाव के जिम्मेवार स्वयं सुकरात थे।

दर्शन और तर्क में उन्हें कभी इतनी मोहलत ही नहीं दी कि वे अपने घर संसार को संवारने की सोच सकें। यही हाल उर्दू शायरी के कालिदास “मिर्जा गालिब” का रहा। उनके अलमस्त और कलन्दरी स्वभाव ने उनके परिवार को हमेशा परेशानियां झेलने के लिए मजबूर किया। उर्दू शायरी में आफताब की हैसियत रखने वाले आधुनिक शायर रघुपति सहाय फिराक गोरखपुरी का गृहस्थ जीवन भी कांटों की सेज साबित हुआ। रूपसी मर्लिन मुनरो ने अपनी कला और बेमिशाल हुस्न के जादू के बल पर संपूर्ण अमेरिकावासियों के दिलों पर राज किया, परंतु व्यक्तिगत जीवन में उन्होंने अपने आपको हमेशा अपूर्ण महसूस किया और एक दिन इस शदीद एहसास ने उन्हें नींद की गोलियां खाने पर मजबूर

कर दिया। प्रसिद्ध सिने-कलाकार और निर्देशक गुरुदत्त और उनकी पत्नी मशहूर गायिका गीता राय की कहानी भी दर्द के सिवाए कुछ भी नहीं।

इतनी महान विभूतियों के व्यक्तिगत जीवन की त्रासदी देखकर जहां एक ओर दिल में टीस पैदा होती है वहीं मस्तिष्क

यह सोचने के लिए मजबूर हो जाता है कि आखिर लेखक और कलाकारों के गृहस्थ जीवन में असफल होने के क्या कारण हैं? इस दिलचस्प पहलू का गौर से अध्ययन करने पर कई कारण उजागर होते हैं।

अधिकांश मनुष्य सुखी जीवन के लिए धन को अपरिहार्य मानते हैं, उनके दर्शन के अनुसार जितना अधिक धन होगा उतना ही अधिक सुख भोग किया जा सकेगा। व्यवहारिक दृष्टि से सही भी है लेकिन कलात्मक प्रवृत्ति के व्यक्ति का सुखी जीवन का दर्शन कुछ और ही होता है। उसे अपने आदर्श प्यारे होते हैं। अब केवल आदर्शों के सहारे तो जीवन नैया चलती नहीं। कलाकारों और लेखकों की आर्थिक दशा ज्यादा अच्छी नहीं पायी जाती है। आर्थिक विपन्नता के कारण वे परिवार के सदस्यों की सभी इच्छाओं और तमन्नाओं को पूरा नहीं कर पाते इससे गृहस्थ कलह का बीज पड़ता है।

हर लड़की की कुंवारी आंखों में एक नन्हा मासूम सा सपना होता है कि उसका भावी पति उसको बेहद चाहने वाला हो और उसकी हर इच्छा पलक झपकते ही पूरी कर दे। परंतु जब उसका विवाह किसी कलाकार या लेखक से हो जाता है तो उसका बुना हुआ खाब तिनके-तिनके होकर बिखर जाता है। कलात्मक प्रवृत्ति के लोगों में घरेलू मामलों में प्रतिरुचि कुछ कम ही पायी जाती है। सोच और कल्पना ही उनकी दौलत होती है। अल्फाज के रंगीन रेशमी तिनकों से वे अपने खाबों का घरोँदा बुनते हैं। दीवानगी के इस आलम में उन्हें अपने पारिवारिक जीवन का कुछ होश ही नहीं रहता। यहीं से तनाव और संघर्ष का सूत्रपात होता है। पत्नी के साथ रोजमर्रा की मामूली नोंक-झोंक कालान्तर में इतना विस्फोटक रुख अख्तिरार कर लेती है कि बात संबंध विच्छेद तक आ जाती है। जहरीले और तनाव भरे माहौल

का धुआं और परिवार के अन्य सदस्यों का भी दम घोंटने लगता है।

कल्पना की खूबसूरत और रंग भरी दुनिया में रहते-रहते कलाकार या लेखक अपने आस-पास की दुनिया से बिल्कुल अलग-थलग पड़ जाता है। कल्पना और ख्याल के महीन रेशमी तिनकों से वह जिस खाबी और दुःखों और बुराइयों से पाक दुनिया का ताना-बाना बुनता है, हकीकत की एक हल्की सी आंधी से वह तहस-नहस हो जाती है। सांसारिक मामलों में वह बुरी तरह असफल साबित होता है। अव्यवहारिकता उसका मुकद्दर बन जाती है।

एक अंग्रेजी कहावत है कि गुमनामी के सौ सालों से प्रसिद्धि का एक दिन ही श्रेष्ठ है। जी हां! यह सही भी है, लेकिन अक्सर यह प्रसिद्धि ही अभिशाप साबित होती है। लेखक और कलाकार के जीवन को जलाकर राख कर देती है। प्रसिद्धि व्यक्ति का दायरा बड़ा करती है। दोस्तों और पहचानने वालों की संख्या में बढ़ोत्तरी होती है, और कुछ लोगों से संबंध इतने मधुर और आत्मीय हो जाते हैं कि संशय और शक को बढ़ावा मिलता है। इन लोगों के चाहे-अनचाहे प्रवेश से जीवन में एक बवंडर-सा आ जाता है। तानों और लांछनों की बौछार होने लगती है, और गृहस्थ जीवन टूटन की कगार पर आ खड़ा होता है।

लेकिन यह तो हुआ सिक्के का एक पहलू। दूसरे पहलू का भी यदि अध्ययन किया जाए तो परिणाम बड़े ही दिलचस्प निकलते हैं। ऐसे लेखकों, कलाकारों और शायरों की संख्या भी कम नहीं जिनका गृहस्थ जीवन भी उतना ही शानदार रहा जितना कलात्मक जीवन, इस श्रृंखला में भी बड़ी-बड़ी हस्तियां शामिल हैं, जैसे सरोजनी नायडू, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, पं. जवाहर लाल नेहरू, डी.एच. लॉरेंस, टी.एस. इलियट, टॉमस हार्डी, मनु भंडारी और न जाने कितने ऐसे असंख्य

नाम हैं जिन्हें उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत किया जा सकता है, इसलिए यह कहना कि लेखक या कलाकारों का गृहस्थ जीवन अभिशप्त रहता है। पूर्ण रूप से उचित नहीं, सिक्के के दो पहलू हैं।

यदि घरेलू और कलात्मक कार्यों में एक आदर्श सामंजस्य स्थापित कर लिया जाए तो जीवन में मधुरता लाना कोई कठिन काम नहीं। यदि लेखक या कलाकार अपने गृहस्थ जीवन के प्रति उतना ही समर्पित है जितना कि अपनी कला के प्रति तो तनाव और कटुता को बहुत हद तक कम किया जा सकता है। परंतु इसके लिए परिवार के सदस्यों की कुछ जिम्मेवारी भी है, कलाकार या लेखक को समझना जरूरी है। उसे हतोत्साहित करने के बजाय प्रोत्साहित किया जाए। उसके दोस्तों को शक की दृष्टि से न देखा जाए। इस प्रकार जब उसे परिवार के सदस्यों का भरपूर सहयोग और प्यार मिलेगा तो घरेलू मामलों में उसकी रुचि स्वतः बढ़ेगी और अभिशप्त जीवन गुजारने के बजाय जिंदगी अच्छी तरह गुजर जायेगी।

**जी-9, सूर्यपुरम, नन्दनपुरा
झांसी-284003 (उ.प्र.)**

षटभुजी

करे सवारी ऊंट की
जैकित पहने जूट की
रैली लूट खसूट की
जाहिल काहिल साथ
देश की आजादी लगी
बेकारों के हाथ।

दोहा

सूझ-बूझ ईमान को लिया
भूख ने फांस।
सुध-बुध खोकर खा रही
मछली अपना मांस।।

■ भगवानदास ऐजाज
टी-451, बलजीत नगर, नई दिल्ली-110008

सर्वोदय सम्मेलन में अणुव्रत की सहभागिता

मुनि राकेशकुमार

ई. सन् 1959 में 27 फरवरी से तीन दिनों तक अजमेर में सर्वोदय का वार्षिक अधिवेशन होने वाला था। आचार्य विनोबा भावे पदयात्रा करते हुए अधिवेशन में भाग लेने वाले थे। हजारों कार्यकर्ता भी कार्यक्रम में उपस्थित रहने वाले थे। उस समय आचार्य श्री तुलसी कलकत्ता पधारने के लक्ष्य से बंगाल की यात्रा कर रहे थे। देश के वरिष्ठ नेता श्री जयप्रकाश नारायण ने आचार्यश्री से सर्वोदय सम्मेलन में अपना प्रतिनिधि भेजने का निवेदन किया। जयप्रकाश बाबू के मन में गुरुदेव के प्रति बहुत श्रद्धा का भाव था। अणुव्रत के कार्यों में भी उनकी बहुत रुचि थी। जयप्रकाश बाबू के निवेदन पर सर्वोदय सम्मेलन में भाग लेने के लिए गुरुदेव ने मुझे आदेश दिया। उस समय हम मेवाड़ के ऐतिहासिक स्थल चित्तौड़गढ़ में प्रवास कर रहे थे। अणुव्रत महारथी श्री देवेन्द्र भाई कर्णावट के द्वारा हमें आचार्यप्रवर के निर्देश की सूचना मिली। इस सूचना के दो-तीन दिनों बाद हमने वहां से भीलवाड़ा, नसीराबाद होते हुए अजमेर के लिये विहार कर दिया। सम्मेलन के कुछ दिन पहले हम अजमेर पहुंच गये। इसलिए पहले लोढ़ा धर्मशाला में ठहरे। वहां श्री रामस्वरूपजी गर्ग के साथ सर्वोदय के कार्यकर्ता मिलने के लिए आए। उन्होंने 24 फरवरी को सम्मेलन स्थल, हटुंडी महिला आश्रम में हमें आने के लिए निवेदन किया।

24 फरवरी को हम महिला आश्रम पहुंच गये। उसी दिन वहां शांति सेना के संबंध में एक महत्त्वपूर्ण संगोष्ठी थी। इस संगोष्ठी में जयप्रकाश नारायण, धीरेन्द्र भाई मजूमदार, अप्पा साहब पटवर्धन, श्री सिद्धराज ढड्डा, हरिभाऊ उपाध्याय व श्री शंकरराव देव आदि सर्वोदय के वरिष्ठ विचारक व नेता उपस्थित थे। देश में

बढ़ती हिंसा और भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति को रोकने के लिए आचार्य विनोबा भावे की प्रेरणा से शांति सेना के संगठन का निर्माण किया गया। देश के सभी बड़े नगरों में इसकी शाखायें विकसित करने की कल्पना थी। शांति सेना में युवक और विद्यार्थी अधिक से अधिक जुड़ें, ऐसा प्रयास करने का चिंतन हुआ। उस गोष्ठी में मुझे भी आमंत्रित किया। इस अवसर पर विचार प्रगट करते हुए मैंने कहा शांति सेना का जो स्वरूप मैंने पढ़ा और सुना है, वह बहुत उपयोगी है। हिंसा की समस्या का प्रतिकार हिंसा से नहीं होता। हिंसा से प्रतिहिंसा का जन्म होता है। अहिंसा की शक्ति को तेजस्वी बनाने के लिए शांति सेना की कल्पना उचित और आवश्यक है।

मैंने आगे कहा **अणुव्रत के माध्यम से प्रतिवर्ष सैकड़ों शिक्षण संस्थानों में अहिंसा, शांति और संयम का प्रशिक्षण दिया जाता है। जिसके परिणाम बहुत संतोषजनक रहे हैं। इसके साथ विद्यालयों और महाविद्यालयों में अणुव्रत विद्यार्थी परिषद् के संगठन का निर्माण हुआ है। विद्यार्थियों का यह संगठन छात्रवर्ग में हिंसा और नशे की प्रवृत्ति को रोकने का सफल और सुखद प्रयास कर रहा है। एक-दो कार्यकर्ताओं ने अणुव्रत विद्यार्थी परिषद् के संगठन को बहुत सुंदर बताया तथा सर्वोदय के क्षेत्र में भी अणुव्रत विद्यार्थी परिषद् जैसे संगठन का निर्माण करने पर बल दिया।** उन्होंने कहा इससे शांति सेना के काम को बहुत बल मिलेगा।

26 फरवरी को आचार्य विनोबा भावे पदयात्रा करते हुए वहां पहुंच गये। उनके साथ कार्यकर्ताओं का विशाल समुदाय था। महिला आश्रम में उनका और हमारा ठहरने का स्थान बहुत निकट था। प्रथम

दिन बाहर से आए हुए कार्यकर्ताओं से विनोबाजी मिलने में व्यस्त थे फिर भी जयप्रकाश बाबू ने हमारी भेंट के लिए समय निश्चित किया। हमारे पास उन्होंने किसी कार्यकर्ता को भेजकर समय की सूचना दी। हम रामस्वरूपजी गर्ग के साथ समय पर विनोबाजी के कमरे में पहुंचे। उस समय जयप्रकाश बाबू उनके पास बैठे थे। हमें देखते ही विनोबाजी ने प्रसन्नता से कहा आईए....आईए.....। हमारे बैठते ही उन्होंने कहा आचार्य तुलसीजी ने आपको यहां भेजकर बहुत अच्छा कार्य किया। आपके आने से मुझे बहुत खुशी हुई है। मैंने विनोबाजी को अणुव्रत की वर्तमान गतिविधियों की जानकारी दी। गुरुदेव की उत्तर प्रदेश, बिहार और बंगाल यात्रा में शिक्षकों, विद्यार्थियों और व्यापारियों में हुए कार्यों की भी चर्चा की। विनोबाजी ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा आप लोग हृदय परिवर्तन के द्वारा समाज में अहिंसक क्रांति की भूमिका का निर्माण कर रहे हैं। यह बहुत शुभ कार्य है। जयप्रकाश बाबू ने वार्तालाप को मोड़ देते हुए कहा सर्वोदय और अणुव्रत दोनों कार्यक्रम एक दूसरे के पूरक हो सकते हैं। दोनों के कार्यकर्ताओं को समय-समय पर अनुभवों का आदान-प्रदान करना चाहिए। मैंने आचार्यश्री तुलसी से अहिंसक-शक्तियों के समन्वय और संगठन पर चर्चा की थी। उसके आधार पर उन्होंने अपने शिष्यों को सर्वोदय सम्मेलन में आने का आदेश दिया।

विनोबाजी ने जयप्रकाश बाबू से कहा मैं जगह-जगह से आये हुए कार्यकर्ताओं से मिलने में व्यस्त हूं। मुनिजी के यहां आने का पूरा उपयोग हो, आप इसका ध्यान दें। आचार्य तुलसीजी ने अपने शिष्य समुदाय को अणुव्रत के कार्य

में संलग्न कर देश का महान हित किया है। मेरे से श्वेताम्बर, दिगम्बर अनेक जैन संत मिले हैं पर मैं आचार्य तुलसीजी के विचारों और कार्यक्रमों से बहुत प्रभावित हूँ। उनसे दिल्ली में राजघाट पर मिलकर मुझे बहुत हर्ष और संतोष का अनुभव हुआ। विनोबाजी ने आगे कहा जैन समाज में तीर्थों और स्थानों को लेकर कई झगड़े चल रहे हैं। कुछ लोग इस संबंध में मेरे से भी विचार-विमर्श करते हैं। मैं उन्हें यही कहता हूँ कि अभी जैन समाज में आचार्य तुलसी बहुत विवेकशील और दूरदर्शी आचार्य हैं। उनके मार्गदर्शन और परामर्श से आपसी विवादों का समाधान कर लेना चाहिए। मैंने कहा आपसे आचार्य तुलसीजी का एक बार ही मिलना हुआ है फिर भी आप दोनों का मानस भावनात्मक रूप से गहरा जुड़ गया है। आप दोनों ही पदयात्रा कर गांव-गांव में अहिंसा और शांति की अलख जगा रहे हैं।

उस समय बाहर खड़े कार्यकर्ताओं के विशाल समूह को देखकर जयप्रकाश बाबू ने विनोबाजी से कहा मुनिजी आपसे बाद में मिलेंगे। अभी अन्य कार्यकर्ता आपसे मिलना चाहते हैं। उस समय हम वहां से उठ गये। जयप्रकाश बाबू थोड़ी दूर हमारे साथ आये, और गर्गजी से कहा मुनिजी को कोई असुविधा नहीं हो यह आप ध्यान रखें। मैं रात्रि में कुछ कार्यकर्ताओं को साथ लेकर मुनिजी से मिलूंगा और आगे का कार्यक्रम तय करेंगे।

जयप्रकाश बाबू का नाम स्वतंत्र भारत के प्रमुख नेताओं में प्रथम पंक्ति में रहा है। जब मैं चौथी-पांचवीं कक्षा में पढ़ता था, तब से पंडित नेहरू के साथ, जयप्रकाशजी का नाम सुनता रहा हूँ। पर उन्होंने गुरुदेव श्री तुलसी को जिस भावना से अपना प्रतिनिधि भेजने का निवेदन किया, उसी भावना से उन्होंने पूरा दायित्व भी निभाया। अजमेर के उस प्रवास में जो उनकी शालीनता और नम्रता भरा व्यवहार मैंने देखा उसे कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता। रात्रि में तीन-चार कार्यकर्ताओं को लेकर मेरे पास आये। उन कार्यकर्ताओं

को उन्होंने गुरुदेव तुलसी का बड़ी श्रद्धा से परिचय दिया। मैंने उनको अणुव्रत के संबंध में विस्तार से अवगति दी तथा उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया। इस प्रसंग में देश में काम कर रहे सभी अहिंसक संगठनों में एकता और निकटता कैसे बढ़े इस पर विचार-विमर्श हुआ।

जयप्रकाश बाबू ने कहा दिनांक 28 फरवरी, को दोपहर में सर्वोदय के विशिष्ट कार्यकर्ताओं की एक संगोष्ठी है। उसमें गत वर्ष के कार्यो की समीक्षा के साथ आगामी वर्ष के लिए कार्यक्रम का चिंतन करेंगे। उस गोष्ठी में आपको भी आना है। उसमें अणुव्रत की गतिविधि की जानकारी देते हुए अहिंसक संगठनों में आपस में समन्वय और सामंजस्य कैसे हो इस पर विचार रखना है।

28 फरवरी, को प्रमुख कार्यकर्ताओं की गोष्ठी में उपस्थित रहने के लिए जयप्रकाश बाबू ने एक कार्यकर्ता के साथ मेरे पास लिखित सूचना भेजी। गोष्ठी में हमारे लिए बैठने की अलग से व्यवस्था थी। उस समय सर्वोदय पात्र की योजना पर चिंतन हो रहा था। इस योजना के लिए उस समय वातावरण में अच्छा उत्साह प्रतीत हो रहा था। पर इन वर्षों में सर्वोदय पात्र के संबंध में कोई चर्चा सुनाई नहीं दे रही है। गोष्ठी में हमारे पहुंचने के थोड़ी देर बाद इस चर्चा को हाथ के इशारे से रोकते हुए जयप्रकाश बाबू ने अणुव्रत का परिचय देना शुरू कर दिया। उन्होंने कहा आचार्य विनोबा भावे की तरह आचार्य तुलसी भी पदयात्रा कर रहे हैं। उनका मुख्य लक्ष्य समाज में एकता और नैतिकता को मजबूत बनाना है। उन्होंने स्वतंत्रता के बाद अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया तथा अपने सैकड़ों शिष्यों और शिष्याओं को इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए संलग्न किया है। इस कार्यक्रम में हर जाति व संप्रदाय के लोग जुड़े हैं और इसे आगे बढ़ाने में सहयोग दे रहे हैं। जयप्रकाश बाबू ने अपना संस्मरण सुनाते हुए कहा जब मैं आचार्यजी से पहली बार जयपुर में मिला तब मेरे सर पर सफेद टोपी थी। कुछ समय पश्चात्

दिल्ली में मिला तो मेरे सर पर लाल टोपी थी। आचार्यजी ने विनोद में पूछा-आपने टोपी का रंग कैसे बदल दिया? मैंने भी विनोद में उत्तर दिया-सफेद टोपी बहुत बदनाम हो गयी है।

आचार्य तुलसी ने कहा बदनामी के काम टोपी नहीं आदमी करता है, उसका मस्तिष्क करता है। जब तक उसका परिवर्तन नहीं होगा तब तक बदनामी तो होती रहेगी। मैं आचार्य श्री के इस कथन से बहुत प्रभावित हुआ। व्यक्ति और उसके मस्तिष्क के परिवर्तन की दृष्टि से अणुव्रत जो कार्य कर रहा है वह सर्वोदय का ही एक अंग है। हमें इस कार्य को आगे बढ़ाने में सहयोग देना चाहिए। जयप्रकाश बाबू के वक्तव्य के बाद मुझे बोलने के लिए कहा। मैंने अपने भाषण में कहा आज देश में चरित्र के विकास की सबसे अधिक आवश्यकता है। उसके बिना कोई भी योजना सफल नहीं हो सकती। आजादी के आंदोलन में गांधीजी के साथ चरित्र संपन्न लोगों की विशाल फौज थी। तभी लक्ष्य में सफलता मिली पर आज देश में चरित्र का गहरा संकट दिखाई दे रहा है। समय-समय पर दूसरे अभावों की चर्चा तो होती है पर चरित्र के अभाव की ओर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी एक क्रांतिकारी धर्माचार्य हैं। उन्होंने अणुव्रत के द्वारा सत्य, अहिंसा और संयम आदि धर्म के मौलिक सिद्धान्तों को जीवन के साथ जोड़ा है। उन्होंने धर्म को जातिवाद, संप्रदायवाद और अंधविश्वासों के आवरण से मुक्त किया है। अणुव्रत का कार्यक्रम सर्वधर्म समन्वय का प्रतीक है। इसलिए हर धर्म और मजहब के लोग इसके साथ श्रद्धा-भावना से जुड़े हैं। गुरुदेव श्री तुलसी ने नैतिक संदेश को आगे बढ़ाने के लिए लगभग 60 हजार किलोमीटर से अधिक पदयात्रा की है। मेरे भाषण के बाद एक-दो प्रश्न पूछे गये।

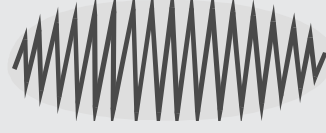
प्रश्न : इस नैतिक जागरण के आंदोलन के लिए अणुव्रत जैसे अपरिचित शब्द का प्रयोग क्यों किया गया? इसका क्या अर्थ है?

उत्तर : प्राचीन धर्म शास्त्रों में अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये पांच व्रत बतलाये गये हैं। जो संन्यासी होते हैं उनके लिए महाव्रत का विधान है। गृहस्थ नाना प्रकार के अपवादों के साथ अणुव्रत की आचार संहिता को ग्रहण करता है। उन्होंने अणुव्रत गीत की एक पंक्ति में कहा है 'अपने से अपना अनुशासन, अणुव्रत की परिभाषा'।

प्रश्न : जो व्रती और संन्यासी होते हैं उनकी मनोवृत्ति व्यक्तिवादी होती है। वे समाज के दायित्व से दूर रहना चाहते हैं। अणुव्रती के संबंध में आपका क्या विचार है?

उत्तर : अणुव्रती की जीवन शैली नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित होती है। अणुव्रत दर्शन में व्यक्ति और समष्टि का सुंदर समन्वय हुआ है। इसलिए अणुव्रती अपनी साधना के साथ पारिवारिक और सामाजिक दायित्व के प्रति भी जागरूक रहता है।

आचार्य विनोबा भावे सर्वोदय सम्मेलन के समय बहुत व्यस्त थे फिर भी उनसे तीन बार विविध विषयों पर वार्तालाप हुआ। जैन दर्शन और साधना के प्रति उनकी जिज्ञासा भाव देखकर मुझे विस्मय का अनुभव हुआ। चर्चा का प्रारंभ अणुव्रत और सर्वोदय के कार्यक्रमों से होता था। पर विनोबाजी की रुचि के कारण दार्शनिक और आध्यात्मिक विषयों से चर्चा का समापन होता था। विनोबाजी ने प्रस्थान के पूर्व दिन कहा यदि कई दिन आप पदयात्रा में साथ रहें तो विस्तार से विचार-विमर्श हो सकता है। मैंने कहा जैन साधुओं के लिए इर्यासमिति की साधना के अन्तर्गत चलते हुए वार्तालाप करने का निषेध है। विनोबाजी ने प्रसन्नता से कहा यह नियम बहुत अच्छा है। चलते समय बोलने से आयु का क्षय होता है। उन्होंने गुरुदेव का स्मरण करते हुए कहा आचार्य तुलसी ने संत शक्ति का समाज के निर्माण हेतु सुंदर उपयोग किया है। सभी धर्मगुरुओं को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए।



संदीप फाफरिया 'सृजन' की चार गजलें

(1)

बरसों बाद उजाला देखा,
भूख-रोटी-निवाला देखा।

केकैयी से जब मिली मंथरा,
राम का देश निकाला देखा।

मिलेगी उनको मंजिल कैसे,
जिसने पाँव का छाला देखा।

झूठ शहर में चल निकला है,
सच के मुँह पर ताला देखा।

सत्ता का जब हुआ स्वयंवर,
तन गौरा मन काला देखा।

(2)

जहर उगलते लफ़्ज़ मत बोलिए,
फिज़ाओं में जहर मत घोलिए।

सियासती दाँव-पेंच है सारे,
इन्हें जज़्बातों से मत तोलिए।

किस्से अदावत ओ' रंजिश के हों,
ऐसे रिसालों को मत खोलिए।

बँद मुट्ठियाँ, खुली रह जाएँगी,
दौलत पर नाग बन मत डोलिए।

दो गज कपड़े ओ' रोटी के लिए,
ईमान कदमों तले मत कुचलिए।

(3)

हर ख्वाईश पूरी करना चाहता हूँ,
समन्दर अंजुरी में भरना चाहता हूँ।

तहज़ीब सीखी है जो बुजुर्गों से मैंने,
उसी में जीना ओ' मरना चाहता हूँ।

बाँध कर मत रखो मुझे दायरों में,
मैं दरिया की तरह बहना चाहता हूँ।

अव्याशी नहीं करना आती लफ़्ज़ों की,
सच्चाई को बयाँ करना चाहता हूँ।

पता नहीं फिर महफिलों में रहूँ न रहूँ।
इस वास्ते अच्छा कहना चाहता हूँ।

(4)

सिंहासनों की सरपरस्ती देखिए,
नुमाइंदों की जबरदस्ती देखिए।

लोक शासन ने दिया है ये उपहार,
रोटी महंगी ओ' जान सस्ती देखिए।

चुनाव हो जाने के बाद दोस्तों,
नेताजी को तरसती बस्ती देखिए।

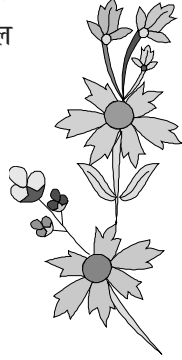
बाढ़ आएगी ओ' चली जाएगी,
बाद रोती बिलखती बस्ती देखिए।

आसुओं को भी मुस्कान में बदल दें,
मेरे मालिक की वो हस्ती देखिए।

प्रधान संपादक : 'शब्द प्रवाह'
ए-99, व्ही.डी. मार्केट, उज्जैन (म.प्र.)

पेड़ों की सभा

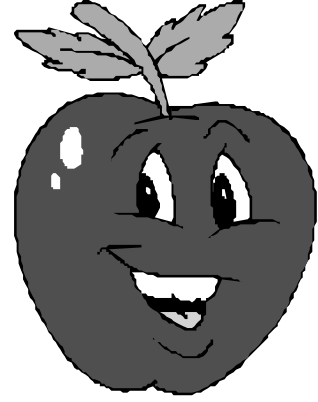
पेड़ों ने की सभा एक दिन
कुछ मिलकर आपस में बोले
कटते-कटते खत्म हो रहे हम
अब मिलकर तो कुछ सोचें।
ताड़ वृक्ष ने लिया ढिंढोरा
पीट-पीट कर सबको बोला
भाई आज मिटिंग है अपनी
नहीं जुटे तो कटिंग है अपनी।
ताल पोखरे पर्वत तक पर,
पहुंची खबर चले सब सजकर
चिक्कू जामुन आम नारियल
डुंगार-डुंगर कर आया कटहल
बरगद पीपल पाकड़ गूलर
बेल बकाइन अमरूद टीकर
छोटे-बड़े सभी थे आये
बेर-केर मतभेद मिटाये।
पीपल ने आवाज लगाई
सबने मिल उसको दोहराई-
अब तो करो कटाई बन्द
मानव क्यों मन बन गए मतिमन्द।
रहे काटते यदि तुम हमको
नहीं मिलेगी हवा भी तुमको
हमें काट पछताओगे
सुखी नहीं रह पाओगे
एक बार तो सोचो मानव
अक्लमंद तुम बने क्यों दानव।
बहरा मानव नहीं सुना जब
देवलोक सब पेड़ गए तब
मदद हेतु नारद भी आये
शिव ब्रह्मा विष्णु को बुलाये
सबने मिल कर किया विचार
कैसे बचे वृक्ष संसार।
पुनः सभी धरती पर आये
शिव मानव को पास बुलाये



मानव लिए कुल्हाड़ी हाथ
माथ नवाकर आया पास।

महादेव उसको समझाये
पेड़ों का दुख-दर्द सुनाये
पेड़ तुम्हारे मित्र पुराने
इन्हें काटते क्यों मनमाने
ये ही हैं धरती के रक्षक
तुम क्यों बन गये इनके भक्षक।
शुद्ध हवा पानी ये देते
तुम इनका जब आदर करते
इन्हें देख आते हैं बादल
मीठा जल बरसाते बादल
पानी से ही जीवन अपना
सदा बचाकर इनको रखना।
ये गर्मी में छाया देते
फूल फलों से झोली भरते
मानव सुन लो मेरी बात
इन पर नहीं लगाओ हाथ।
शिव की बातें सुनते ही तब
मानव ने कुल्हाड़ी फेंकी
कान पकड़ कर हाथ जोड़कर
पेड़ों से फिर माफी मांगी।
निर्भय होकर पेड़ भी बोले-
तुम चाहे जो हमसे लेले
लकड़ी, दवा फलों का ढेर
स्वस्थ रहो तुम बनो कुबेर
रक्षा का अब भार उठाओ
जहां कहीं हो खाली भूमि
वहां-वहां तुम पेड़ लगाओ।।

● डॉ. श्यामसुंदर पाण्डेय
4-ए-102, लॉर्ड शिवा पैराडाइज,
चिकनगर, बिड़ला कॉलेज रोड,
कल्याण (पश्चिम), थाने (महाराष्ट्र)



पर्यावरण और बच्चे

महकते फूल चहकते बच्चे,
दिल से होते पूरे सच्चे।
भेद न कभी किसी से करते,
होते नहीं ये मन के कच्चे।

पौधों जैसे बढ़ते रहते,
घर आंगन चहकते रहते।
देश की है शान निराली,
भावों में ये होते कच्चे।

प्रार्थना और इबादत पूंजी,
शाला में किलकारी गूंजी।
विद्या मंदिर इनसे सजते,
क्यारी के ये फूल है बच्चे।

प्रेम के भूखे झूठ नहीं है,
दगाबाज के टूठ नहीं हैं।
हरियाली से खुशहाली है,
शुद्ध पर्यावरण में पलते बच्चे।

● कमलसिंह चौहान
कविता निवास, दुर्गा मंदिर के पास
रेल्वे स्टेशन रोड, बीड
जिला खंडवा (म.प्र.) 450110

कैसी हो हमारी दिनचर्या ?

डॉ. चंचलमल चोरड़िया

उचित समय पर किया गया कार्य अधिक लाभदायक होता है। सूर्य प्रतिदिन प्रातःकाल में उदय होकर, सायंकाल को ही क्यों अस्त होता है? निद्रा का समय रात्रि में ही क्यों उपयुक्त होता है? प्रातःकाल ही प्रायः अधिकांश व्यक्ति मल-त्याग क्यों करते हैं? भ्रमण एवं श्वसन सम्बन्धी व्यायामों अथवा प्राणायाम प्रातः ही क्यों विशेष लाभप्रद होता है? रात्रि भोजन का क्यों निषेध किया गया है? समुद्र में ज्वार रोजाना क्यों नहीं आते? विशेष दिवसों पर ही क्यों आते हैं? स्वास्थ्य के अनुकूल खानपान और रहन-सहन में परिवर्तन क्यों आवश्यक होते हैं? पुराने लोग स्वास्थ्यवर्धक आंवल्लों को विधिपूर्वक पूर्ण परहेज के साथ सेवन करने के लिये चैत्र और आसोज मास का ही क्यों परामर्श देते हैं? हमारी दिनचर्या एवं रात्रिचर्या के पीछे क्या दृष्टिकोण हैं?

क्या उपरोक्त सारी बातों का कोई वैज्ञानिक सोच या आधार है अथवा हमारी सुविधा या अन्धःनुकरण? कोई बीज कितना ही अच्छा क्यों न हो, उसे अच्छी उपजाऊ, जमीन पर बोया जावे, उचित हवा, पानी, धूप मिलने के बावजूद भी उचित समय पर न बोने से वह नहीं उगता। ठीक उसी प्रकार भोजन, पानी, हवा, निद्रा आदि का बराबर ख्याल रखने के बावजूद उचित समय पर सेवन न करने से वे अपेक्षाकृत लाभदायक नहीं होते। राम का नाम सत्य है परन्तु शुभ प्रसंगों पर भी राम नाम सत्य है कहना अप्रासंगिक समझा जाता है। अतः हमारी दिनचर्या का चयन इस प्रकार करना चाहिये कि शरीर के अंगों की क्षमताओं का अधिकतम उपयोग हो। प्रायः चिकित्सा पद्धतियाँ इस तथ्य की उपेक्षा कर रही हैं।

इसी कारण उपचार प्रभावशाली नहीं

हो रहे हैं तथा उपचार के कभी-कभी दुष्प्रभाव स्पष्ट देखे जा सकते हैं। क्या शरीर के सभी अंग चौबीसों घण्टे समान रूप से सक्रिय होते हैं?

शरीर के सभी अंगों में प्राण ऊर्जा का प्रवाह कैसे तो चौबीसों घण्टे होता ही है, परन्तु सभी समय एक-सा नहीं होता। प्रायः प्रत्येक अंग कुछ निश्चित समय के लिए अपेक्षाकृत सबसे कम सक्रिय होते हैं। इसी कारण कोई भी रोगी चौबीसों घण्टे एक जैसी स्थिति में नहीं रहता। अंगों में प्राण ऊर्जा के प्रवाह का संतुलन ही स्वास्थ्य का सूचक होता है।

यदि कोई रोग किसी अंग की असक्रियता से होता है तो जिस समय उस अंग में प्रकृति से सर्वाधिक प्राण ऊर्जा का प्रवाह होता है तब रोगी को अपेक्षाकृत आंशिक राहत का अनुभव होता है। उसके विपरीत जब रोग उस अंग की अधिक सक्रियता से होता है तो तब उस अंग में प्राण ऊर्जा का प्रवाह निम्नतम होता है, तो रोगी को अधिक राहत का अनुभव होता है। कभी-कभी हम अनुभव करते हैं कि रोगी को निश्चित समय होते ही रोग के लक्षण प्रकट होने लग जाते हैं।

वैज्ञानिक शोधों का यह निष्कर्ष है कि शरीर के सभी अंगों में सभी समय एक समान प्राण-ऊर्जा का प्रवाह नहीं होता। यदि दिन-रात को बराबर 12-12 घण्टे का आधार माने तो लगभग प्रत्येक प्रमुख अंगों में दो-दो घण्टे सर्वाधिक, तो उसके ठीक विपरीत अर्थात् 12 घण्टे पश्चात् निम्नतम प्राण उर्जा का प्रवाह उस अंग में होता है। इसी कारण एक ही लक्षण वाली बीमारियों के अलग-अलग समय में प्रकट होने के कारण अलग-अलग होते हैं। जैसे किसी व्यक्ति को प्रातःकाल सिर दर्द होता है अथवा चक्कर आता है और किसी अन्य रोगी को दोपहर अथवा रात्रि में सिर दर्द अथवा चक्कर आता हो तो दोनों के

कारण अलग-अलग होते हैं। रोग का कारण उससे सम्बन्धित अंग में चेतना के प्रवाह का उस समय ज्यादा अथवा कम होना होता है।

प्रकृति से तालमेल आवश्यक :

प्रकृति के अनुरूप दिनचर्या का निर्धारण और संचालन करने से शारीरिक क्षमताओं का अधिकाधिक उपयोग होता है। हम रोगों से सहज ही बच जाते हैं और यदि अज्ञानतावश रोग हो भी जावे तो पुनः शीघ्र स्वस्थ बन सकते हैं। दुःख इस बात का है कि आज अधिकांश व्यक्तियों की दिनचर्या प्रकृति के अनुरूप नहीं है और न वे इसके प्रभाव को समझने का भी प्रयास करते हैं। अज्ञान, अविवेक, पूर्वाग्रहों, कुतर्कों, मायावी विज्ञापनों, सरकारी और सामाजिक व्यवस्थाओं के अन्धःनुकरण के कारण प्रकृति के साथ जन-साधारण का सही सामंजस्य नहीं होता है। परिणामस्वरूप भोजन के समय नाश्ता और निद्रा के समय जागृत रहने जैसी आदतों को संजोये हुए हैं। हम उनके दुष्प्रभावों से अपरिचित हैं।

हम यह भूल जाते हैं कि जिसमें प्रकृति के विरुद्ध चलने की ताकत न हो वह कम से कम उसका सहयोग तो ले। तूफान का सामना करने की क्षमता नहीं हो तो हवा की दिशा में चले ताकि कम से कम कठिनाई का अनुभव हो। दूसरी बात जिस समय जो अंग सर्वाधिक सक्रिय हो, उस समय दूसरे अंगों के कार्य और क्रियाएँ करेंगे तो वे अंग प्रकृति से प्राप्त अपने हिस्से की विशेष प्राण ऊर्जा से वंचित रह जायेंगे। जैसे नगर निगम से पानी के वितरण के समय जो पानी का संग्रह नहीं करेगा, उसको बाद में पानी की आवश्यकता पड़ने पर पछताना पड़ेगा।

निद्रा कब त्यागें :

प्रातः 3 से 5 बजे फेंफड़ों में प्राण ऊर्जा का प्रवाह सर्वाधिक होता है। इसी

कारण प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठ कर खुली हवा में घूमने वाले, शुद्ध वायु में प्राणायाम तथा श्वसन का व्यायाम करने वालों के फेंफड़े सशक्त होते हैं।

प्रातःकाल 3 बजे से 5 बजे पीयूष और पीनियल ग्रन्थियों से सोमरस निकलता है, जो शरीर की प्रतिकारात्मक शक्ति को बढ़ाता है तथा शरीर के व्यवस्थित विकास हेतु जिसकी आवश्यकता होती है। इस समय निद्रा ले लेने पर शारीरिक स्थिरता के कारण सोमरस की धारा गले के नीचे प्रवाहित नहीं हो पाती। इस रस के कारण उस समय मस्तिष्क की स्मरण शक्ति जितनी अच्छी होती है अन्य समय नहीं होती। ब्रह्म मुहूर्त में उठने वाले छात्र अधिक बुद्धिमान, स्वस्थ, सजग एवं क्रियाशील होते हैं। उनमें आलस्य अपेक्षाकृत कम होता है।

प्रातः 5 से 7 के बीच का समय फेंफड़ों के सहयोगी अंग बड़ी आंत में चेतना का विशेष प्रवाह होने से यह अंग अधिक क्रियाशील होता है। इसी कारण मल-त्याग के लिए यह सर्वोत्तम समय होता है। जो व्यक्ति उस समय मलत्याग नहीं करते हैं उनको कब्ज रहने का एक कारण यह भी हो सकता है। इसलिए जो देर तक सोये रहते हैं उनका पेट प्रायः खराब रहता है।

भोजन कब करें ? :

प्रातः 7 बजे से 9 बजे तक आमाशय में प्रकृति से प्राण ऊर्जा का सर्वाधिक प्रवाह होने तथा बड़ी आंत की सफाई हो जाने से इस समय पाचन आसानी से हो जाता है। जितना अच्छा भोजन का पाचन प्रातःकाल में होता है उतना अन्य समय में नहीं होता। प्रातः व्यक्ति अपेक्षाकृत शान्त, तनाव-मुक्त, षड्यंत्रों तथा उलझनों से मुक्त रहता है। अतः भोजन के समय में भी नियमितता रखी जा सकती है। ऐसे समय किया गया भोजन अधिक सुपाच्य होता है और अमृतच्य का कार्य करता है। विशेष रूप से मधुमेह का रोग जिसे असाध्य माना जाता है, प्रकृति के समयानुकूल भोजन कर ठीक किया जा सकता है।

दूसरी तरफ जब हमें स्वाभाविक अच्छी

भूख लगे तब ही भोजन करना चाहिए। भूख का सम्बन्ध हमारी आदत पर निर्भर होता है। जैसी हम आदत डालते हैं, उस समय भूख लगने लग जाती है। अतः हमें भोजन की ऐसी आदत डालनी चाहिए जिससे कि जब आमाशय अधिक सक्रिय हो, उस समय हमें तेज भूख लगे। दूसरी बात जब तेज भूख लगे तो कुछ खाकर आमाशय की पूर्ण क्षमता का अपव्यय नहीं करना चाहिये। ना नाश्ता अधूरा आहार होता है और जब हम आंशिक आहार का पाचन आमाशय की सर्वाधिक क्षमता के समय करते हैं तो जब हमारा मुख्य भोजन होता है, तब आमाशय की पाचन क्षमता इतनी अधिक न होने से उसे अधिक श्रम करना पड़ता है। यदि ऐसा किया गया तो मुख्य भोजन के समय आमाशय भी पाचन के प्रति उदासीन हो जाए तो आश्चर्य नहीं। अतः जब आमाशय और पेन्क्रियाज सबसे अधिक सक्रिय हो अर्थात् प्रातः 9 बजे के लगभग अवश्य भोजन कर लेना चाहिये तथा सायंकाल 7 बजे से 11 बजे के बीच भोजन नहीं करना चाहिये, क्योंकि उस समय प्रकृति से आमाशय और पेन्क्रियाज को निम्नतम प्राण ऊर्जा मिलने से पाचन क्रिया मंद पड़ जाती है। इसी कारण सूर्यास्त के पश्चात् किया गया भोजन स्वास्थ्य के लिए लाभदायक नहीं होता।

निद्रा कब लें ? :

रात्रि 11 बजे से 3 बजे तक अग्नि तत्त्व से सम्बन्धित हृदय और छोटी आंत में चेतना का प्रवाह निम्नतम होता है। अर्थात् उस समय संवेदनायें अपेक्षाकृत कम सक्रिय होती है। अतः निद्रा के लिए सबसे अच्छा समय होता है। रात्रि 11 बजे से 3 बजे लीवर और गाल ब्लेडर में प्राण ऊर्जा का प्रवाह अपेक्षाकृत ज्यादा होता है। लीवर, गाल ब्लेडर शरीर में सबसे उत्तेजित अंग होते हैं। इसी कारण जिनके ये अंग खराब हो जाते हैं उनका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। बात-बात में क्रोध आने लगता है। इसके विपरीत जिनको क्रोध ज्यादा आता है, स्वभाव चिड़चिड़ा हो उसके ये अंग जल्दी रोगग्रस्त हो सकते

हैं। अतः स्वस्थ रहने की कामना रखने वालों को किसी भी हालात में 11 बजे तक गहरी निद्रा में चलें जाना चाहिए। अतः जो लोग देर रात जागते रहते हैं उनका लीवर खराब रहने से स्वभाव अपेक्षाकृत चिड़चिड़ा, जिद्दी हो जाता है।

प्रकृति के कानून सनातन :

उपरोक्त सत्य हमारी वर्तमान धारणाओं एवं परिस्थितियों के अनुकूल हो अथवा नहीं, ये बातें हमें अच्छी लगे अथवा न लगे, प्रकृति के कानून मनुष्य की व्यक्तिगत अनुकूलताओं के आधार पर नहीं बदलते। बड़े-बड़े शहरों में जीवन आज प्रकृति के विपरीत हो रहा है। सूर्योदय एवं सूर्यास्त का समय उनकी दिनचर्या के अनुरूप नहीं होता। सनातन सत्य सभी के लिए, सभी काल में, सभी स्थानों पर एक जैसे ही रहते हैं। जानवर आज भी उनका बिना तर्क पालन करते हैं और उनको अपना जीवन चलाने के लिए दवाईयों अथवा डॉक्टरों की आवश्यकता नहीं रहती। परन्तु जो पशु मानव के सम्पर्क में आते हैं, उनके सान्निध्य में रहकर अपना नियमित आचरण बदल प्रकृति के विरुद्ध चलने लगते हैं, वे ही मानव की भांति रोग ग्रस्त बन रहे हैं। जो सनातन सत्य है, हमारे स्वास्थ्य के लिए जो लाभप्रद है, उसके अनुरूप अपनी प्राथमिकताओं का हमें चयन कर दिनचर्या का निर्धारण करना होगा अन्यथा रोग मुक्त रहने की कल्पना आग के पास बैठ ठण्डक प्राप्त करने के समान होगी। सरकार से अपेक्षा है कि रात्रि में 10 बजे बाद टी.वी. रेडियो का प्रसारण बंद करे। पाठशालाओं, कार्यालयों का समय, भोजनावकाश निश्चित करते समय प्रकृति के समय-चक्र का ख्याल रखा जावे। हम जितना प्रकृति से तालमेल रख अपनी दिनचर्या बनायेंगे, उतने स्वास्थ्य को सरलता से प्राप्त कर निरोगी जीवन जी सकेंगे। हमारे जीवन का प्रथम सुख निरोगी काया है। उसके अभाव में हमारी सारी भाग-दौड़ हमें सुखी न बना सकेगी।

चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

परमाणु ऊर्जा और भारतीय चिंताएं

जापान के परमाणु रिएक्टरों में हुए विस्फोटों और रेडिएशन ने पूरी दुनिया में एक बार फिर से इस बहस को नए सिरे से शुरू कर दिया है कि क्या परमाणु ऊर्जा मानव जाति और पर्यावरण के लिए सुरक्षित विकल्प है या नहीं? आज पूरी दुनिया में परमाणु ऊर्जा की वकालत करने वाले देशों की संख्या में तेजी से बढ़ोतरी हो रही है लेकिन परमाणु ऊर्जा को जहां एक सुरक्षित और पर्यावरण को क्षति न पहुंचाने वाला स्रोत बताकर प्रचारित और प्रसारित किया जा रहा है उतना असल में नहीं है। सभी तर्कों और बहस के बावजूद दुनिया भर में न्यूक्लियर ऊर्जा का उपयोग लगातार बढ़ रहा है। वर्तमान में दुनिया के 32 देशों के 440 रिएक्टरों के द्वारा दुनिया की 16 फीसदी बिजली का उत्पादन किया जा रहा है। भारत के संदर्भ में अगर बात की जाए तो वर्तमान में हमारे देश में 20 न्यूक्लियर रिएक्टर चालू हालत में हैं। जापान के फुकुशिमा न्यूक्लियर रिएक्टर में विस्फोट और रिसाव के बाद प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने संसद के दोनों में सदनों में बयान देकर देश को आश्वस्त किया कि भारत के सभी न्यूक्लियर रिएक्टर सुरक्षित हैं और खतरे की कोई बात नहीं है। मुसीबत किसी से पूछकर नहीं आती है। ये तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि विश्व के सभी देशों में जापान ही एकमात्र ऐसा देश है जिसने परमाणु बम के हमले को भोगा है और परमाणु ऊर्जा से उत्पन्न होने वाले खतरों से निपटने के लिए सबसे आधुनिकतम और सुरक्षित तकनीक और प्रणाली जापान के पास ही है। बावजूद उसके संकट की घड़ी में जापान के प्रधानमंत्री ने एक तरह से हाथ ही खड़े कर दिए थे। हमारे देश में जहां छोटी-मोटी आग लगने पर घंटों दमकल गाड़ियों की व्यवस्था नहीं हो पाती है वहां न्यूक्लियर रिएक्टर में होने वाली दुर्घटनाओं से बचाव के उपाय हमारे पास उपलब्ध हैं ये

आशीष वशिष्ठ

गहरी चिंता और सोच का विषय है। उन्नत तकनीक और बढ़िया आपदा प्रबंधन के चलते ही जापान ने भूकंप, सुनामी और न्यूक्लियर रिएक्टर में विस्फोट और विकिरण जैसी तीन आपदाओं से सफलता पूर्वक सामना किया और जान-माल की भारी क्षति को बचाया। हमारे देश में आपदा प्रबंधन कागजों और फाइलों में ही दबा है और इतिहास के पन्ने पलट कर देखा जाए तो भारत में अकेले टी-सुनामी से ही भारी भरकम जान-माल का नुकसान हुआ था। फुकुशिमा की घटना के बाद से न्यूक्लियर एनर्जी के संबंध में दुनियाभर विरोध, प्रदर्शन शुरू हो गया है और भारत में भी महाराष्ट्र में प्रस्तावित जैतपुर न्यूक्लियर रिएक्टर को लेकर विरोध का स्वर पुनः मुखर हो रहा है।

भारत में बिजली का विकास 19वीं सदी के अंत में शुरू हुआ। सन् 1897 में दार्जिलिंग में बिजली आपूर्ति शुरू हुई और उसके बाद सन 1902 में कर्नाटक में शिवसमुद्रम में पन बिजलीघर काम करने लगा। आजादी से पहले बिजली की आपूर्ति मुख्यतौर पर निजी क्षेत्र करता था और यह सुविधा भी कुछ शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित थी। वर्तमान में भारत विश्व ऊर्जा का छठा सबसे बड़ा उपभोक्ता है। उपभोग के मामले में भारत में कुल वैश्विक उपभोग में 3.5 प्रतिशत की भागीदारी है। भारत में तापीय, पन और नाभिकीय ऊर्जा विद्युत उत्पादन के सबसे बड़े स्रोत हैं। 31 जनवरी, 2010 की स्थिति के अनुसार अखिल भारतीय स्तर पर विद्युत उत्पादन की संस्थापित क्षमता 156783 मेगावाट थी जिसमें 4120 मेगावाट न्यूक्लियर एनर्जी का हिस्सा है। राष्ट्रीय विद्युत नीति के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए 11वीं पंचवर्षीय योजना में 78,700 मेगावाट क्षमता अभिवृद्धि का

प्रस्ताव है। परमाणु ऊर्जा का शांतिपूर्वक ढंग से उपयोग में लाने हेतु नीतियों को बनाने के लिए 1948 ई. में परमाणु ऊर्जा कमीशन की स्थापना की गई। इन नीतियों को निष्पादित करने के लिए 1954 ई. में परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई) की स्थापना की गई। 1940 ई. के दौरान देश के यूरेनियम और बड़ी मात्रा में उपलब्ध थोरियम संसाधनों के प्रयोग के लिए तीन चरण वाले परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम का गठन किया गया। अभी देश में 17 परिचालित नाभिकीय ऊर्जा रिएक्टर (दो क्वथन जलयुक्त रिएक्टर और 15 पी एच डब्ल्यू आर एस) हैं, जिनकी कुल उत्पादन क्षमता 4120 मेगावाट इकाई है। भारत में नाभिकीय ऊर्जा संयंत्र की रूपरेखा, निर्माण और संचालन की क्षमता पूरी तरह तब प्रतिष्ठित हुई जब चेन्नई के पास कालपक्कम में 1984 और 1996 में दो स्वदेशी पी एच डब्ल्यू आर एस की स्थापना की गई। वर्ष 2008 में एनपीसीआईएल के परमाणु संयंत्रों से 15,430 मिलियन यूनिट बिजली का उत्पादन हुआ।

प्रधानमंत्री और वैज्ञानिक देश में स्थित न्यूक्लियर रिएक्टरों की सुरक्षा के प्रति चाहे जितना भी आश्वस्त करें लेकिन सच कुछ और ही है। एक अमेरिकन युनिवर्सिटी के शोध के अनुसार वर्ष 1993 से 1995 के मध्य देश में स्थित विभिन्न परमाणु संयंत्रों में छोटी-बड़ी 124 घटनाएं घटित हुई हैं। वर्ष 1987 में कालपक्कम, 1989 और 1992 में तारापुर, महाराष्ट्र, वर्ष 1995 में कोटा राजस्थान और वर्ष 2002 में कालपक्कम तमिलनाडु के परमाणु संयंत्रों में हुई दुर्घटनाएं सरकारी कागजों में दर्ज हैं। सन् 1987 से 2002 तक हुए विभिन्न दुर्घटनाएं का आर्थिक नुकसान 910 मिलियन अमेरिकी डालर आंका गया था। देश में परमाणु संयंत्र कर्नाटक, गुजरात, तमिलनाडु, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, हरियाणा, पश्चिम

बंगाल और आंध्र प्रदेश में स्थित हैं। देश में ऊर्जा की कुल खपत का मात्र 2.9 फीसदी ही न्यूक्लियर एनर्जी से हमें मिल पाता है। विदेशी ताकतों के दबाव के चलते भारत ने परमाणु ऊर्जा के कच्चे माल के आयात के लिए रूसिया, मंगोलिया, कजाकिस्तान, अर्जेंटिना, नाम्बिया आदि देशों से अनाप-शनाप समझौते कर रखे हैं। असल में परमाणु ऊर्जा को बढ़ावा देने के पीछे अमेरिकन कंपनियों का हाथ है। ये कंपनियाँ पहले न्यूक्लियर एनर्जी के लाभ बताकर माहौल तैयार करती हैं और फिर अपनी तकनीक और प्रणालियों को उन देशों में बेचकर करोड़ों-अरबों का लाभ कमाती हैं। पिछले साल भारत ने अमेरिका के साथ गैर-सैन्य परमाणु समझौता अमेरिका से किया था। समझौते से पूर्व की अनिवार्य शर्त के चलते सरकार ने आनन-फानन में परमाणु जनदायित्व क्षतिपूर्ति विधेयक, 2010 पारित करवा लिया था। इस विधेयक के पारित होने के पहले अमेरिका-भारत असैनिक परमाणु समझौता लागू नहीं हो सकता था। इस तरह से परमाणु समझौता लागू होने के रास्ते से अंतिम बाधा दूर हो गई साथ ही परमाणु व्यापार का मार्ग भी खुल गया। संसद में पारित विधेयक में 1500 करोड़ रुपए के मुआवजे का प्रावधान है, यानी कि विधेयक में अधिकतम क्षतिपूर्ति दायित्व 300 मिलियन अमेरिकी डालर यानी 2100 करोड़ डॉलर रखी गई है। व्यक्तिगत जोखिम की दशा में क्षतिपूर्ति का दावा करने का समय 20 वर्ष रखा गया है। विधेयक के अनुसार परमाणु ऑपरेटर, आपूर्तिकर्ता या उसके कर्मचारी पर परमाणु दुर्घटना के लिए किसी प्रकार का आरोप नहीं लगा सकेगा। जापान के फुकुशिमा या चिरनोबिल, रूस के न्यूक्लियर रिएक्टरों में हुई दुर्घटनाओं के सापेक्ष में जो मुआवजे की अधिकतम राशि का प्रावधान हमारे देश में किया गया है, वो अपर्याप्त है। वही परमाणु ऑपरेटर, आपूर्तिकर्ता या उसके कर्मचारी पर किसी भी प्रकार का आरोप न लगा पाने का प्रावधान सरकार की नीति और नीयत को दर्शाता है कि

सरकार किस हद तक जाकर अपने विदेशी आकाओं को खुश करने के लिए देश की जनता के साथ खिलवाड़ करने से बाज नहीं आई है।

परमाणु प्रदूषण एक गंभीर पर्यावरणीय समस्या है जो काफी लम्बे समय तक बनी रहती है। विभिन्न शोधों से ये पता चला है कि इसके परीक्षण स्थल से 50 किमी की दूरी तक कैंसर होने का खतरा रहता है। रेडिएशन से ल्यूकीमिया और अस्थि कैंसर, असामयिक बुढ़ापा, स्नायु तंत्र में विकार, जिन व गुण-सूत्रों में परिवर्तन, त्वचा का कैंसर, सिर के बालों का झड़ना, स्त्रियों में बांझपन, अल्सर व फेफड़े का कैंसर और शरीर में बैक्टीरिया और विषाणुओं के प्रति प्रतिजीव विष उत्पन्न करने की क्षमता और रोग प्रतिरक्षा क्षमता घट जाती है। 6 तथा 9 अगस्त 1945 को हिरोशिमा तथा नागासाकी पर अमेरिका ने परमाणु बम का विस्फोट कर इन दोनों जापानी शहरों को नष्ट कर दिया, रेडियोधर्मी विकिरण के प्रभाव से लोग झुलस कर मर गये जो जीवित बचे अपाहिज हो गये। आज 63 वर्ष बाद भी हिरोशिमा और नागासाकी में विकिरण के प्रभाव से अपंग पैदा हुए लोग देखे जा सकते हैं। पर्यावरण संगठनों के लगातार विरोध के बावजूद, कई देश जैसे अमेरिका जापान और भारत इस तकनीक का अधिक से अधिक प्रयोग कर रहे हैं। हालांकि न्यूक्लियर कचरे का निस्तारण करना अपने आप में एक भारी समस्या है। संयुक्त राष्ट्र के एक सर्वेक्षण में चेतावनी दी गई है कि धरती पर जिस तरह से प्रकृति का दोहन करके उसका विनाश किया जा रहा है उससे आनेवाले वक्त में देशों की अर्थव्यवस्थाएं प्रभावित होने लगेंगी। जीबीओ-3 यानी थर्ड ग्लोबल बॉयोडायवर्सिटी आउटलुक का कहना है कि कुछ इको-सिस्टम ऐसे बिंदु पर पहुंच रहे हैं कि वे मानव समाज के लिए कम लाभदायक साबित होने लगेंगे। प्राकृतिक विनाश में जंगलों का तेजी से कम होते जाना, पानी के रास्ते में शैवाल का फैल जाना और बड़े पैमाने पर मूंगे की चट्टानों का मरते जाना शामिल है। पिछले वर्ष

समोआ में सुनामी, चिली, हैती और चीन में भूकंप की घटनाएं घटी थी जिसमें भारी जान-माल का नुकसान हुआ था।

ऊर्जा एक महत्वपूर्ण ढांचा है, जिस पर किसी देश के सामाजिक-आर्थिक विकास का दारोमदार होता है। ऊर्जा आर्थिक विकास और जीवन स्तर बेहतर बनाने के लिए आवश्यक साधन है। समाज में ऊर्जा की बढ़ती हुई जरूरतों को उचित लागत पर पूरा करने के लिए ऊर्जा के पारंपरिक संसाधनों के विकास की जिम्मेदारी सरकार की है। ऊर्जा के गैर-परंपरागत, वैकल्पिक, नए और फिर से उपयोग में लाए जा सकने वाले स्रोतों, जैसे सौर, पवन और जैव ऊर्जा आदि के विकास और संवर्धन पर ध्यान दिए जाने की महती आवश्यकता है। रेडिएशन से होने वाली हानि से बचने का कोई ईलाज नहीं है, इसलिए रेडियो एक्टिव प्रदूषण से बचने के लिए सभी प्रयत्न किए जाने चाहिए। रिएक्टरों से रिसाव, आसवधानी, परिवहन तथा रेडियो एक्टिव ईंधन का उपयोग, विखंडित उत्पाद तथा रेडियो आइसोटोपों को बिल्कुल बंद करना पड़ेगा। सुरक्षा के उपायों को सख्ती से लागू करना चाहिए। अपशिष्ट पदार्थों का निपटारा सुरक्षित होना चाहिए। खतरनाक क्षेत्रों में वहां के रेडियो एक्टिव पदार्थों की लगातार जांच तथा परीक्षण होना चाहिए। ऐसी सावधनियां बरतनी चाहिए जिससे कि कहीं सीमित मात्र से अधिक रेडिएशन न हो सके। दुर्घटना होने पर मिलने वाली सहायता को मजबूत करना चाहिए। नए ओक्वूपेशनल सुभेद्य के प्रति उचित कदम उठाने की आवश्यकता है। माना कि सस्ती व सतत् ऊर्जा की आपूर्ति भी देश के विकास के लिए अगर जरूरी ही है तो ऊर्जा के ऐसे नए स्रोत विकसित किए जाएं जो पर्यावरण और मानवजाति के हितैषी हों। वरना संपूर्ण जाति परमाणु विकिरण और उससे उत्पन्न होने वाली असंख्य घातक बीमारियों और संकटों से समाप्त हो जाएगी।

स्वतंत्र पत्रकार, बी-96, इंदिरा नगर, लखनऊ-226016 (उ.प्र.)

डोलती धरती और खतरे में जिंदगी

नरेन्द्र देवांगन

प्रकृति ने फिर एक बार कहर ढाहकर पूरे जीव जगत को झकझोर कर रख दिया। जापान में पहले तो उच्च तीव्रता का भूकंप आया, जिससे तटीय इलाकों के भवनों और निर्माणों में आग लग गई और उसके बाद सुनामी की 10 मीटर ऊंची लहरों ने जो तबाही मचाई, उसके दृश्य पूरी दुनिया ने देखे। ऐसा लग रहा था मानो शहर के अंदर किसी ज्वालामुखी का लावा बह रहा हो। कहीं आग, तो कहीं पानी का सैलाब और उसमें उखड़कर बहते विकास के प्रतीकों का ऐसा मंजर शायद ही पहले कभी देखा गया होगा। पहले 7.3 तीव्रता का भूकंप आया था, लेकिन उसे बर्दाश्त कर लिया गया, उसके बाद आया 8.9 तीव्रता का भूकंप तो ऐसा था कि जिसके सामने आपदा प्रबंधन के भी पांव उखड़ गए। फिर भी यह बात खासतौर पर प्रभावित करती है कि जापान में उतनी मौतें नहीं हुई हैं, जितनी दुनिया के किसी अन्य इलाके में इतनी ही तीव्रता के भूकंप व सुनामी के चलते होती। आज दुनिया में भूकंपों को झेलने की जितनी क्षमता जापान की है, उतनी और किसी देश की नहीं है। लेकिन प्रकृति बार-बार जापान की परीक्षा लेने पर तुली है। जापान के होशू द्वीप, योकोहामा और सेंडई तो पूरी तरह से तबाह हो गए हैं। सर्वाधिक चिंता तो परमाणु संयंत्रों को लेकर है। हालांकि जापान के पांचों परमाणु संयंत्र भूकंप के तत्काल बाद बंद कर दिए गए, लेकिन कुफुशिमा परमाणु संयंत्र में विस्फोट हो ही गया। जापान को पूरी क्षति का अंदाजा लगाने में अभी समय लगेगा और उसे संभलने में भी समस्याएं आएंगी। आपदा की भयावहता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि सुनामी की लहरें आस्ट्रेलिया तक पहुंचेंगी।

सुनामी की पहली मंजिल जापान



था, तो उन्हें इलाका खाली करने का ज्यादा समय नहीं मिला। लेकिन दूसरे देशों को समय मिला है और ध्यान इस बात पर है कि कम से कम विनाश हो। फिर भी मानव जीवन की क्षति के साथ-साथ विध्वंस भी काफी होगा। महत्वपूर्ण पहलू यह है कि दुनिया में समुद्र तटीय इलाकों में विकास बहुत हुआ है। बड़ी-बड़ी इमारतें बनी हैं। हमें मानव जीवन को बचाने पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। आखिर ऐसा क्यों हो रहा है? ग्लोबल वार्मिंग और मौसम में हो रहे बदलाव का भी प्रभाव है। शोध बताते हैं कि पर्यावरण में बदलाव का पृथ्वी पर बहुत गहरा असर पड़ता है। भूकंप इत्यादि जो हैं, वे भूगर्भ से शुरू होते हैं। उदाहरण के लिए वैज्ञानिकों का कहना है, जैसे-जैसे ग्लेशियर पिघलते हैं, पृथ्वी उस खाली हुई जगह को भरने की कोशिश करती है, यह एक प्रक्रिया होती है, इसके अनेक भूगर्भीय नतीजे होते हैं। पहाड़ों पर भी बर्फ होती है, जब वहां बर्फ पिघलती है, तो संतुलन बनाने के लिए

पृथ्वी के अंदर आंतरिक बदलाव भी होते हैं। ये सिसमिक गतिविधियों को बढ़ाते हैं, इससे भूकंप आता है। पहले सुनामी सौ से डेढ़ सौ सालों में एक बार आता था, लेकिन अब ज्यादा आने लगा है। इसका मतलब है, ग्लोबल वार्मिंग का असर बढ़ रहा है। हमें नीति के स्तर पर सोचना होगा। तमाम देशों की सरकारों को सोचना होगा। पर्यावरणीय बदलाव बहुत बड़ी चिंता की बात है। ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को भी कम करने की जरूरत है, ताकि ग्लेशियर न पिघलें। हम जानते हैं कि भूमि में होने वाला कोई भी प्रहार पलटकर आता है। यह एक समझ है। इस प्रहार को कम करना चाहिए।

हमारा देश भी सुरक्षित नहीं है। दिल्ली भूकंप की दृष्टि से अति संवेदनशील जोन चार में आता है जो किसी भी दृष्टि से भूकंप का खतरा झेलने को तैयार नहीं है। दिल्ली में भूकंप का मतलब है भारी तबाही। इसके लिए भूकंप का जबरदस्त होना जरूरी नहीं है। एक तगड़ा झटका ही काफी है। तीन रिक्टर स्केल का भूकंप

आने पर जमीन के अंदर की पाइप लाइनों के फटने से ही भारी तबाही होगी और यदि उसकी तीव्रता 4.5 रिक्टर स्केल की हुई तो उससे जो तबाही होगी, उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। दिल्ली की बेतहाशा बढ़ती आबादी सबसे बड़ी चिंता की बात है। भूगर्भ विज्ञानियों के अनुसार भूकंप की दृष्टि से अति संवेदनशील जोन चार में सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्र मुरादाबाद, दिल्ली और सोहना के सर्वाधिक आबादी वाले क्षेत्र हैं। दिल्ली में इसमें यमुना पार में लक्ष्मी नगर, मयूर विहार व दिल्ली में चांदनी चौक, पहाड़गंज और करोलबाग इलाके सर्वाधिक खतरे वाले हैं जो सघन आबादी वाले हैं। मयूर विहार और लक्ष्मी नगर के इलाके की मिट्टी कच्ची और रेतीली है जिस पर बने मकान भूकंप का एक झटका भी बर्दाश्त नहीं कर सकते। इन इमारतों की नींव कमजोर है। इनमें बने मकान, भवन, अट्टालिकाएं ताश के पत्ते की तरह ढह जाएंगी। ललिता पार्क की एक पुराने मकान ढहने की घटना ने यह साबित भी कर दिया है। पुरानी दिल्ली को लें। वहां की पुरानी इमारतें तो इतनी खस्ताहाल हैं कि वहां की एक भी इमारत नहीं बच पाएंगी। संकरी गलियां इस तबाही में अहम भूमिका निभाएंगी। एक तो पुरानी दिल्ली की गलियां इतनी तंग और संकरी हैं कि भूकंप आने की स्थिति में एक तो व्यक्ति घरों से बाहर ही नहीं निकल पाएगा और निकल भी गया तो गली पार करना उसके लिए दूभर होगा। यमुना पार इलाके में यमुना किनारे बनी इमारतें ज्यादा प्रभावित होंगी। इसमें जमीन के अंदर मौजूद पहाड़ी चट्टानों के विचलन से उपजी तीव्र तरंगें तबाही में ज्यादा प्रभावी भूमिका निभाएंगी। बरसात के दिनों में 7.2 रिक्टर स्केल का भूकंप आने की दशा में दिल्ली का नक्शा ही बदल जाएगा। यही कारण रहा कि पर्यावरणविदों ने यमुना किनारे खेल गांव के निर्माण का पुरजोर विरोध किया, लेकिन सरकार ने उनकी एक न सुनी। यदि आईआईटी कानपुर के भूकंप सूचना केंद्र की मानें तो हिमालयी क्षेत्र यानी

गढ़वाल में यदि 7.5 रिक्टर स्केल का भूकंप आता है, उस दशा में दिल्ली जो उसके 250 किमी के दायरे में आती है, के विनाश को रोका नहीं जा सकता। इससे दिल्ली के 1.5 करोड़ लोग प्रभावित होंगे, इस सच्चाई को झुठलाया नहीं जा सकता। यह जान लें कि भूकंप नहीं मारता, मकान मारते हैं।

आज जरूरत इस बात की है कि पूरी दुनिया जापान और उन देशों के साथ खड़ी हो, जो सुनामी का कहर झेल रहे हैं। आपदा के ये क्षण मानवता की मिसाल कायम करने के मौके होते हैं। तानाशाहों, आतंककारियों, पृथ्वी-पर्यावरण के शत्रुओं और दूसरे देशों का दर्द न समझने वाली नई-पुरानी महाशक्तियों को खासतौर पर तबाही के दृश्य देखना चाहिए, ताकि आपस में लड़ने और एक-दूसरे को मिटाने की निरर्थकता का अहसास हो। आपदाएं अपने आपको जगाने का मौका होती हैं। आज पृथ्वी की चिंता करना सबसे ज्यादा

जरूरी है। आज बदलते मौसम, पिघलते ग्लेशियर और सिमटते वनों के बारे में सोचने की जरूरत है। धरती के बढ़ते तापमान को रोकने के तमाम प्रयास विफल हो रहे हैं, क्योंकि महाशक्तियों को अभी और शक्तिशाली होना है। सावधान, अगर हम नहीं जागे, तो आपदाएं हमारा जीना मुश्किल कर देंगी। अमेरिका व वीटो पॉवर वाले देशों को पृथ्वी के प्रति सजग होना होगा। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद और उसकी सेना पीड़ित मानव समाजों की रक्षा के लिए है, लेकिन ऐसी ही एक सुरक्षा परिषद पृथ्वी की सुरक्षा के लिए भी बनना चाहिए, क्योंकि यदि पृथ्वी की सुरक्षा नहीं होगी, तो मानव की सुरक्षा का कोई अर्थ नहीं रह जाएगा। आपदाओं की जड़ों में जाकर उपाय खोजना होंगे, तभी हम मानव होने की श्रेष्ठता साबित कर पाएंगे।

नरेन्द्र फोटो कॉपी
पोस्ट - खरोरा 493225
जिला-रायपुर (छ.ग.)

प्रेरणा

उच्च कोटि की नैतिकता

महाराजा चन्द्रगुप्त के यहां मंत्री चाणक्य लालटेन जलाकर सरकार का कार्य कर रहे थे। मेगेसनिक नामक व्यक्ति इनके पास आया और बोला कि मंत्रीजी! मेरा आप एक काम कर दें। मंत्री चाणक्य ने कहा कि आपका कार्य सरकारी है या व्यक्तिगत। मेगेसनिक ने कहा मैं जिस कार्य को लेकर आया हूँ, वह मेरा व्यक्तिगत कार्य है। चाणक्य ने सुनते ही जलती लालटेन को बुझाया और अपने पास रखी दूसरी लालटेन जलाई तथा मेगेसनिक से कहा बोलो! आपका क्या काम है।

मेगेसनिक ने काम बताने से पहले जिज्ञासावश चाणक्य से पूछा कि आपने जलती लालटेन बुझाकर नई लालटेन क्यों जलाई? तब चाणक्य ने कहा कि वह लालटेन सरकारी थी और मैं सरकारी लालटेन जलाकर सरकारी कार्य कर रहा था। परन्तु आपने अपना काम सरकारी नहीं होकर व्यक्तिगत बताया। इस कारण मैंने सरकारी साधन का दुरुपयोग करना अपनी नैतिकता नहीं समझी और आपके व्यक्तिगत कार्य को करने के लिये मैंने अपनी व्यक्तिगत लालटेन जलाई। मेगेसनिक चाणक्य की ऐसी उच्च कोटि की नैतिकता से बड़ा प्रभावित हुआ।

● भूरचन्द्र जैन
जूनी चौकी का वास, बाड़मेर (राजस्थान)

शमा ने जैसे ही अखबार हाथ में लिया तो उसकी आँखें एक बड़ी-सी न्यूज पर स्थिर-सी होती चली गई। 'मीना' में लगी भयावह आग में 300 से अधिक लोग मर चुके हैं और 1300 यात्री घायल हैं, पढ़ते ही शमा जड़वत हो गई। वह उतावली होकर पूरी खबर को पढ़ने की कोशिश में थी पर आँखों के आगे अंधियारा-सा छा रहा था। खुदा! या अल्लाह! तू ही रक्षा करना, कहती हुई वह फफक-फफक कर रोने लगी।

उसका पति आलम भी एक हज यात्री था। उसके बारे में भय और आशंकाएं बढ़ती जा रही थी। जब आग लगी होगी तो आलम कहाँ होगा? उस भीड़ में वह सबसे पीछे था या फिर पहली पंक्ति में, जहाँ से वह अपने आपको बचा भी न पाए.....।

नहीं..... नहीं.....मेरे आलम को कुछ नहीं हो सकता। खुदा अवश्य उसकी रक्षा करेगा। आलम को कोई भी आंच नहीं आ सकती। वह कुछ क्षणों के लिए आश्वस्त हुई उसकी आत्मशक्ति ने उसे संभालने की कोशिश की। वह बुदबुदायी..... आलम एक नेकदिल इंसान है। उसने खुदा के साथ कभी धोखा नहीं किया है। शमा स्वयं भी तो खुदा की नमाज नियमित रूप से पढ़ती रही है। कुरान को आलम ने जीवन में उतारने का गौरव प्राप्त कर रखा है। ऐसे आलम का कोई भी कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता, उसे कोई आँच नहीं आ सकती। उसने इतना बड़ा त्याग किया था। त्याग, सचमुच कितना बड़ा त्याग कर आलम ने दोस्ती को प्राणवान बना दिया था। क्या खुदा उसकी और मेरी सहायता नहीं करेगा? लेकिन अगले ही क्षण आलम का घायल शरीर उसकी आँखों के सामने तैर जाता या फिर वह मृतकों के ढेर में आलम को खोज रही होती। नहीं! आलम महान् है। वह खुदा का सपूत है, खुदा स्वयं उसकी रक्षा करेगा।

आठ साल पहले की बात है उस समय भी तो मक्का के हज यात्रियों में भगदड़ मची थी और उसमें 1400 यात्री मौत के मुँह में पहुँच गए थे। करीम जो कि आलम का दोस्त था भीड़ में बुरी तरह से फंसकर गिर गया और उसका दायाँ हाथ इस कदर कुचल गया कि वह लहलुहान हो गया।

डॉक्टरी सलाह के अनुसार करीम का

दोस्ती

पुनम कुमारी



दायाँ हाथ कटवाना अत्यंत आवश्यक था। डॉक्टर ने कहा अगर इस हाथ को न काटा गया तो पूरे शरीर में विष-प्रसारण की आशंका की जा सकती है।

आलम! मेरे दोस्त! करीम दर्द से कराह रहा था। मेरा हा...थ...। अब क्या होगा? मेरा हाथ कट जाएगा तो मैं किस प्रकार काम करूँगा। दीनता से उसका चेहरा स्याह पड़ रहा था। चिन्ता के भार से परेशान वह रो लेना चाहता था।

करीम! तुम चिन्ता क्यों कर रहे हो? अभी तुम्हें स्वस्थ होना है। हाथ रहे या न रहे जिन्दगी रहेगी तो कुछ न कुछ उपाय निकल ही आएगा। अभी तुम्हें स्वस्थ होने के लिए प्रसन्न रहना अत्यंत आवश्यक है मेरे दोस्त!

आलम! तुम ठीक कहते हो। पर कटे हाथ का होकर तो मैं अपनी औरत व औलाद पर भार मात्र ही हो सकता हूँ। करीम बोझिल जीवन की कल्पना मात्र से ही दबता जा रहा था।

दोस्त! ऐसा नहीं बोला करते। आलम ने करीम के मुँह पर हाथ रखते हुए कहा। जब तक मैं हूँ, तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत ही क्या है? चिन्ता का सारा भार तुम मुझ पर छोड़ दो। तुम्हें पहले स्वस्थ होना है।

नहीं आलम! मैं खुदा से मौत की दुआ मांगता हूँ ताकि शांति को प्राप्त कर सकूँ। रोते-रोते करीम बेहोश हो गया।

डॉक्टर! डॉक्टर! आलम तेजी के साथ डॉक्टर को बुला लाया।

बहुत देर परीक्षण करने के बाद डॉक्टर ने कहा मरीज मानसिक दुर्बलता से घिरा हुआ है, यह खतरनाक है। स्वस्थ होने के लिए इसकी मानसिक प्रसन्नता बनाये रखना अत्यंत आवश्यक है।

और उसके बाद बहुत देर तक आलम डॉक्टर के साथ बात करता रहा। वह अपने दोस्त को प्रसन्नता प्रदान कर दोस्ती शब्द की सार्थकता सिद्ध करना चाहता था।

लेकिन मेरी समझ में नहीं आ रहा कि

आप इतनी नासमझी क्यों कर रहे हैं? इसका हाथ कटा, यह बेबसी थी पर आप अपना हाथ जानबूझकर कटवा रहे हैं। दोस्ती में भी भावुकता का प्रवाह न बहे, अभीष्ट होता है।

प्लीज डॉक्टर! आप मुझे समझने की कोशिश करें। मैं करीम की हद तक सहायता करना अपना धर्म मानता हूँ। मैं उसे और अधिक दुःखी नहीं देख सकता। और फिर मैं तो कभी दायाँ हाथ से काम भी नहीं करता हूँ। बचपन से ही मैंने सदा बायाँ हाथ से ही काम किया है और करता भी रहूँगा।

खैर, आपकी जो इच्छा। कहकर डॉक्टर ने बात को विराम दे दिया।

लेकिन डॉक्टर एक बात और है। आप करीम से इसके बारे में कोई चर्चा नहीं करेंगे। आलम ने अपनी दृष्टि डॉक्टर के चेहरे पर टिका दी।

डॉक्टर एक विस्मयभरी मुस्कान के साथ उसकी दोस्ती को मन ही मन धन्यवाद दे रहा था।

नीरु! क्या बात है? आलम दो दिनों से हॉस्पिटल नहीं आ रहा है?

हाँ, आलम किसी आवश्यक कार्य के लिए दिल्ली गया है। नीरु ने सत्य को बहुत चतुराई से छिपाते हुए कहा। लेकिन उसकी आँखें डबडबा आई थी। वे हर्षाश्रु थे पर उन्हें भी वह प्रकट नहीं कर सकती थी क्योंकि आलम ने न केवल डॉक्टर को बल्कि उसे भी तो कसम खिलाई थी। उसने मुँह फेरकर झट से आंसू पोंछ लिए।

और एक दिन जब दोनों मित्र स्वस्थ होकर आपस में मिले थे तो करीम चहक उठा था अपना नया हाथ नचाते हुए। वह

आलम को उपालम्भ पर उपालम्भ दिए जा रहा था कि वह अपने बीमार दोस्त को छोड़कर क्यों गायब हो गया था। उसने अपना नया हाथ आगे बढ़ाकर आलम से हाथ मिलाना चाहा।

आलम ने कोई हरकत नहीं की। वह बुत-सा खड़ा रहा।

क्या मेरे से हाथ नहीं मिलाओगे दोस्त! एक बार मिलाकर देखो तो सही। यह कैसा फबता है?

कैसा अजीब प्रश्न खड़ा कर दिया था करीम ने आलम के सामने। आखिर वह शॉल की ओट में अपने कटे हाथ को छुपायेगा भी कब तक? हालाँकि वह सारा काम बायें हाथ से करता रहा है, पर दोस्त से मिलाने के लिए तो दायें हाथ ही चाहिए। आलम सोचता रहा।

लेकिन करीम अधिक रुक नहीं सका। उसने झट से आलम के शॉल को खींच लिया और अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

पर यह क्या.....? आलम के बुशर्ट की बाँह किसी उदास चेहरे की भाँति लटकी हुई थी। उसका हाथ कहाँ गया? क्या कोई दुर्घटना हो गई? या फिर कुछ और....। करीम की आँखें विस्मय से फैलती जा रही थी। कुछ भी मत सोचो मेरे मित्र! इसमें क्यों अटक रहे हो? मैं आज इतना प्रसन्न हूँ कि दुनियाँ की सारी दौलत मेरे चरण चूम रही है। तुम्हें स्वस्थ देखकर मैं फूला नहीं समा रहा हूँ। सचमुच मैं धन्य हो गया हूँ मित्र! धन्य हो गया हूँ।

करीम की खुशी इस पीड़ा के नीचे दब रही थी कि वह जिस हाथ की खुशी में नाच रहा है वह उसके दोस्त का ही हाथ है। तू कितना दुष्ट है, तुझे धिक्कार है करीम! तुमने इस दोस्ती का कुफायदा उठाया है। करीम का अंतस् तिलमिला उठा। वह कुछ कहना चाहकर भी कह नहीं पाया।

मित्र! आज तक हम लोग सुनते आए हैं कि दोस्ती में दो देह, दिल एक हुआ करता है पर हमारी दोस्ती ने इस ऊँचाई पर आरोहण कर लिया है जहाँ दिल भी एक और देह भी एक हो जाए। जो हाथ तुम्हारा वही मेरा और जो मेरा वही तुम्हारा। इस प्रसंग में तुम्हें गौरव होना चाहिए करीम! न कि चिन्ता। आलम ने गंभीरता को चुहल में बदलने की कोशिश की।

आलम! मैं सचमुच धन्य हूँ जो मुझे तुम्हारे जैसा दोस्त मिला, कहते हुए करीम ने आलम को गले लगा लिया।

दूसरे दिन शमा को किसी ने फोन पर बताया कि वह चिन्ता न करे। आलम कुछ घायल हुए हैं, हॉस्पिटल में भर्ती हैं, इलाज चल रहा है और बहुत शीघ्र ही स्वस्थ होकर शमा के पास पहुँच रहे हैं। शमा को पूर्ण निश्चिन्त रहना है, अपने से ज्यादा उस नन्हें प्राणी का खयाल रखना है।

शमा ने बहुत प्रयास किया कि फोन कहाँ से आया है? और कौन कर रहा है पर वह असफल रही। आखिर वह कौन है जो मक्का में मुझे और आलम को जानता है? जो आलम की इस कदर देखभाल भी कर रहा है और मेरी सहायता भी....पर शमा की समझ में कुछ भी नहीं आया।

कुछ दिनों बाद जब आलम स्वस्थ होकर घर आया तो उसके साथ नीरु भी थी।

अरे नीरु तुम! आलम के साथ! शमा ने विस्मयभरी आवाज में पूछा। क्या तुम्हें पता था कि आलम हजयात्रा में गए हैं? क्या तुम भी वहाँ गई थीं? करीम कहाँ है? न जाने एक ही श्वास में शमा ने कितने प्रश्न पूछ डाले। उसकी आँखों में एक शिकायत भी थी कि अगर नीरु को सब पता था तो उसने शमा से यह सब क्यों छुपाया। वह आलम को इस कदर देख रही थी मानों कभी देखा ही न हो।

जिस दिन अखबार में यह खबर पढ़ी, करीम अपने आपको रोक नहीं पाए। उन्हें पता था इस बार आलम भी हज यात्रा में गए हैं। तथा शमा मां बनने वाली है। वे तत्काल वहाँ से रवाना हो गए। उनके आलम को कुछ हो जाए, यह उन्हें सह्य नहीं हो सकता था। कुछ ही घण्टों में वे वहाँ पहुँच गए और काफी देर तक पूछताछ करने के बाद करीम को आलम हॉस्पिटल के एक वार्ड में मिले पर वह बेहोश थे। नीरु लगातार कहती ही जा रही थी।

आलम इस कदर झुलस गए थे कि उनकी चमड़ी की तीनों परतें जलकर राख हो गई। उसकी आँतें व हड्डियाँ बाहर झाँक रही थीं, उन पर कोई आवरण नहीं रहा था। आलम की हालत बहुत खराब थी पर करीम ने साहस नहीं खोया। उसने शमा को फोन कर निश्चिन्त रहने का संकेत देकर अपने

पूरे परिवार को वहाँ बुला लिया, पर उसने अपना नाम व पता शमा को शायद इसीलिए नहीं बताया कि वह स्वयं वहाँ पहुँचने की जिद न करे। लेकिन करीम को जितनी आलम की चिन्ता थी उससे भी अधिक गर्भवती शमा की भी। वह उसे हर खतरे से बाहर रखना चाह रहा थां

डॉक्टर हैरान था यह सुनकर कि आप मेरी त्वचा की परत उतारकर आलम की काया पर मढ़ दे। वह अपने दोस्त की देह पर प्लास्टिक त्वचा का प्रत्यारोपण नहीं करवाना चाहता....लेकिन अब करीम कहाँ है? नीरु की बात के बीच में ही शमा ने प्रश्न किया।

वे अभी भी हॉस्पिटल में हैं। मेरी अम्मा व अब्बाजान उनके पास हैं। नीरु करीम को छोड़कर यहाँ आई है, इसका एकमात्र कारण करीम की इच्छा है। वे चाहते थे कि मैं स्वयं जाकर आलम को तुम्हें सौंपूँ। कहते कहते नीरु की आँखें भर आईं।

शमा की आँखों से लगातार आंसू बह रहे थे। आलम की आँखों के पोर भी गीले थे। वह स्वयं ही कुछ विस्मित सा होकर सुन रहा था। जब नीरु ने अपनी बात को समाप्त किया तो मानो एक झटके के साथ उसकी चेतना लौटी।

लेकिन भाभीजान! आप मेरे पास इतने दिन रहीं। आपने कभी नहीं बताया कि करीम की त्वचा ही मेरी हड्डियों का आवरण बनी है। वह भी उसी हॉस्पिटल में हैं। आपने तो कहा था कि आवश्यक कार्य के कारण वहीं रुका हुआ है और उसने आप सबको मेरे लिए भेजा है। क्या यह सब असत्य ही था।

हाँ आलम भैया! करीम नहीं चाहते थे कि मैं यह सब आपको बताऊँ। जब तक आप स्वस्थ होकर शमा से मिल न लें तब तक मुझे इस सत्य को उजागर करने की अनुमति नहीं थी।

शमा को करीम किसी खुदा से कम नजर नहीं आ रहा था। उसका हृदय करीम के प्रति श्रद्धा से लबालब भर गया था। क्योंकि दोस्ती में कोई ऊँचा या नीचा नहीं हो सकता। अगर दोस्ती के दोनों पलड़ों में समानता न हो तो उस व्यवहार को दोस्ती नाम से पुकारा भी नहीं जा सकता।

72, कैलाश पार्क-अर्थला,
मोहननगर-201007 (गाजियाबाद-उ.प्र.)

कमर दर्द और प्रेक्षा चिकित्सा :2:

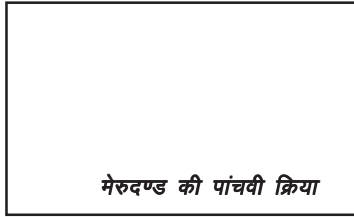
मुनि किशनलाल

पांचवीं क्रिया

स्थिति : दोनों पैरों के घुटनों को मोड़ें। दोनों पैरों के बीच इतना फासला रहे कि एक पैर का घुटना दूसरे पैर की तली में ला सकें।

1. पूरक करते हुए दाएं पैर के घुटने को बायें पैर की तली में लगाएं। शरीर बायीं ओर करवट लेगा। गर्दन दायीं ओर घुमाएं। श्वास छोड़ते हुए पूर्व स्थिति में आ जाएं।

2. अब पूरक करते हुए बाएं पैर के घुटने को दायें पैर की तली में लगाएं। शरीर दायीं ओर करवट लेगा जबकि गर्दन बायीं ओर घुमाएं। वापिस श्वास छोड़ते हुए पूर्व स्थिति में आ जाएं।



मेरुदण्ड की पांचवी क्रिया

छठी क्रिया

स्थिति : शरीर की स्थिति पूर्ववत् रहेगी। छठी क्रिया की स्थिति में दोनों पैर के घुटनों को मोड़कर पांव भूमि पर सीधा रखें, ध्यान रहे पैर नितम्बों से सटे रहें।

1. पूरक कर दोनों घुटनों को बाईं ओर भूमितल की ओर ले जाएं, शरीर भी बायीं ओर करवट लेगा। गर्दन को दायीं ओर घुमाएं। 10 श्वास का रेचन करते हुए पूर्व स्थिति में आ जाएं।



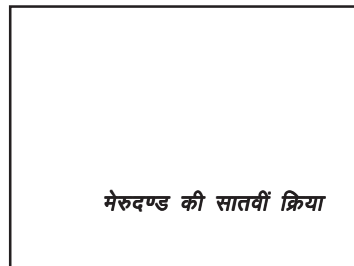
मेरुदण्ड की छठी क्रिया

2. पूरक कर दोनों घुटनों को दाहिनी ओर भूमि से स्पर्श कराएं, शरीर दाहिनी ओर करवट लेगा। गर्दन बाईं ओर घुमाएं, 10 बार श्वास का रेचन करते हुए मूल स्थिति में आ जाएं।

सातवीं क्रिया :

स्थिति : शरीर की स्थिति पूर्ववत् रहेगी।

1. पूरक कर कमर और नितम्ब के भाग को भूमि से ऊपर उठाकर त्वरित गति से भूमि पर गिराएं। रेचन करें। इस क्रिया को तीन बार दोहराएं, फिर कायोत्सर्ग की मुद्रा में आ जाएं।



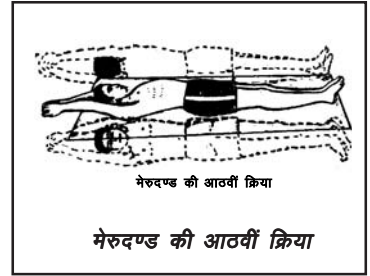
मेरुदण्ड की सातवीं क्रिया

2. एड़ी से लेकर कन्धे तक शरीर को ऊपर उठाएं। एक साथ त्वरित गति से भूमि पर गिराएं।

आठवीं क्रिया :

स्थिति : पीठ के बल लेटें।

1. हाथों को सिर की ओर फैलाकर श्वास भरें। बायीं ओर शरीर को गोलाकार घुमाएं। श्वास छोड़कर पीठ के बल सीधें हो जाएं,



मेरुदण्ड की आठवीं क्रिया

2. श्वास भर कर दायीं ओर शरीर को गोलाकार बैलन की तरह घुमाएं। श्वास भरें, रेचन कर पीठ के बल लेटें। शरीर शिथिल छोड़ दें। क्रिया की पांच आवृत्ति करें। (सम्पूर्ण शरीर की इससे मालिश हो जाती है)।

लाभ— मेरुदण्ड की इन आठ क्रियाओं के नियमित अभ्यास से सम्पूर्ण शरीर की मालिश हो जाती है। पेट, सीने एवं कमर की विकृतियां दूर होती हैं।

भुजंगासन

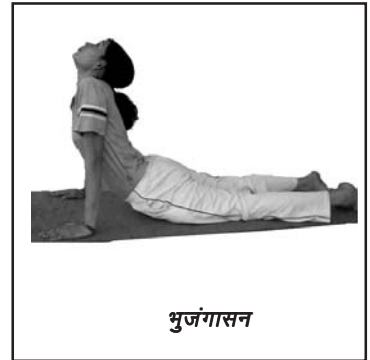
1. आसन पर पेट के बल लेटें। श्वास भरते हुए गर्दन ऊपर उठाएं।

2. इसी स्थिति में फुफकार करते हुए श्वास को मुंह से निकालें।

3. श्वास भरते हुए हाथों के बल पर शरीर को पेड़

तक ऊपर उठा कर आकाश की ओर देखें।

4. फुफकार करते हुए श्वास का मुंह से रेचन करें। मस्तक को भूमि पर लगाएं।



भुजंगासन

नोट : भुजंगासन को तीन प्रकार से किया जाता है। पहले प्रकार में हथेलियों को पसलियों से एक फुट की दूरी पर रखें, फिर भुजंगासन करें। दूसरे प्रकार में आधा फुट की दूरी पर रखें। तीसरे प्रकार में पसलियों से सटाकर रखें।

लाभ :

1. सीना मजबूत होता है।
2. गर्दन और पीठ (सर्वाइकल) का दर्द दूर होता है।
3. मेरुदण्ड लचीला होता है।
4. क्रोध शान्त होता है।

मत्स्यासन :

1. आसन पर पीठ के बल लेटकर पद्मासन लगाएं।
2. दोनों हथेलियां कंधे के पास रखें। श्वास भरते हुए कमर को ऊपर उठाएं, गर्दन को मोड़ें। दोनों हाथों से पैरों के अंगुठों को पकड़ें। श्वास सामान्य रहे।



मत्स्यासन

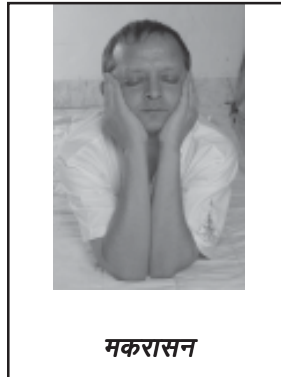
3. श्वास भरते हुए पुनः पूर्व स्थिति में आ जाएं। (अगर कठिनाई हो तो हाथों का सहारा ले सकते हैं।)
4. पद्मासन खोलें। कायोत्सर्ग करें।

लाभ :

1. सीना मजबूत और कमर लचीली होती है। कमर के दर्द में लाभ होता है।
2. आँख, कान, नाक और सिर के दोष दूर होते हैं।
3. स्थिरता बढ़ती है।
4. स्वप्न दोष दूर होता है।

करासन :

1. आसन पर पेट के बल लेटें। दोनों कुहनियों को सीने के सामान्तर रखें।
2. दोनों हथेलियों को टुड्डी और जबड़ों पर टिकाएं। पैरों के अंगूठें मिले रहें। एड़ियां खुली हों।
3. दोनों हाथों को सिर के आगे रखें। गर्मी में दाएं कान को नीचे रखें।
4. आराम की स्थिति में आएँ।



मकरासन

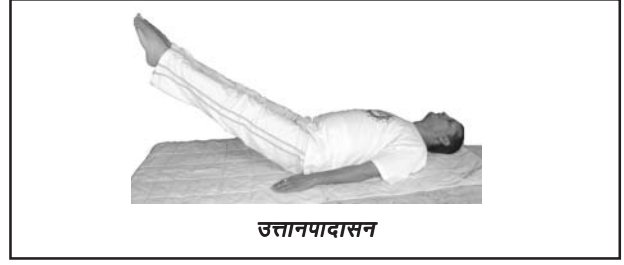
लाभ :

1. एकाग्रता बढ़ती है।
2. कमर और पेट को आराम मिलता है।
3. कब्ज दूर होती है।
4. पैरों और कमर दर्द में लाभकारी है।

उत्तानपादासन :

1. आसन पर पीठ के बल लेटें। श्वास भरते हुए घुटनों को बिना मोड़े 30 डिग्री तक ऊपर उठाएं।

2. श्वास छोड़ते हुए पैरों को धीरे-धीरे नीचे लाएं।



उत्तानपादासन

3. श्वास भरते हुए पैरों को 60 डिग्री ऊपर उठाएं।
4. श्वास छोड़ते हुए पैरों को धीरे-धीरे नीचे लाएं।

लाभ :

1. पेट और कमर के विभिन्न दोष दूर होते हैं।
2. धरण (नाभिकंद) सन्तुलित होती है।
3. पेट की अतिरिक्त चर्बी कम होती है।
4. हर्निया को व्यवस्थित करता है।

प्राणायाम :

सूर्यभेदी प्राणायाम :

1. ध्यानासन में सुखपूर्वक बैठें। बाएं नथुने को बन्द करें। दाएं नथुने से श्वास लें।
2. दाएं नथुने से श्वास का रेचन करें।
3. दाएं नथुने से श्वास लें।
4. बाएं नथुने से रेचन करें।

लाभ :

1. शरीर में स्फूर्ति आती है।
2. सर्दी, जुकाम, दमें और कमर दर्द में लाभदायक है।
3. शरीर में सक्रियता और गर्मी लाता है।
4. ध्यान में मन लगता है।

सूर्यभेदी प्राणायाम

सूक्ष्म भस्त्रिका :

सुखासन या पद्मासन की मुद्रा में बैठें। शरीर को स्थिर, शिथिल और तनावमुक्त करने के लिए कायोत्सर्ग करें। 2 मिनट के अभ्यास से शरीर को पूर्ण शिथिल कर लें। मेरुदण्ड को सीधा रखें।

अब पूरक और रेचन अर्थात् श्वास लेने

सूक्ष्मभस्त्रिका

और छोड़ने की क्रिया प्रारम्भ करें। पूरक की अपेक्षा रेचन की प्रधानता रहे। शरीर हिले-डुले नहीं। पूर्ण स्थिर रहें। स्थिरता की अवस्था में सूक्ष्म रूप से श्वास-प्रश्वास (पूरक-रेचन) चलता रहे। ध्यान दर्द के स्थान पर केन्द्रित करें। इससे शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति सक्रिय होकर दर्द के स्थान पर पहुंचेगी और उसे स्वस्थता की ओर ले जायेगी। कुछ दिनों के प्रयोग से दर्द में लाभ अनुभव होने लगेगा।

(अगले अंक में लगातार.....)



बढैं संयम पथ पर



लोकमान्य गोल्छा

अध्यक्ष
गोल्छा ऑर्गेनाइजेशन
एवं
समस्त गोल्छा परिवार

गोल्छा हाउस, काठमांडो (नेपाल)

फोन नं. : 4250001/4249939 (D)

फैक्स : 00977-1-4249723

अहिंसा यात्रा मेवाड़ के विभिन्न क्षेत्रों में

सथाणा, १७ मार्च। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण सथाणा राजकीय माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आचार्यश्री ने स्कूली बच्चों को ईमानदारी और नशामुक्ति जैसे संस्कारों को जीवन में विकसित करने की प्रेरणा दी। विद्यालय के प्रधानाध्यापक शान्तिनाथ भंडारी ने आचार्यश्री के स्वागत में अपने उद्गार व्यक्त किए। मुनि विजयकुमार ने विद्यालय के अध्यापकों को अहिंसा यात्रा की जानकारी दी।

विजयनगर में भव्य स्वागत :

१८ मार्च। आचार्य महाश्रमण अजमेर जिले के अन्तिम क्षेत्र विजयनगर पधारे। यहां के वीर तेजाजी चौक पर स्थानीय लोगों ने आचार्यश्री की अगवानी की। तेजाजी चौक से प्रारंभ हुआ जुलूस अहिंसा रैली के रूप में सथाणा बाजार, महावीर बाजार, बापू बाजार, बालाजी मंदिर रोड एवं मिल चौक होते हुए प्रवास स्थल महाराजा पैलेस पहुंचा। पैलेस के मालिक जीवराज संचेती ने भी आचार्यश्री का स्वागत किया। आज की अहिंसा रैली में हजारों लोग सम्मिलित थे। पूरे नगर में उत्साह और उल्लास का वातावरण रहा। कार्यक्रम की व्यवस्था में अनेक वरिष्ठ व्यक्ति और संस्थाएं सक्रिय रहीं।

कृषि उपज मंडी परिसर में राजस्थान के संसदीय सचिव व स्थानीय विधायक ब्रह्मदेव कुमावत, नगरपालिकाध्यक्ष धर्मीचंद खटेड़, स्थानकवासी संघ के अध्यक्ष सोहनलाल तातेड़, मंत्री ज्ञानसिंह सांखला, मूर्तिपूजक संघ के मंत्री टीकमचन्द गोखरू, दिगम्बर समाज के महावीर प्रसाद पाटोदी, भीमसिंह संचेती, महावीर इंटरनेशनल के अध्यक्ष विनोद चोरड़िया, लार्ड्स क्लब के अध्यक्ष राजेन्द्र पामेचा, भारत विकास परिषद के मंत्री ओमप्रकाश नागोरी तथा अग्रवाल, माहेश्वरी, माली आदि विभिन्न समाजों के प्रमुख लोग बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने अपने वक्तव्य में

कहा आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व भगवान महावीर के सिद्धान्त कितने प्रासंगिक थे, यह हम नहीं जानते, किन्तु वर्तमान समस्याओं के संदर्भ में उनके सिद्धान्त आज बहुत प्रासंगिक हैं।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा आचार्य की दृष्टि से अहिंसा और विचार की दृष्टि से अनेकान्त का बहुत महत्त्व है। युग की नब्ज को पहचानने वाले आचार्यों ने 'जैन एकता' को नया रूप दिया। आचार्य तुलसी ने जैन एकता की दिशा में बहुत प्रयत्न किया। आचार्य महाश्रमण अपनी पिछली पूरी परंपरा का वहन करते हुए जैन एकता के संदेश को लेकर यात्रा कर रहे हैं।

आचार्य महाश्रमण ने कहा 'गुण और अवगुण हर व्यक्ति के जीवन में देखने को मिल सकते हैं। केवल परदोषदर्शी धर्म की आराधना नहीं कर सकता। सद्गुणों से व्यक्ति सज्जन और दुर्गुणों से दुर्जन बनता है। हर व्यक्ति का यह लक्ष्य रहे कि अवगुणों का परिहार कर सद्गुणों को जीवन में स्थान दूं।

आचार्यश्री ने आगे कहा विजयनगर क्षेत्र हमारे लिए नया है। ज्ञात हुआ कि आज से छप्पन वर्ष पूर्व गुरुदेव तुलसी का यहां पदार्पण हुआ था। हम एक मिशन के तहत अहिंसा यात्रा के साथ यहां आए हैं। यहां के लोगों में श्रद्धा है, सम्मान का भाव है। संसदीय सचिव कुमावत एवं नगरपालिकाध्यक्ष धर्मीचन्द खरोड़ ने अपने उद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

कार्यक्रम के पश्चात नगर की न्यू लाइट कॉलोनी में प्रस्तावित तेरापंथ भवन के शिलान्यास स्थल पर पधार कर आचार्यश्री ने मंगलपाठ सुनाया। विजयनगर में छप्पन वर्ष के बाद तेरापंथ के आचार्य का आगमन हुआ। तेयुप उधना-सूरत द्वारा निर्मित नशा मुक्ति विषयक डाक्युमेंट्री फिल्म प्रदर्शित की गई।

गुलाबपुरा में होली चातुर्मास

१९ मार्च। विजयनगर से तीन किमी. का विहार कर आचार्य महाश्रमण गुलाबपुरा पधारे। साथ चल रहे सैकड़ों लोगों के साथ अजमेर-मेरवाड़ा की खारी नदी को पार कर पूज्यप्रवर ने मेवाड़ की सीमा में प्रवेश किया। भीलवाड़ा जिले की सीमा में प्रवेश करते ही उपस्थित लोगों ने उच्च स्वर में जयघोष किया। इस अवसर पर नदी के उस पार निर्मित 'अहिंसा मार्ग' का आचार्य महाश्रमण की पावन सन्निधि में राजस्थान के पर्यावरण और खनिज राज्यमंत्री रामलाल जाट ने उद्घाटन किया। विशाल एवं व्यवस्थित जुलूस के साथ आचार्यश्री नानक जैन छात्रावास में स्थित गुरु पन्ना गर्ल्स कॉलेज में पधारे।

आचार्य महाश्रमण ने जनमेदिनी को संबोधित करते हुए कहा 'आज हम फिर मेवाड़ आए हैं और सुखसातापूर्वक आए हैं। हमारा भ्रमण निश्चित उद्देश्य के साथ चल रहा है। मैं मेवाड़ में पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञ की अहिंसा यात्रा को पूरा करने के लिए आया हूं। इसका मुख्य लक्ष्य है अनुकंपा की चेतना का विकास। इसके चार आयाम हैं साम्प्रदायिक सौमनस्य, कन्या भ्रूणहत्या की रोकथाम, नशामुक्ति और नैतिक मूल्यों की चेतना का विकास। मेवाड़ में प्रवेश के साथ ही एक मंजिल हमने प्राप्त कर ली। हमारी अभीप्सा है मेवाड़ प्रवास निष्पत्तिमूलक बने।

आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा मेवाड़ तेरापंथ की जन्मभूमि है। मुझे सात्विक प्रसन्नता है कि हम अपने घर आए हैं। गुरुदेव तुलसी ने अपनी मेवाड़ यात्रा के दौरान परिवारों में सौहार्द और सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया था। हमारी मेवाड़ यात्रा में सार्वजनिक कार्यों के अतिरिक्त समाज के लिए विशेष रूप से कार्य करना है। इस दृष्टि से तीन कार्यों का चिंतन किया है १. पारिवारिक सौमनस्य, २. नशामुक्ति, ३. भ्रूणहत्या निरोध। इनके अतिरिक्त

अन्य कार्य यथासमय निर्दिष्ट किए जा सकेंगे। कार्यक्रम का संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

२० मार्च। गुलाबपुरा प्रवास के दूसरे दिन प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यश्री के प्रवचन से पूर्व साध्वी संगीतप्रभा ने सुमधुर गीत का संगान किया। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने कहा 'हमारे भीतर अनंत शक्ति है। उसे जगाने के लिए आत्मसाक्षात्कार की दिशा में प्रस्थान करना होगा। आत्मसाक्षात्कार से ही अनंत शक्ति, अनंत आनंद और अनंत शांति की प्राप्ति हो सकेगी।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने उपस्थित जनमेदिनी को शांतिपूर्ण, उद्देश्यपूर्ण, रचनात्मक और प्रगतिशील जीवन जीने की प्रेरणा दी।

आचार्य महाश्रमण ने जनमेदिनी को संबोधित करते हुए कहा 'जहां कुटिलता होती है, वहां जीवन के हर पक्ष का हास होने लगता है। साधनारत व्यक्ति का जीवन एक बच्चे की भांति सरल होना चाहिए। आचार्यश्री ने इस अवसर पर चैतन्य केन्द्रों पर रंगों के ध्यान के साथ नमस्कार महामंत्र का प्रयोग करवाया और जल के उपभोग के संयम की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया। आचार्य महाश्रमण के दो दिवसीय गुलाबपुरा प्रवास में अनेक क्षेत्रों के लोग दर्शनार्थ आए। भीलवाड़ा के लगभग छह सौ लोग छह बसों में व अन्य गाड़ियों से गुलाबपुरा पहुंचे। इन्दौर, रतलाम, पेटलावद, केसूर, झाबुआ, बाजना, जावद, झकनावद, मन्दसौर, रायपुरिया, करवड़, उज्जैन, बामनिया आदि मालवा क्षेत्र के २०० भाई-बहन गुरुदर्शनार्थ पहुंचे और मालवा पधारने की प्रार्थना की।

२१ मार्च। गुलाबपुरा में दो दिवसीय प्रवास संपन्न कर आचार्यश्री ने गागेड़ा के लिए विहार किया। मध्यवर्ती गांव के लोगों के अनुरोध पर आचार्यश्री 'खारी का लाम्बा' गांव में पधारे। आचार्य महाश्रमण गांव के

अहिंसा यात्रा में नशामुक्ति अभियान

जैन मंदिर और स्थानक में भी पधारे। यहां के वर्धमान उच्च प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा ग्रामीणों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया।

आचार्य महाश्रमण ने गागेड़ा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा भगवान महावीर ने बहुत सूक्ष्मता से अहिंसा-दर्शन को प्रस्तुत किया। उसे बहुत गहराई से समझने की जरूरत है। प्राणों का अतिपात न करना ही अहिंसा नहीं है, अप्रमत्त रहना भी अहिंसा है। जहां प्रमाद है, वहां हिंसा है। अप्रमत्त व्यक्ति अहिंसक होता है। बढ़ती पारिवारिक हिंसा के संदर्भ में लज्जा, मर्यादा, संयम और शालीनता की प्रेरणा देते हुए आचार्यश्री ने कहा 'धर्म के मर्म को समझने वाले व्यक्ति का जीवन अनासक्त और संयमित होता है। इन्द्रिय निग्रह और पदार्थ के उपभोग के प्रति उसका संयम बढ़ता जाता है।'

अहिंसा यात्रा के उद्देश्यों की अवगति देते हुए आचार्यश्री ने कहा 'अहिंसा यात्रा का मुख्य उद्देश्य है अनुकंपा की चेतना का विकास। जहां अनुकंपा की चेतना जागृत है, वहां समाज की व्यवस्था अच्छी रहती है। हम दूसरों को कष्ट न दें और स्वयं कष्ट सहन करें।'

२२ मार्च। ६ किमी. का विहार कर आचार्य महाश्रमण खेजड़ी गांव स्थित राजकीय माध्यमिक विद्यालय में पधारे। गांव के वरिष्ठ नागरिकों ने आचार्यश्री की अगवानी की। आचार्य महाश्रमण ने गांव के अनेक घरों का स्पर्श किया। प्रातःकालीन कार्यक्रम में पूर्व सरपंच बाबूराम चौधरी, पारस बाबेल आदि ने आचार्यश्री का भावपूर्ण स्वागत किया।

आचार्य महाश्रमण ने कहा सभी प्राणी सुखपूर्वक जीवन जीना चाहते हैं। अहिंसा की अनुपालना सुख प्राप्ति का उपाय है। पापाचरण से बचाव के द्वारा ही आत्मिक और शाश्वत सुख की प्राप्ति संभव है।

अनेक लोगों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया।

२३ मार्च। दस किमी. का विहार कर आचार्य महाश्रमण शंभूगढ़ पधारे। मध्यवर्ती दांतड़ा ग्राम में ग्रामवासियों के बीच आचार्यश्री का संक्षिप्त प्रवचन हुआ। अनेक ग्रामीणों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। शंभूगढ़ गांव में पदार्पण से पूर्व ही सैकड़ों-सैकड़ों लोग अगवानी में पहुंच गए। आसपास के क्षेत्रों के युवक बड़ी संख्या में दर्शनार्थ और प्रवचन श्रवण के लिए पहुंचे।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा एवं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने अपने अभिभाषण में आचार्यश्री के नेतृत्व में चल रही अहिंसा यात्रा के उद्देश्यों की चर्चा की। शंभूगढ़ की सरपंच शांतिदेवी सेन ने आचार्यश्री का भावभीना स्वागत किया।

आचार्य महाश्रमण ने कहा दुनिया में सत्य जीवित है तो असत्य भी चल रहा है। सत्य व असत्य दोनों प्रकार के संभाषण करने वाले लोग हैं। साधक हर स्थिति में असत्य संभाषण से बचे यह काम्य है। गृहस्थ कभी स्वयं के लिए, परिवार के लिए अथवा अन्य किसी के लिए झूठ बोल देता है। जरूरी है व्यक्ति अभय बने, जिससे अहिंसा और सत्य की साधना समुचित रूप से होती रहे।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित लोगों ने विवाह आदि समारोह के भोज में पन्द्रह आइटम से अधिक बनाने का त्याग किया। संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

नशामुक्ति अभियान

आचार्य महाश्रमण की अहिंसा यात्रा में जहां साम्प्रदायिक सौहार्द का अद्भुत वातावरण देखने को मिल रहा है, वहीं नशामुक्ति अभियान भी विशिष्ट सफलता का वरण कर रहा है। आचार्यश्री की प्रेरणा से प्रभावित हजारों लोग अब तक नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार कर चुके हैं। आचार्य महाश्रमण बहुधा ग्रामीणों को

संबोधित कर कहते हैं हमें नोट, वोट, प्लॉट और कोट नहीं, आपके जीवन की खोटी चाहिए। इससे आपका जीवन अच्छा बनेगा और हमारे लिए भेंट हो जाएगी। आचार्यश्री की मृदु और मधुर प्रेरणा ग्रामीणों पर जादू-सा असर करती है और वे जब से बीड़ी, सिगरेट अथवा तम्बाकू या गुटखा के पाउच निकाल कर फेंक देते हैं। त्याग के प्रति उनकी दृढ़ता का भाव उनमें स्पष्ट दिखाई देता है। नशामुक्ति के इस अभियान में अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल के निर्देशन में अणुव्रत महासमिति और अणुव्रत शिक्षक संसद के कार्यकर्ता भी

प्रयासरत हैं। कार्यकर्ताओं द्वारा अब तक नशामुक्ति के हजारों संकल्प पत्र भरवाए जा चुके हैं।

आचार्य महाश्रमण के मेवाड़ प्रवेश के बाद से तेयुप उधना के सदस्य भी यात्रा में प्रयासरत हैं। ये युवक आचार्यश्री के पदार्पण से पूर्व गांवों में जाते हैं और नशामुक्ति की प्रेरणा देने हेतु बनाई गई वीडियो फिल्म दिखा कर ग्रामीणों के बीच नशामुक्ति का माहौल बनाने का सफल प्रयास करते हैं। आचार्य महाश्रमण की यह अहिंसा यात्रा न केवल तेरापथ और जैन समाज के लिए, अपितु जन-जन के लिए वरदान सिद्ध हो रही है।

भंवरलाल मूंदड़ा का स्वर्गवास



'अणुव्रत सेवी' भंवरलाल मूंदड़ा का २३ मार्च २०११ को छपर में स्वर्गवास हो गया। स्व. मूंदड़ा छपर में अणुव्रत कार्यों के सुचारु रूप से संचालन में संलग्न थे। स्व. भंवरलालजी मूंदड़ा को मैं पिछले ५० वर्षों से जानता हूँ। वे बोलचाल में कुछ कड़े थे परन्तु खरे एवं पूर्ण सत्यवादी थे, अतः हर जगह आदर ही पाते थे।

स्व. मूंदड़ाजी अपनी जवानी काल में ही समाज सुधार के कार्यों में लग गये। जहां भी कोई बुराई नजर आती, उस पर प्रहार करने व उसे दूर करने का भरसक प्रयास करते थे। अपने इसी गुण की वजह से वे अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी के सम्पर्क में आये। आचार्यश्री से उनका सम्पर्क बहुत गहरा होता गया एवं अणुव्रत आंदोलन से जुड़ गये।

स्व. मूंदड़ाजी ने अपना व्यवसाय छोड़कर पूर्णतया गांधीवादी, सर्वोदय, गौशाला एवं इसी तरह की विभिन्न प्रवृत्तियों में स्वयं को पूर्ण समर्पित कर लिया। छपर सर्वोदय भवन उन्हीं की देन है, जहां पर सिलाई व गृह उद्योग जैसी महिला उत्थान की कई प्रवृत्तियां चलाई जा रही हैं। मूंदड़ाजी ने अणुव्रत का काफी कार्य किया एवं उन्हें अणुव्रत अनुशास्ता द्वारा "अणुव्रत सेवी" का संबोधन मिला। वे चुरू जिला अणुव्रत समिति के अध्यक्ष भी रहे एवं नशामुक्ति व हरिजन उत्थान के लिए भरसक प्रयास किया। मुझे स्वयं को तो अपना छोटे भाई की तरह स्नेह देते थे, मुझे उनका हमेशा स्मरण रहेगा।

अणुव्रत परिवार उनके कार्यों को हमेशा याद रखेगा। ऐसे कर्मयोगी का चले जाना समाज की अपूरणीय क्षति है। उनकी आत्मा को उच्चतम गति मिलेगी, ऐसा हमारा विश्वास है।

विजयराज सुराणा

महामंत्री : अणुव्रत महासमिति

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम डॉंबिवली में

डॉंबिवली। गत दिनों पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने डॉंबिवली 'अहिंसात्मक रोजगार प्रशिक्षण केन्द्र' द्वारा लगायी गयी प्रदर्शनी का अवलोकन किया। केन्द्र निदेशक आलोक भट्टाचार्य ने डॉ. कलाम का स्वागत करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ एवं आचार्य महाश्रमण द्वारा प्रवर्तित 'अहिंसा समवाय मंच' तथा 'अहिंसात्मक रोजगार प्रशिक्षण केन्द्र' जैसे अखिल भारतीय कार्यक्रमों के उद्देश्यों एवं उपलब्धियों से अवगत कराया। इस केन्द्र को एम.जी. फाउंडेशन, कोलकाता ने वर्ष 2009 के 'आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा प्रशिक्षण समाज' से पुरस्कृत किया था। ज्ञातव्य है कि डॉ. कलाम पंद्रह हजार छात्र-छात्राओं से सीधी बातचीत के लिए डॉंबिवली आये थे। इस अवसर पर डॉंबिवली 'अहिंसात्मक रोजगार प्रशिक्षण केन्द्र' ने प्रदर्शनी में अपने प्रशिक्षणार्थियों द्वारा हस्तनिर्मित सामग्री तथा विभिन्न हस्तशिल्पों को दर्शाया था।

डॉ. कलाम ने ऐसे केन्द्रों के

जीवन विज्ञान द्वारा उज्ज्वल भविष्य का निर्माण

तोशाम (भिवानी) 12 मार्च। अणुव्रत जीवन विज्ञान अभियान के तहत मुनि विजयराज ने कैप्टन हाई स्कूल के छात्र-छात्राओं एवं अध्यापकों को संबोधित करते हुए कहा बचपन में ही अच्छे संस्कार जगाना जरूरी है। छात्रों को पुरुषार्थ का पाठ पढ़ाना जरूरी है। अतः शिक्षा के साथ अच्छे संस्कारों का निर्माण होना जरूरी है। जीवन विज्ञान के द्वारा शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक एवं भावनात्मक विकास होगा। प्रेम, मैत्री एवं सहनशीलता तथा विनम्रता का विकास हो सकेगा। परोपकार तथा सेवा भाव के संस्कार उदित होंगे। मुनिश्री ने छात्रों को कुसंग एवं दुर्व्यसनों से बचने की प्रबल प्रेरणा दी तथा मादक एवं नशीले पदार्थों से

माध्यम से बेरोजगारों को रोजगारक्षम बनाने और वंचित तबकों में अहिंसा के प्रचार-प्रसार करने में आचार्य महाश्रमण की महती भूमिका को रेखांकित करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ की स्मृतियों को प्रणाम किया। आचार्य महाप्रज्ञ के साथ संयुक्त लेखक के तौर पर लिखी अपनी पुस्तक 'द फैमिली एंड द नेशन' और इसके हिंदी संस्करण 'सुखी परिवार समृद्ध राष्ट्र' की प्रतियों को प्रदर्शनी में देखकर डॉ. कलाम खुश हुए।

कार्यक्रम के व्यवस्थापक, लेखक सुभाष मंडराई, माधुरी मुंबरकर और लीला पांचाल ने डॉ. कलाम को केन्द्र की गतिविधियों से अवगत कराया। इस अवसर पर रमेशचंद्र मादरेचा, सोहनलाल सिंघवी, राजकुमार चपलोत, कांतिलाल कोठारी, प्रकाश कच्छारा, विनोद सिंघवी, भगवतीलाल पटवारी, लीला पटवारी, सुधा सिंयाल, किरण कोठारी सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

दूर रहने का आत्मसाक्षी से संकल्प करवाये।

इस अवसर पर मुनिश्री ने स्थानीय अग्रसेन वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, रा. मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय तथा बी.एम. मिडिल स्कूल के छात्रों एवं शिक्षकों को जीवन विज्ञान का प्रशिक्षण दिया एवं योग ध्यान प्राणायाम के वैज्ञानिक प्रयोग भी सिखलाये। 14 स्कूलों सहित कुल 18 स्कूलों के करीब 9889 छात्र एवं 342 शिक्षक जीवन विज्ञान शिक्षण से लाभान्वित हुए और व्यसनमुक्ति संकल्पों को ग्रहण किया। संस्था-प्रधानों ने आभार प्रगट कर ऐसे उपक्रमों की महत्ता की उपयोगिता बतलाई। इस अवसर पर अणुव्रत प्रचार-प्रसार सामग्री भेंट की गयी।

वरिष्ठ साहित्यकार सुषमा जैन का सम्मान

सहारनपुर। स्वस्थ पत्रकारिता एवं नैतिक मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा में प्रयासरत वरिष्ठ साहित्यकार-पत्रकार सुषमा जैन को उच्च कोटि के लेखन हेतु लब्ध प्रतिष्ठित पुरस्कार "सारस्वत सम्मान" से विभूषित किया गया है। यह पुरस्कार उन्हें सुविख्यात साहित्यिक संस्था 'साहित्य सुधा' के तत्वावधान तथा सोफिया पब्लिक हाईस्कूल प्रतापनगर के प्रांगण में आयोजित स्व. एस.पी. गौहर सारस्वत सम्मान समारोह-2011 में 22 मार्च 2011 को अनेक साहित्यकारों, पत्रकारों, बुद्धिजीवियों, संस्था प्रतिनिधियों एवं विशाल जन समुदाय के बीच प्रदान किया गया।

पुरस्कार के अंतर्गत सुषमा जैन को शॉल ओढ़ाकर तथा माल्यार्पण कर श्रीफल, प्रतीक चिह्न एवं प्रशस्ति पत्र भेंट कर उनके कार्यों एवं योगदान की भूरि-भूरि प्रशंसा की गयी। इस अवसर पर कार्यक्रम अध्यक्ष शिवचन्द्र शर्मा आचार्य ने

कहा चारित्रिक विकास, सौहार्द, सद्भाव तथा मैत्री की स्थापना के लिए स्वस्थ एवं रचनात्मक लेखन की नैसर्गिक प्रतिभा की धनी, वरिष्ठ साहित्यकार सुषमा जैन को उक्त पुरस्कार समर्पित करते हुए 'साहित्य सुधा' गौरव का अनुभव करती है। सभी गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में उनके लेखन कार्यों की सराहना करते हुए उन्हें कई अलंकरणों से सुशोभित किया।

इससे पूर्व भी सुषमा जैन को उनके उल्लेखनीय साहित्यिक योगदान हेतु ज्ञानश्री, क्रान्तिश्री, विद्याश्री, डॉ. भीमराव अंबेडकर फेलोशिप-1999, हिन्दी साहित्य रत्न, कलम का सिपाही, पर्यावरणविद्, शहीद उद्यमसिंह क्रान्तिकारी अवार्ड, मूर्धन्य साहित्य मनीषी, लौह महिला, राष्ट्र स्वाभिमान की प्रतीक, अणुव्रत लेखक पुरस्कार आदि अनेक पुरस्कार, सम्मान एवं उपाधियां प्राप्त हुई हैं।

अणुव्रत समिति द्वारा जन जागरण अभियान

अहमदाबाद 12 मार्च। गुजरात राज्य अणुव्रत समिति द्वारा प्रेक्षा विश्व भारती कोबा में समणी विनीतप्रज्ञा के सान्निध्य में स्थानीय सभाध्यक्ष लक्ष्मीलाल बाफना एवं मंत्री मिश्रीलाल को स्कूलों में कार्यक्रम हेतु विद्यार्थी अणुव्रत नियम की तस्वीर, अणुव्रत आचार संहिता के बेनर, विद्यार्थी अणुव्रत नियम के फार्म प्रेक्षा विश्व भारती कोबा में भेंट करते हुए गुजरात राज्य अणुव्रत समिति के अध्यक्ष जवेरीलाल संकलेचा ने कहा आचार्य तुलसी का जन्म शताब्दी वर्ष 2013-2014 में आ रहा है। हमें अभी से एक साथ मिल-जुलकर गुजरात में अणुव्रत आचार संहिता तथा नशामुक्ति अभियान का संचालन किया जा रहा है।

समणी विनीतप्रज्ञा ने कहा गुरुदेव आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन एवं आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रवर्तित अहिंसा समवाय एवं अहिंसा यात्रा जन-जन के जीवन में उपयोगी है। वर्तमान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण द्वारा अहिंसा यात्रा का पुनः श्रीगणेश मानवीय मूल्यों की दिशा में महान उपक्रम है। गुजरात राज्य अणुव्रत समिति द्वारा स्थान-स्थान पर अणुव्रत आचार संहिता के बेनर लगाकर अणुव्रत विचार को जन-जन तक पहुंचाया जा रहा है। अणुव्रत चेतना अभियान को जन-जन तक पहुंचाने में जवेरीलाल संकलेचा, अशोक दूगड़, नटवर कोठारी, महेन्द्र चोपड़ा, रजनीकांत भाई मोदी विशेष योगदान दे रहे हैं।

सिलाई मशीनें एवं पुरस्कार वितरण

गंगापुर, 15 मार्च। अणुव्रत समिति गंगापुर के तत्वावधान में वरिष्ठ उद्योगपति चन्द्रसिंह, अशोक कुमार कोठारी भीलवाड़ा के सौजन्य से रा.उ.प्रा. विद्यालय मैलोनी खेड़ा में सिलाई मशीनें एवं प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि पूनमदेवी मेहता अध्यक्ष नगर पालिका गंगापुर थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता मनोहरलाल वाफणा ने की। विशिष्ट अतिथि डॉ. हीरालाल

श्रीमाली तथा भगवतीलाल नौलखा थे। अतिथियों का स्वागत प्रकाश चन्द्र बोलिया ने किया एवं आभार ज्ञापन रमेश हिरण ने किया। समारोह में अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र गंगापुर द्वारा 22 प्रशिक्षित महिलाओं को उच्च क्षमता वाली सिलाई मशीनें दी गयी। इस अवसर पर 23 विजेता प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन मदनलाल मण्डोवरा ने किया।

जापान के मृतकों को श्रद्धांजलि

उदयपुर, 17 मार्च। अणुव्रत समिति, रोटरी क्लब, महावीर इंटरनेशनल, मुस्कान क्लब उदयपुर, इन्स्टीट्यूट ऑफ नर्सिंग, मास नर्सिंग, एस.एस. इंजीनियरिंग कॉलेज, झील हितेषी मंच, उदयपुर चेम्बर ऑफ कॉमर्स, उदयपुर सेवा समिति एवं गणमान्य नागरिकों द्वारा जापान में आए भूकम्प एवं सुनामी में मृतकों की आत्मा की शान्ति के लिए मोमबत्ती जलाकर एवं दो मिनट का मौन रखकर

फतहसागर की पॉल पर श्रद्धांजलि दी गयी।

श्रद्धांजलि देने वालों में गणेश डागलिया, लक्ष्मण कर्णावट, मोती सिंह खमेसरा, राजेन्द्र सेन, रूपकुमार खुराना, के.जी. गटानी, मनमोहन राज सिंघवी, राजेन्द्र कौर, महेन्द्र तालिया, बी.एल. मेहता, अरविन्द चितौड़ा, डॉ. जयराज आचार्य, डॉ. शोभालाल ओदिव्य सहित नगर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

प्रखंड स्तरीय निबंध प्रतियोगिता

गंगापुर। अणुव्रत समिति गंगापुर के तत्वावधान में उपखंड स्तर पर “आतंकवाद एक समस्या - और समाधान” विषयक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस हेतु 129 प्रतियोगियों के निबंध प्राप्त हुए। घोषित परिणाम के अनुसार 15 मार्च 2011 को अमित बोलिया विद्या निकेतन के प्रांगण में पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि ग्रीन वेली स्कूल भीलवाड़ा के डायरेक्टर भाटिया थे। अध्यक्षता अमित बोलिया स्कूल के प्रबंधक प्रकाश बोलिया ने की। विशिष्ट अतिथि अमित बोलिया के प्राचार्य वी.एम. जोसफ एवं आर.के शिक्षक थे।

अणुव्रत समिति गंगापुर के संरक्षक देवेन्द्र कुमार हिरण ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रतियोगिता में प्रथम प्रीति रांका, द्वितीय चेतन कुमार, तृतीय गीता रेगर-पोटला को पुरस्कार स्वरूप क्रमशः 250, 150 व 100 रुपए नगद प्रदान किये गये। साथ ही तीन सात्वना पुरस्कार क्रमशः राहुल लड्डा-भुणास, गायत्री नुवाल-रायपुर एवं सरोज राजपूत को 50 रुपये नकद प्रदान किया गये। इस अवसर पर अणुव्रत समिति गंगापुर के तत्वावधान में अतिथियों का साहित्य भेंट कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संयोजन संस्था के मंत्री ने किया।



‘अणुव्रत सेवी’ भंवरलाल मूंधड़ा की स्मृति सभा

छापर, 25 मार्च। भिक्षु साधना केन्द्र छापर में अणुव्रत समिति के तत्वावधान अणुव्रत सेवी साधक भंवरलाल मूंधड़ा की श्रद्धांजलि सभा रखी गयी। सेवा केन्द्र व्यवस्थापक मुनि सुमतिकुमार के सानिध्य में आयोजित स्मृति सभा में कब्रों की विभन्न धार्मिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मण्डल द्वारा मंगलाचरण से हुई। मुनि सुमतिकुमार ने साधक मूंधड़ा की सेवा भावना की सराहना करते हुए कहा कि व्यक्ति को यथा सम्भव परमार्थ के लिए जीवन जीना चाहिए। संयोजक्रीय वक्तव्य में अणुव्रत समिति के प्रवक्त प्रदीप सुराणा ने कहा कि मूंधड़ा को अणुव्रत सेवी संबोधन प्राप्त होना छापर अणुव्रत समिति के लिए गौरव का विषय था।

अणुव्रत महासमिति दिल्ली के महामंत्री विजयराज सुराणा ने कहा कि अणुव्रत कार्यो के प्रचार प्रसार तथा क्रियान्वित करने में मूंधड़ा का अभूतपूर्व योगदान रहा।

इस अवसर पर बिमल विद्या विहार लाडनू के प्रधानाचार्य सम्पतमल जैन, मौलाना इशतियाक खान, प्रधानाचार्य रे खाराम गोदारा, जयचन्दलाल सोनी, रामदेव मूंधड़ा, कवि धन्नाराम प्रजापत, कवि गौरी शंकर शर्मा, रामेश्वर बेनीवाल, कन्या मण्डल की प्रिया नाहटा, महिला मण्डल की कविता भंशाली, कमल प्रजापत, तेरापथ सभा के बिमल दुधोड़िया, युवक परिषद् के चमन दुधोड़िया, अमृत सांसद रणजीत दूगड़, हुलासचन्द मूंधड़ा, अणुव्रत समिति के धर्मप्रकाश बैद, विनोद नाहटा,

डिम्पल नाहटा, मुनि देवराज एवं मुनि देवार्यकुमार ने मूंधड़ा को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

इससे पूर्व सर्वोदय भवन में साधक भंवरलाल मूंधड़ा की स्मृति सभा में सुजानगढ़ के पूर्व विधायक रामेश्वर भाटी, रतनगढ़ विधायक राजकुमार रिणवा सहित अनेक धार्मिक व सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने साधक मूंधड़ा को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

इस दौरान दर्जनों संस्थाओं द्वारा भेजे गये सन्देशों का वाचन किया गया। इस क्रम में रैवासा पीठाधेश्वर स्वामी राघवाचार्य, आचार्य महाश्रमण, बीकानेर के संवित सोमगिरी एवं सुबोध गिरी, साध्वी प्रमुखा कनकभा, साध्वी संघप्रभा, माहेश्वरी सेवा सदन पुष्कर, माहेश्वरी समाज अजमेर, साध्वी उमा कुमारी, प्रदेश अणुव्रत समिति, सन्त हरिदास कृष्ण सत्संग भवन समिति, अणुव्रत महासमिति दिल्ली, जिला माहेश्वरी सभा एवं गांधी विद्या मन्दिर सरदारशहर द्वारा प्रेषित स्मृति सन्देशों का वाचन विनोद नाहटा ने किया।

राजस्थान सरकार के शिक्षा, श्रम एवं रोजगार मंत्री मास्टर भंवरलाल मेघवाल ने मूंधड़ा के निवास स्थान एवं सर्वोदय भवन जाकर उनके परिवार जनों को सान्त्वना देते हुए मूंधड़ा के चित्र पर पुष्प अर्पित किये। शिक्षा मंत्री के साथ पूसाराण गोदारा, युवा चेतना मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रदीप सुराणा, नगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डॉ. चम्पालाल सोनी, किसान प्रबोध के रामेश्वर बेनीवाल, बंशी डूडी एवं राधेश्याम अग्रवाल ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की।

कैंसर निदान एवं जागरूकता शिविर

टमकोर, 3 मार्च। समणी प्रतिभाप्रज्ञा के सान्निध्य में विस्तार निदेशालय, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय लाडनू, महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल टमकोर एवं भगवान महावीर कैंसर चिकित्सालय तथा अनुसंधान केन्द्र जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में ओसवाल पंचायत भवन टमकोर में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच कैंसर निदान एवं जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। विस्तार निदेशालय, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की निदेशिका समणी प्रतिभा प्रज्ञा ने जानकारी देते हुए बताया कि उक्त

शिविर में फिजीशियन, स्त्री रोग, नाक-कान एवं गला रोग तथा कैंसर रोग से संबंधित 250 मरीजों का निःशुल्क उपचार कर निःशुल्क जांच तथा दवाइयों उपलब्ध कराई गयी। सामान्य फिजीशियन एवं कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. सी.एस. शर्मा, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. मोहिनी पंजाबी इत्यादि चिकित्सकों की एकसपर्ट टीम द्वारा सेवाएं दी गयी। इस मौके पर डॉ. पवन कुमार, विद्या मिश्रा, तनसुख रांका, शंकर आर्य, कन्हैया मोहन, प्रिंसकुमार चौरसिया, तृप्ती, निवेदिता, राकेश दायमा, मो. न्यूम ने भी अपने सेवाएं दी।

अणुव्रत समिति कोलकाता की बैठक

कोलकाता, 11 मार्च। अणुव्रत समिति कोलकाता की बैठक महासभा भवन में संस्था अध्यक्ष श्यामसुंदर चौरडिया की अध्यक्षता में आयोजित हुई। अणुव्रत महासमिति दिल्ली द्वारा प्रेषित पत्र के वाचन के उपरांत निम्न विषयों पर विचार किया गया

● अणुव्रत समिति कोलकाता के आजीवन और वार्षिक सदस्यता पर चिंतन के बाद आजीवन सदस्यता शुल्क 700 रु. तथा वार्षिक सदस्यता शुल्क 100 रु. तय किया गया।

● पुराने विधान पर पुनः चर्चा करके निर्धारण करने का विचार किया गया।

● अणुव्रत समिति कोलकाता के कार्यालय हेतु महासभा भवन में स्थान हेतु पत्र लिखकर सुरेन्द्र कुमार सेठिया को जिम्मेदारी सौंपी गयी।

● कार्यकारिणी में दो नये सदस्य हुलास चन्द्र दूगड़ एवं जयदीप दूगड़ को जोड़ा गया।

6 मार्च 2011 को अणुव्रत समिति कोलकाता का शपथ ग्रहण समारोह साध्वी कनकश्री के सान्निध्य में दक्षिण हावड़ा सभागार में रखा गया। इस अवसर पर अणुव्रत विषय पर चर्चा की गयी। विभिन्न वक्ताओं ने अणुव्रत पर अपने विचार रखे। साध्वीश्री ने विशेष उद्बोधन दिया। महासभा के अध्यक्ष चैनरूप चिंडालिया ने शपथ ग्रहण करवाई। इस दौरान अणुव्रत प्रदर्शनी भी लगायी गयी। इसमें बहुत से व्यक्तियों ने अणुव्रत के पंचसूत्रीय संकल्प पत्र भरे तथा अणुव्रत पाक्षिक के सदस्य भी बने। कार्यक्रम का संचालन मंत्री सुरेन्द्र कुमार सेठिया ने किया।

अणुव्रत समिति के तत्वावधान में अहिंसा रैली



मुंबई। अणुव्रत समिति मुंबई के तत्वावधान में हुबनाथ पांडे की प्रेरणा से अहिंसा रैली का आयोजन किया गया। यह रैली इस्माइल युसुफ कॉलेज जोगेश्वरी से प्रारंभ होकर मुंबई विश्वविद्यालय फोर्ट में सभा के साथ संपन्न हुई। शांतिलाल रोशनलाल कोठारी ने हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया। तेयुप जोगेश्वरी के सदस्यों ने प्रातः अल्पाहार की व्यवस्था का दायित्व निर्वहन किया। रैली के दौरान 150 स्कूली बच्चों ने भाग लेकर लगभग 40 किमी. की दूरी तय की। रैली में उपस्थित सभी विद्यार्थियों ने मुंबई यूनिवर्सिटी पहुंच कर विद्यार्थी अणुव्रत के नियमों को अपनाने का संकल्प

किया। अर्जुनलाल बाफना ने सभी विद्यार्थियों को संकल्प करवाया। राष्ट्र गान के साथ रैली सम्पन्न हुई। दक्षिण मुंबई तेयुप सदस्यों ने अर्जुन बाफना, हुबनाथ पांडे व अणुव्रत फाउंडेशन के सदस्य राजेश, दीपक, मुकेश, कनकराज, प्रकाश, दिनेश, अशोक, मनीष, महेश, किरण, पीयूष, अनिल, महावीर एवं भगवतीलाल का शॉल द्वारा सम्मान किया। कार्यक्रम की सफलता में अणुव्रत फाउंडेशन के सभी सदस्यों का सराहनीय श्रम रहा। कार्यक्रम में उपस्थित अणुव्रत फाउंडेशन के सभी सदस्यों ने विश्वास दिलाया कि आगे भी अणुव्रत के प्रचार-प्रसार में फाउंडेशन का पूर्ण सहयोग रहेगा।

संत होते हैं ज्ञान रूपी आलोक

दिल्ली, 29 मार्च। साध्वी यशोमती ने “संतों का स्वागत क्यों” विषयक संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा संत विवेक संपन्न होते हैं। संत परहित हेतु समर्पित होते हैं इसलिए उनका स्वागत होता है। संत समागम से सत्संस्कार चेतना का ऊर्ध्वारोहण, अंधकार नाश व चेतना का आलोक प्राप्त होता है। हम संतों के इंगित अनुसार विकास के क्षेत्र में शक्ति का नियोजन करें।

साध्वी रचनाश्री ने कहा संतों के आगमन से समाज में जुड़ाव आता है। सुई की तरह, कंधों की तरह संत समस्या का समाधान करने का प्रयत्न करते हैं। अध्यात्म रूपी सदगुणों से सबको सुरभित करने हेतु

गतिशील रहते हैं। मोमबत्ती की तरह संत ज्ञान रूपी आलोक से संसार को आलोकित की चाह रखते हैं। हम चाहते हैं कि समाज नशामुक्त बने। इस दिशा में प्रयास होने चाहिएं। साध्वी जिनयशा ने गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का संचालन प्रदीप संचेती ने किया। दिल्ली सभाध्यक्ष के. जैन ने स्वागत भाषण किया। कार्यक्रम में राकेश जैन, चारू बाठिया, उम्मेदमल बैद, ओमप्रकाश जैन, संजय जैन, बाबूलाल दूगड़, अशोक संचेती, सुमन नाहटा, विजय चोपड़ा, मिलाप बोधरा, संजय खटेड़, धनराज बोधरा, रतनलाल जैन, सुशील कुमार उपस्थित थे।

गुजरात राज्य निबंध प्रतियोगिता

समाज में नैतिकता, संयम, पर्यावरण शुद्धि, व्यसन मुक्ति एवं अहिंसा के प्रति जन चेतना जाग्रत करने के उद्देश्य से गुजरात राज्य अणुव्रत समिति द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ की प्रथम वार्षिक पुण्य तिथि पर **गुजरात राज्य निबंध प्रतियोगिता** का आयोजन किया जा रहा है। प्रतियोगिता के विषय “अहिंसा यात्रा” पर 300 शब्द में निबंध लिखकर 9-5-2011 तक निम्न पते पर भिजवायें

मुकनचंद एंड सन्स

सहयोग मार्केट, साकर बाजार, अहमदाबाद-380002

संपर्क सूत्र :

जवेरीलाल संकलेचा (9376227360) ● अशोक दूगड़ (9727382182)

अमृत महोत्सव समारोह में भाग लेंगी राष्ट्रपति

नई दिल्ली। अणुव्रत प्रभारी मुनि राकेशकुमार, मुनि जयकुमार ने अपने सहयोगी संतों के साथ राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल से भेंट कर आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के संबंध में परिचर्चा की। इस अवसर पर अमृत महोत्सव स्मृति के अध्यक्ष ख्यालीलाल तातेड़, ईश्वर ललवाणी, मनोहर गोखरू, अशोक तलेसरा, मांगीलाल सेठिया, के.के. जैन, नरपत मालू, शीतल बरडिया, पन्नालाल बैद इत्यादि उपस्थित थे। मनोहर गोखरू ने आचार्य महाश्रमण

अमृत महोत्सव की भूमिका पर प्रकाश डाला।

मुनि राकेशकुमार ने कहा आचार्य महाश्रमण आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के यशस्वी उत्तराधिकारी हैं। उनके पचासवें जन्मदिवस के प्रवेश को अमृत महोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है। राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने मुनिश्री के दिल्ली प्रवास की जानकारी लेते हुए कहा कि मैं 12 मई को अमृत महोत्सव समारोह में अवश्य सहभागी बनूंगी।

अणुव्रत है समस्याओं का समाधान : जायसवाल

नई दिल्ली, 30 मार्च। आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आचार्य संहिता वास्तव में चारित्रिक जीवन जीने का मार्ग है। अणुव्रत को अपनाकर हम समस्याओं का अहिंसक समाधान पा सकते हैं। उक्त विचार केन्द्रीय कोयला मंत्री प्रकाश जायसवाल ने व्यक्त किए। जायसवाल ने कहा कि आचार्य महाश्रमण की अहिंसा यात्रा देश में नई क्रांति को जन्म देगी। उन्होंने राजसमंद में समायोजित होने वाले आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के कार्यक्रम में सम्मिलित होने की स्वीकृति भी प्रदान की।

अणुव्रत महासमिति के

गुरु माता अमृतानन्दी अणुव्रत विश्व भारती में

राजसमन्द, 12 मार्च। आध्यात्मिक गुरु माता अमृतानन्दी का 600 अनुयायियों के साथ अणुविभा परिसर में प्रवास हुआ। चार वर्ष पूर्व भी गुरु माता ने इस संस्था में प्रवास किया था। गुरु माता ने यहां संचालित बाल विकास एवं शिक्षा के उपक्रमों को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। उन्होंने कहा अणुव्रत आंदोलन व हमारा मिशन एक ही उद्देश्य के लिए समर्पित है। साध्वी कनकरेखा ने अम्मा को आचार्य महाश्रमण एवं अणुव्रत आंदोलन से अवगत कराया।

अम्मा के साथ आए भक्तों ने अणुव्रत बालोदय के विभिन्न कक्षों

प्रतिनिधि मुरली कांठेड़ ने जायसवाल को अहिंसा यात्रा एवं आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव की विस्तृत जानकारी दी। अणुव्रत महासमिति के संयुक्तमंत्रि बाबूलाल गोलछा ने अणुव्रत का नवीन अंक एवं आचार्य महाश्रमण द्वारा लिखित पुस्तक 'लाइफ लैट अस् लर्न टू लिव' जायसवाल को भेंट की एवं महासमिति द्वारा संचालित प्रकल्पों की जानकारी प्रदान की। प्रकाशचंद जैन भी उपस्थित थे। इस प्रसंग की समायोजना में कानपुर के अणुव्रती कार्यकर्ता टीकमचंद सेठिया का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

को देखकर इसे एक अनूठा प्रयोग बताया। इस अवसर पर अणुविभा के अध्यक्ष टी.के. जैन, महामंत्री संचय जैन, बालोदय कार्याध्यक्ष सुरेश कावडिया, बच्चों का देश पत्रिका के संपादक पंचशील जैन, बालोदय निदेशक बी.एम. सनादूय, विमल जैन, भंवरलाल वागरेचा, डॉ. हीरालाल श्रीमाली, अशोक इंगरवाल, जगजीवन चोरडिया, गणेश कच्छारा, मदन धोका उपस्थित थे। संचालन अशोक चंडालिया व मंजूलता ने किया। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक प्रदीप मोहन शर्मा ने भी अम्मा से आशीर्वाद लिया।

अणुव्रत संसदीय मंच संगोष्ठी

नई दिल्ली, 22 मार्च। अणुव्रत प्रभारी मुनि राकेशकुमार एवं मुनि जयकुमार के सान्निध्य में अणुव्रत महासमिति की प्रवृत्ति अणुव्रत संसदीय मंच द्वारा अणुव्रत भवन में लोकसभा सांसदों की "लोकतंत्र और नैतिकता" विषयक संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इसमें तेरह सांसद सदस्यों ने भाग लिया। प्रारंभ अणुव्रत महासमिति की शिक्षा मंत्री राज गुनेचा द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ।

मुनि राकेशकुमार ने कहा राजनीति में आज जो अशुद्धियों और विकृतियों का समावेश हुआ है, उसका मुख्य कारण चुनाव प्रणाली है। चुनाव प्रणाली में साधनों की शुद्धि पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए, पर आज इस सत्य को उपेक्षित और विस्मृत किया जा रहा है। सांसद समाज के सेवक होते हैं अतः उनकी जीवन शैली संयमप्रधान होनी चाहिए। मुनिश्री ने अणुव्रत दर्शन पर भी प्रकाश डाला।

मुनि जयकुमार ने कहा लोकतंत्र को मजबूत बनाने के लिए लोकतंत्र जिनके हाथों में है उनके विचार व्यापक, संतुलित और दृष्टि सही होनी चाहिए। लोकतंत्र की सफलता के लिए नेता एवं जनता में त्याग, संयम तथा कर्तव्यनिष्ठा का संस्कार जरूरी है।

मुनि सुधाकर ने कहा राजनीति लोकतंत्र की रीढ़ है। राष्ट्र की एकता और पवित्रता की रक्षा के लिए राजनेताओं को आध्यात्मिक प्रशिक्षण लेना जरूरी है।

सांसद नीरज शेखर ने कहा लोकतंत्र में नैतिकता की प्रतिष्ठा के लिए नैतिकता का विकास जरूरी ही नहीं अपितु अनिवार्य है। भ्रष्टाचार, अनैतिकता, कालाबाजारी लोकतंत्र तथा राष्ट्र के लिए घातक है।

सांसद डॉ. संजीव नायक ने कहा जैन धर्म त्याग का मूल मंत्र है। संसद सदस्यों को आचार्य

तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के विचारों और आदर्शों का अनुसरण करना चाहिए।

सांसद पी.डी. कठेरिया ने कहा नैतिक मूल्यों के विकास के लिए हमें संगठित होकर कार्य करने चाहिए। अणुव्रत का दर्शन मानव के लिए संजीवनी वृद्धि की तरह वरदायी है।

सांसद गोपाल सिंह शेखावत ने कहा मैंने आचार्य तुलसी को बहुत नजदीक से देखा है। उन्होंने मानव जाति के कल्याण के लिए अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। उन्होंने राजनीति के शुद्धिकरण के लिए जो विचार दिए उनका व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार जरूरी है।

सांसद बद्रीराम जाखड़ ने कहा ऋषि कर्म और राजकर्म में समन्वय जरूरी है। जब राजनीति पर धर्मनीति का अंकुश रहेगा तभी नैतिकता का विकास संभव है।

सांसद कमलेश पासवान ने कहा राजनीति में आज जो विकृतियां आ रही हैं, उसका मुख्य कारण बढ़ती लालसाएं व तृष्णाएं हैं। आज मानव उपभोक्तावादी बन चुका है। लोकतंत्र में नैतिकता के लिए लोकतांत्रिक आदर्शों का पालन जरूरी है।

सांसद डॉ. पदमाशीना पाटिल ने कहा राजनीति में सुधार का कार्य सांसदों द्वारा ही संभव है। इस अवसर पर सांसद एस.बी. पाखेड़, भावना बहन व अन्य सांसदों ने भी अपने विचार रखते हुए अणुव्रत के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहयोग देने की बात कही। मांगीलाल सेठिया ने समाज की ओर से अपने विचार रखे। सांसदों व अतिथियों का स्वागत अणुव्रत महासमिति के संयुक्त मंत्री बाबूलाल गोलछा ने एवं आभार व्यक्त महामंत्री विजयराज सुराणा ने किया। कार्यक्रम की सफलता में अरविंद गोठी, इंदर बैंगानी, शीतल बरडिया, बाबूलाल इंगर का सराहनीय श्रम रहा। संयोजन सुखराज सेठिया ने किया।